
पिकनिक
लेखक
डॉ. प्रेम प्रकाश
अनुवादक
भगवान अटलानी



मूल लेखक

डॉ. प्रेम प्रकाश

जन्म : 2 अगस्त, 1946 हीराबाद, हैदराबाद (सिन्ध)

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी.

सिन्धी में चार नाटक, तीन एकांकी संग्रह, सात समालोचना ग्रन्थ, दो कहानी संग्रह, एक कविता संग्रह, एक शोध प्रबन्ध, नौ कहानियों का एक नाट्य रूपान्तर, चौदह सम्पादित/चयनित और एक हिन्दी में सम्पादित कुल 34 पुस्तकें प्रकाशित। तेरह पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित। सिन्धी ड्रामा वर्कशॉप, अहमदाबाद के संस्थापक (1976)। इस संस्था व अन्य संस्थानों की ओर से सिन्धी में छोटे-बड़े लगभग पचास और हिन्दी में पाँच नाटकों का निर्देशन। तीन साहित्यिक सिन्धी पत्रिकाओं के 114 अंकों का सह सम्पादन। कुल ग्यारह एपिसोड की तीन रेडियो शृंखलाओं और अन्य लेखकों के पाँच आलेखों का मंच के लिये लेखन। स्वरचित कविताओं की एक ऑडियो सीडी।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली (1978); अखिल भारत सिन्धी बोली सहित सभा, जयपुर (2000-जीवनपर्यन्त योगदान); गुजरात सिन्धी साहित्य अकादमी, अहमदाबाद (1999 - गौरव पुरस्कार); केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (2001-कविता संग्रह 'भगत') की ओर से पुरस्कृत व सम्मानित।

सम्पर्क : डी/64/1018, पो. कृष्णानगर, सहिजपुर बोघा, अहमदाबाद-382346.

मो. - 09426353918

पिकनिक

(सिन्धी नाटक का हिन्दी अनुवाद)

मूल लेखक

डॉ. प्रेम प्रकाश

अनुवाद

भगवान अटलानी

विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

प्रकाशक :

विवेक पब्लिशिंग हाउस

धामाणी मार्केट, जयपुर 302 003

राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

प्रथम संस्करण दिसम्बर 2011

मूल्य : ₹ 150.00

लेजर टाइपसैटिंग :

कुलदीप ग्राफिक्स, जयपुर

मुद्रक :

...न प्रिन्टर्स, जयपुर

प्रिय टीटू और कोमल
को
जिनकी आत्मीयता से
उऋण होना
न सम्भव है
और
न होना चाहता हूँ

अनुवादक की ओर से

एक स्वाभाविक प्रश्न है, "अनुवाद के लिये मैंने नाटक 'पिकनिक' को क्यों चुना?" इस नाटक को जब पहली बार पढ़ा तो कई दिनों तक बेचैन रहा। लगभग ढाई घंटे की अवधि का नाटक। मंच पर मात्र दो पात्र। मनोजगत् के आन्तरिक द्वन्द्व। प्रतीकात्मक स्तर पर डॉक्टर-नर्स, ट्यूशन पढ़ाने वाला छात्राध्यापक-उससे ट्यूशन पढ़ने वाली कॉलेज की छात्रा, होटल का रिसेप्शन-कमरा-बैरा, अस्पताल में भर्ती सुन्दर युवा मरीज़-महिला डॉक्टर की उपस्थिति। पर्तें क्रमश: खुलती जाती हैं। धुंध छंटती जाती है। सामने उभरता है, साफ़ शफाफ़ दृश्य। ऐसा दृश्य कि जिसके आर-पार देखकर निर्णय पर पहुँचने के लिए पाठक-दर्शक पूरी तरह स्वतंत्र हैं। नतीजा न निर्देशित है और न आरोपित।

ज़ेक देरेदा ने 1960 में जब उत्तर आधुनिकता का विचार प्रस्तुत किया तो कल्पना भी नहीं की होगी कि उस सिद्धान्त को पोषित करने वाला एक नाटक उनके देश फ्रांस की सुदूरवर्ती भाषा सिन्धी में मात्र चौदह वर्षों में सामने आ जायेगा। कम से कम मंचीय ताम-झाम, कम से कम पात्र, कम से कम उपादान चरित्रों की अन्तरंग तहों को जिस प्रभावशाली ढंग से उधेड़ते हैं, उसके कारण 'पिकनिक' को केवल प्रयोगशील नाटक की संज्ञा देकर इतिश्री नहीं की जा सकती। दरारें देख लेने के बावजूद नाटक उनकी मरम्मत करने की छूट नहीं देता। तय पाठक, दर्शक को करना है कि नाटक में अन्तर्निहित संकेतों को वह कैसे ग्रहण करे? पात्रों की मन:स्थिति में आते उतार-चढ़ाव उसे उद्वेलित व तनावग्रस्त करते चले जाते हैं फिर भी वह उनमें अवशोषित नहीं होता। उसकी हैसियत हमेशा तीसरे आदमी की बनी रहती है।

डॉ. प्रेम प्रकाश सिन्धी के बहुमुखी प्रतिभाशाली लेखक हैं। नाटक के साथ उन्होंने कहानी, कविता, निबन्ध हर विधा में स्तरीय लेखन किया है। वे समर्थ नाट्य निर्देशक हैं। उनके निर्देशन में मंचित अपने या अन्य लेखकों के नाटक तात्कालिक और दीर्घकालिक चर्चा के विषय रहे हैं। इन नाटकों में ऐसा कुछ अलग होता है जो सिन्धी दर्शक को, उसकी दृष्टि और समझ को, उसके रंगमंचीय अनुभव को समृद्ध करता है। प्रेम प्रकाश की कल्पनाशीलता विस्मित करती है। वे बहुत अच्छे चित्रकार हैं। अपनी लगभग सभी

तथा कुछ अन्य लेखकों की पुस्तकों के आवरण उन्होंने स्वयं परिकल्पित किये हैं। जब रंगीन चित्र नहीं छपते थे तब भी प्रेम प्रकाश की पुस्तकों पर छपे उनके स्वनिर्मित काले-सफेद आकार प्रभावशाली होते थे।

प्रेम प्रकाश की पत्नी और सन्तति स्नायुतंत्र की असाध्य बीमारी से ग्रस्त हैं। चूल्हा-चौका, गृहस्थी का दायित्व, चिकित्सकों से निरन्तर सम्पर्क, समय पर दवा व सुश्रूषा के साथ जीवन बीमा निगम की नौकरी। ये सभी काम प्रेम प्रकाश के हिस्से में हमेशा रहे। इसके बावजूद वे सिन्धी नाटक की सौ वर्षों की विकास यात्रा पर पीएच.डी. करते हैं। भारत के विभिन्न स्थानों पर नाटक मंचित करते हैं। महत्वपूर्ण संगोष्ठियों में शिरक़त के साथ पत्रवाचन करते हैं। विपुल साहित्य रचते हैं। सिन्धी में प्रकाशकों की अनुपस्थिति के कारण स्वयं उसे प्रकाशित कराते हैं। परिणामस्वरूप लेखन को सम्मान देते हुए प्रेम प्रकाश को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़ती है। यदि वे अन्य लोगों की तरह मुक्त भाव से काम करने की स्थिति में होते, स्थायी संकट उनका रास्ता नहीं रोकते, तो ? इस प्रश्न का उत्तर देना संभव नहीं है।

'पिकनिक' के माध्यम से बौद्धिक, वैचारिक और प्रायोगिक संदर्भों में सिन्धी नाट्य लेखन को प्रतीकात्मक रूप से हिन्दी के पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयत्न मैंने किया है। राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर ने आर्थिक सहायता देकर और विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर के कर्ताधर्ता श्री नरेन्द्र बाहरी ने प्रकाशन दायित्व उठाकर मेरी चेष्टा को सफल बनाया है। उनका सहयोग न मिलता तो संभवत: हिन्दी के पाठक इस अनूठी नाट्यकृति का आस्वादन नहीं कर पाते।

भगवान अटलानी
पूर्व अध्यक्ष
राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर

डॉ. प्रेम प्रकाश का नाटक 'पिकनिक' सिन्धी में 1974 में प्रकाशित हुआ था। भूमिका लिखी थी, सिन्धी व गुजराती के प्रसिद्ध लेखक, आलोचक और स्तम्भकार हरीश वासवानी ने। 'पिकनिक' को गहराई से विश्लेषित व व्याख्यायित करती भूमिका का हिन्दी अनुवाद।

नाटक का प्रयोग : प्रयोग का नाटक

एक व्यक्ति लकड़ियाँ काटने जंगल में जाता है। संध्या के समय दृश्य डरावना है। लकड़ियाँ लकड़हारे के कटे अंगों की गठड़ी अपने सिर पर रखकर लौट रही हैं और वातावरण में ठहाके गूँज रहे हैं। लगभग ऐसे ही डर की अनुभूति प्रेम के नाटक 'पिकनिक' को पढ़ने के बाद होती है। (अगर इसे नाटक ही मानना है तो !) इसी तरह के डर के दर्शन हर बार तब-तब हुए हैं जब-जब कला के क्षेत्र में कोई प्रयोग हुआ है। हर प्रयोग की एक कीमत है। कीमत के रूप में इस नाटक में सम्पूर्ण औपचारिक रंगमंच और नाटक के तमाम प्रचलित सिद्धान्तों की बलि चढ़ाई गई है। कोई कथ्य नहीं है। बुनावट स्वैच्छिक है। एक सामान्य मंच दृश्य को (जो सम्पूर्ण नाटक में एक जैसा है) दो पात्रों की हास्यास्पद हरक़तों और संवादों के क्रमविहीन छोटे-छोटे बंधों को हल्की-तेज़ रोशनी में जकड़ दिया गया है। यह नाटक मंच के लिये नहीं है फिर भी इस नाटक को मंचित किया जा सकता है। संभव है, कुछ संवाद सुनने के बाद सामान्य दर्शक प्रेक्षागृह छोड़कर चला जाये। मगर बाहर निकलकर वह जैसे-जैसे और जहाँ-जहाँ भटकेगा, उसका व्यवहार कमोबेश नाटक के पात्रों की मानिन्द होगा। जो दर्शक प्रेक्षागृह में टिके रहेंगे उन्हें लगेगा कि वे अपने कुछ कटे अंगों को या अपने अंगों के कटे हुए हिस्सों के साथ स्वयं को मंच पर जी रहे हैं। थियेटर बहाना है। वास्तविक प्रयास अपना पीछा किये जाने से बचने/भागने का होता है। वरना 'पिकनिक' होती किसलिये है !

यह मात्र दोहराव होगा यदि मैं कहूँ कि बीसवीं सदी तमाम मानवीय स्थितियों का विलोम है। जहाँ घर होना चाहिये वहाँ रेगिस्तान है। जहाँ रेगिस्तान होना चाहिये वहाँ पहाड़ है। जहाँ पहाड़ होना चाहिये वहाँ खंदक है और खंदक में

मनुष्य है। यह बात अलग है कि घर, मनुष्य, रेगिस्तान, पहाड़, खंदक सभी लगभग बराबर हैं। प्रेम की यह रचना मानवीय रिश्तों के विलोम पर लिखे नाटक का विलोम है। सीधी सरल इकाई है। पति-पत्नी तफ़रीह के लिये पिकनिक पर जाते हैं। पिकनिक जैसा कुछ करते हैं। लेकिन जो कुछ होता है, ये कोष्ठक में हैं उनके बीच– 'मुँह बिगाड़कर' 'ख़ामोशी', 'चेहरा देखता रहता है', 'ध्यान न देते हुए', 'व्यंग्यपूर्वक', 'कमज़ोर', 'गरमी', 'आश्चर्य', 'परेशान', 'जोश', 'काँपते हुए', 'लम्बा मौन', 'चिढ़कर', 'सूखा गला', 'क्रोधपूर्वक', 'लरज़ते हुए', 'थक-हारकर' 'लगभग चिल्लाते हुए', '.........', '..........', '............'। ये कोष्ठक नहीं हैं, कुल्हाड़ी की चोटें हैं जो लकड़ियों के स्थान पर लकड़हारे को लगती हैं। उन चोटों की चर्चा ही मैंने ऊपर की है।

स्पष्ट है, स्थितियों और संबंधों का औचित्य यथास्थान नहीं रहा है। यह ध्वनिहीन क्रान्ति है। संभव है, सतही स्तर पर सामाजिक यथार्थवाद का कोई तर्क इसके पीछे हो लेकिन नाटककार ने इसके भी पीछे छिपी भयानक तर्कहीनता को पकड़ने की कोशिश की है। न 'आ' का कोई आत्म है, न 'प' का कोई आत्म है। (आत्म जैसी कोई वस्तु होती भी है?) इसके स्थान पर अतार्किक ढंग से छितराई जीने की इच्छा है, तहों में लिपटी हुई। इन तहों की बाहरी पैमानों से सीधी प्रतिकूलता है। सामान्य जीवन में इन्हें बेपर्दा करना संभव नहीं है। इसके लिये वे पिकनिक स्थल पर जाते हैं। दो दूसरे पात्र भी उनके साथ हैं जो मंच पर अदृश्य हैं लेकिन उनका संदर्भ आता रहता है और मूल रूप से प्रतिवाद निर्मित करते हैं। वे ऐसे दर्पण की तरह हैं जिनमें उल्टी प्रतिछवियाँ उभरती हैं। उन्हें देखकर लगता रहता है कि यह ऐसा कुछ है जो मनुष्य होते हुए भी मनुष्य नहीं हो सकता। जो अदृश्य है वह वास्तविक प्रवाह है। जो दिखाई देता है वह जकड़ा और रुका हुआ है।

पहले दृश्य में पात्र वर्तमान काल में हैं। स्वभावगत खींचतान के बारीक विवरणों से दो-चार होने के बाद दूसरे दृश्य में वे वर्तमान में जीने की शक्ति खो देते हैं। टूटकर दोनों अतीत को फिर जीना शुरू करते हैं। जहाँ रुक जाते हैं वहां दोहराव के अलावा दोनों के पास कोई सम्पत्ति नहीं है। मात्र एक लम्बा रास्ता है जिसे तय करना है। पहले दृश्य में वे अपने सामाजिक स्वरूपों का टकराव तलाशते हैं। दूसरे दृश्य में उनके निजी स्वरूपों का टकराव सामने आता है। विवाहित जीवन के तार (टेलीफोन के तार की तरह) जिन-जिन खम्भों पर स्थापित हैं, उनमें से प्रत्येक को खटखटाकर देखने के

बाद महसूस करते हैं कि वे सब केवल तार को सहारा देने के लिये हैं। तारों में प्रवाहित संवाद से उनका कोई संबंध नहीं है। पहले दृश्य में पात्रों की विभिन्न मन:स्थितियाँ चरणबद्ध रूप से उनके अपने कटावों को स्पष्ट करती हैं। छोटे-छोटे हिस्सों में बँटकर सामने आते हुए ये अवस्थायें एक निश्चित विषय और लगाव के बिना अंतिम कड़ी के शब्दों की तरह परस्पर उलझती चली जाती हैं। सूत्र कुछ भी हो सकते हैं, उदाहरण के लिये 'बकरा', 'समाज', 'खेल', 'बच्चे', 'इन्द्रियाँ' आदि।

बातचीत के कुछ अंश ऐसे हैं जो बिल्कुल निरुद्देश्य हैं या अन्तराल को भरने वाले रिक्तिपूरक की तरह हैं। पात्रों को यह अहसास है फिर भी वे इससे बच नहीं पा रहे हैं। वार्तालाप कुछ अवसरों पर अत्यन्त अर्थपूर्ण और युक्तियुक्त है तथा कुछ स्थानों पर व्यर्थ व मूर्खतापूर्ण है। तथापि दोनों का परिणाम और संतुलन एक जैसा है। दोनों पात्रों के परस्पर तनाव और छद्म पलायन को उधेड़ते हैं। वस्तुत: शब्द रोलकाल में बोले गये अंकों जैसा काम करते हैं। इनमें एक उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक सौ ग्यारह। उद्देश्य मानसिक उपस्थिति या अनुपस्थिति की जानकारी लेना है। **संवादों का वह हिस्सा बेहद खूबसूरत है जहाँ शब्दों की लम्बाई और चौड़ाई बिल्कुल प्रभावहीन सिद्ध होती है। केन्द्र में लम्बाई और चौड़ाई नहीं, मन:स्थितियों की गहराई है जिसके लिये शब्द निश्चय ही गलत सिद्ध होते हैं।** ये शब्द कहीं कम और कहीं अधिक हैं लेकिन पूरे कहीं भी नहीं हैं।

'आ' और 'प' के बीच गोंद के दाने नहीं, बारूद के ज़र्रे बिखरे हुए हैं। ये मिलकर एक ही समय विस्फोट करें तो ऊपर से दिखाई देती एकजुटता के परखच्चे उड़ जायें। 'प्यार', 'रोमांस', 'सेक्स', 'ममता', 'दिलचस्पी', 'निकटता', 'भावनायें', हमदर्दी', 'टेस्ट', 'छवि', 'अहंकार', 'प्रोफ़ेशन', 'कैरियर' किसी भी शब्द पर 'आ' या 'प' से अंगुली रखवायेंगे तो लगेगा, ये दोनों अपने स्तर पर अपने लिये एक अलग ज़िन्दगी जी रहे हैं। उनमें से हर एक की कोशिश यह रहती है कि दूसरे का सुविधापूर्वक इस्तेमाल करे। स्त्री-पुरुष दोनों इस सच से भलीभाँति परिचित हैं। इसके बावजूद एक-दूसरे का पूरक होने का ढोंग रचकर निर्वाह का नाटक करते रहते हैं। यहाँ तक कि आवेग की गरमाहट समाप्त हो जाने के बाद वे अपनी बाहर की अनुभूति भी खो बैठते हैं। मौसम को भी उन्हें बोल-बतियाकर महसूस करना पड़ता है। 'आ' और 'प' क्रम से अन्य पात्रों (डॉक्टर और प्रेमिका) का मुखौटा पहनाकर एक-दूसरे को निरस्त करते हैं। तात्विक शक्तियों के मुक्त योग में 'प्रेक्टीकल', 'अनप्रेक्टीकल,' 'एडजस्टेमेंट',

'पज़ेशन' के अलावा 'पाने-न-पाने', 'पवित्रता-अपवित्रता' की जो स्थितियाँ घुस आई हैं, उन्होंने हँसने-रोने, छूने-चूमने जैसी आरम्भिक क्रियाओं की पवित्रता को भी छीन लिया है।

साथ गुज़ारे पलों में लगातार एक-दूसरे से बतियाने और कुछ हरक़तें करने के बावजूद पात्र नितान्त अकेले हैं। नाटक इसी असंगति पर बुना गया है। वैसे चाहें तो वार्तालाप में आये कुछ आकर्षक सूक्ति वाक्यांशों की पृष्ठभूमि में त।र्किक निष्कर्ष भी निकाले जा सकते हैं। पात्रों के 'अहंकार', 'छवि', 'भावुकताओं', 'कायरता' के छोटे-छोटे गड्ढ़ों को पकड़कर उनके चेतन-अचेतन का विश्लेषण भी किया जा सकता है। मगर इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक वर्णन को समग्ररूप से इस नाटक में तलाश करना व्यर्थ होगा।

लेखक पात्रों का विकास दिखाने की मन:स्थिति से बचा है। चरित्र-चित्रण जैसा कुछ नहीं होता है, 'आ' और 'प' इसके प्रमाण हैं। दोनों चरित्र बार-बार अपने व्यक्तित्व कोट की तरह उतारकर, एक-दूसरे के सामने झटकने के बाद पहनकर एक-दूसरे को देखते हैं और फिर उतारकर, झटककर पहनते हैं। तब भी उन्हें आभास नहीं होता है कि वे एक-दूसरे को या ख़ुद को पहचानते हैं।

इस उठापटक के लिये प्रेम ने एक छोटा रास्ता अपनाया है। प्रत्येक औपचारिक फैलाव का उसने बहिष्कार किया है। घटनाओं के महत्व को नाटक सीधा-सीधा निरस्त करता है। जीवन में घटनाओं का चयन संभव नहीं है। उनके इस या उस रूप में विशेष अन्तर नहीं पड़ता है। घटनायें कैसी भी हों व्यक्ति लगभग समान प्रतिक्रियाओं का शिकार बनता है। 'आ' और 'प' का विवाहित होना दुर्घटनावश है। वे साथ आते हैं और साथ जाते हैं, इससे बड़ी कोई घटना नाटक में नहीं है। न इसकी आवश्यकता है। घटनाओं के लिये समय ही कहाँ है? नाटक की अवधि समय की एक बूँद है। मैं अगर ग़लत नहीं हूँ तो नाटक में समय का विस्तार उतना ही है जितना इसके मंचन में या उससे थोड़ा-बहुत कम-ज़्यादा होता। (मगर इससे नवशास्त्रीय काल के एकता के सिद्धान्त का वहम पैदा नहीं होना चाहिये।)

मंचीकरण की सभी व्यावहारिक कठिनाइयों से यहाँ मुक्ति मिली हुई है। वेशभूषा, मंचसज्जा, उपकरणों से जुड़े सिर दर्द-कुछ भी नहीं। नाटक में कुछ भी ग़ैर ज़रूरी नहीं है। यहाँ तक कि फोल्डिंग कुर्सियाँ मात्र बैठने के लिये नहीं हैं।

उनका प्रतीकात्मक अर्थ है। (फोल्डिंग कुर्सियों के माध्यम से 'आ' और 'प' का खेल और ज़िद ध्यान देने योग्य है।) प्रकाश की भी अपनी भूमिका है। इसके प्रभाव पात्रों की हरक़तों, मन:स्थितियों और समय के साथ बुरी तरह गुँथे हुए हैं। **इतना होते हुए भी नाटक का मंचीकरण इतना सरल नहीं है जितना लगता है। नाटक में अभिनय सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। मगर इसे भी औपचारिक रूप नहीं दिया जा सकता है।** बने बनाये पात्र तो हैं नहीं कि उनका निरीक्षण करके वैसा लगने की कोशिश की जाये और न शारीरिक क्रियाओं का अंबार है। **नाटक में एक-एक वाक्य, कहीं-कहीं, एक-एक शब्द को अलग ढंग से जीने की ज़रूरत पड़ सकती है। नाटक जहां कामेडी लगता है वहाँ उसकी तासीर गंभीर है और जहाँ गंभीर दिखाई देता है उसमें हास्य छिपा हुआ है। वस्तुत: इनमें जो निर्मम व्यंग्य और तीखापन क़ैद है उसकी प्रस्तुति प्रभावशाली अभिनय के बिना होना कठिन है।** ''मूड बना रही हूँ। अब को पकड़ रही हूँ। मक्खी की तरह या तो भाग जाती है या झपटकर पकड़ने के बाद हाथ खोलती हूँ तो मरी हुई मिलती है।'' जैसे कल्पना चित्र सिन्धी गद्य में अधिक नहीं हैं। इनका मूर्तिकरण भी इतना आसान नहीं है।

यह सब सिन्धी में नया है। मुझ मालूम है कि नया एक तुलनात्मक शब्द है। इसलिये **इस निर्णय का महत्व** तो **बिल्कुल नहीं है कि नाटक को बेतुका या एब्सर्ड कहा जाये अथवा अर्थपूर्ण या एक्सप्रेशनिस्ट। किन्तु यदि इतिहास की ऐतिहासिकता का मोह त्याग दिया जाये** (यों भी सिलसिलों को पकड़ना अनावश्यक है) **तो सिन्धी में यह पहला नाटक है जो इस तथ्य को उजागर करता है कि प्रेम प्रकाश में ही सिन्धी को नाटककार मिला है।**

हरीश वासवानी

सिन्धी व गुजराती के प्रसिद्ध लेखक,
आलोचक और स्तम्भकार

पिकनिक

पात्र

डॉ. पुष्पा : श्रीमती आनन्द, आयु पच्चीस वर्ष

आनन्द : डॉ. पुष्पा का पति, आयु छब्बीस वर्ष

(अपराह्ण चार-सवा चार बजे का समय। किसी नदी या तालाब का किनारा, किन्तु पानी दिखाई नहीं देता है। आधी अधूरी हरियाली, पेड़ की छाया में चादर बिछाकर डॉ. पुष्पा और आनन्द बैठे हैं। एक ओर पिकनिक पर लाई जाने वाली सामग्री बिखरी हुई है। दो छोटी फोल्डिंग कुर्सियाँ दूसरी ओर खुली हुई हैं। पिकनिक स्पॉट की दृष्टि से आवश्यक वातावरण ही मंच की सामग्री है। आनन्द की पीठ दर्शकों की ओर है। पुष्पा पिकनिक के लिये सामग्री को व्यवस्थित कर रही है। आनन्द सिगरेट के कश लेते हुए तनाव रहित मुद्रा में है।)

पुष्पा : **(मुँह बिगाड़ कर)** तुमने पता नहीं क्या-क्या खिला दिया।

आनन्द : **(उठकर टहलते हुए)** तुमने कुछ खाया?

पुष्पा : तुमने पता नहीं क्या-क्या खिला दिया।

आनन्द : तुमने खाया।

पुष्पा : **(ज़ोर देकर)** तीसरी बार दोहरा रही हूँ **(मुँह बिगाड़कर)**, तुमने पता नहीं क्या-क्या खिला दिया।

आनन्द : **(सतर्क होकर शीघ्रता से)** तुमने पता नहीं क्या-क्या खा लिया।

पुष्पा : जी मिचला रहा है।

आनन्द : एक डॉक्टर का जी मिचला रहा है।

पुष्पा : उल्टी ..... ज़रूर आयेगी।

आनन्द : क्या आयेगी?

पुष्पा : उल्टी।

आनन्द : सीधी क्यों नहीं? अचार खाने से ठीक हो जाता है, लेकिन यहाँ ......! आगे से पिकनिक पर अचार भी लाना चाहिये। तुम कैसी डॉक्टर हो? मुझे कभी-कभी ....।

पुष्पा : **(काटकर)** ताज्जुब होता है, यही न ? लेकिन डॉक्टर अस्पताल में हूँ। तुम निश्चय ही मज़ाक़ कर रहे हो, लेकिन मेरे पेट में .... पता नहीं क्या ....। मरीज़ों के मामले में मेरा दिल बहुत मज़बूत है।

आनन्द : तो तुम अपनी मरीज़ पुष्पा के लिए डॉक्टर पुष्पा का दिल मज़बूत बनाओ।

पुष्पा : दोनों का दिल एक ही है।

आनन्द : ऐसा कैसे हो सकता है?

पुष्पा : जब मुझे कुछ होता है और वह भी मेरे पेट में, तो मैं कमज़ोर पड़ जाती हूँ।

आनन्द : तुम डॉक्टर कैसे हो पुष्पा?

पुष्पा : डॉक्टर! डॉक्टर पुष्पा! कौन है वह? तुम उसे पहचानते हो तो मेरे लिये बुला लो। मेरे पेट में .....।

आनन्द : **(काटकर)** मैं डॉक्टर पुष्पा को विशेष नहीं जानता। हाँ, पुष्पा को काफ़ी निकटता से .....।

पुष्पा : **(काटकर)** तुम पुष्पा को निकटता से जानते हो? आनन्द, तुम मुझे निकटता से .....।

आनन्द : **(फिर काटकर)** तुम्हें नहीं, मैं पुष्पा को निकटता से जानता हूँ।

पुष्पा : तुम्हारा मतलब है डॉक्टर पुष्पा, पुष्पा और ''मैं'' तीन महिलायें हैं और इनमें से तुम ''मैं'' को नहीं जानते। निकटता क्या होती है? आनन्द, क्या होती है निकटता? मेरा जी ज़्यादा मिचला रहा है ..... उल्टी .....।

आनन्द : नहीं, उल्टी मत करना, प्लीज़। लो, मैं निकटता से नहीं जानता ..... अब भी आ रही है तुम्हें उल्टी?

पुष्पा : रुक गई। रुक गई। लेकिन जी अभी मिचला रहा है। ..... मैं कमज़ोर हूँ ..... तुमने मेरा धर्म भ्रष्ट कर डाला, पता नहीं क्या-क्या खिलाकर.......।

आनन्द : मैं समझा नहीं। पता नहीं कौन सी भाषा में बोल रही हो। प्लीज़, फिर कहोगी ?

पुष्पा : तुमने ..... है न ..... धर्म ..... भ्रष्ट कर डाला।

आनन्द : क्या कर डाला?

पुष्पा : धर्म भ्रष्ट।

आनन्द : जल्दी नहीं, जल्दी नहीं।

पुष्पा : इसमें जल्दी की क्या बात है?

आनन्द : समझने में जल्दी। धर्म का न तुमने पालन किया और न तुमने उसे भ्रष्ट किया।

पुष्पा : मैंने नहीं। तुमने किया।

आनन्द : मैंने किया, तुमने कराया, धर्म .....।

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : तुम्हें मालूम है, भ्रष्ट होता क्या है?

पुष्पा : तुम प्रश्न पूछ रहे हो? तुम्हें पता है, मुझे प्रश्न अच्छे नहीं लगते।

आनन्द : तुम्हें प्रश्नों से नफ़रत है ..... लेकिन तुमने मुझ पर आरोप लगाया है कि मैंने तुम्हारा धर्म भ्रष्ट कर दिया। इसलिये मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ या कहूँ जानना चाहता हूँ कि तुम्हें पता है, भ्रष्ट होता क्या है?

पुष्पा : तुम्हारी लम्बी-लम्बी बातें प्रश्नों से कम कहाँ हैं?

आनन्द : यह क्या कह रही हो तुम?

पुष्पा : ठीक कह रही हूँ। **(मौन)** अच्छा, तुम जानना चाहते थे कि भ्रष्ट होता क्या है ? धर्म, धर्म भ्रष्ट होता है।

आनन्द : ठीक। भ्रष्ट धर्म होता है। अब, भ्रष्ट करता कौन है?

पुष्पा : वही धर्म।

आनन्द : बिल्कुल ठीक। मतलब, पहले हो या बाद में, है धर्म ही। डॉक्टर पुष्पा या पुष्पा, तुम इनमें से कहीं भी नहीं हो। तुम बची हुई हो।

पुष्पा : मतलब?

आनन्द : मैं बातों को अधिक स्पष्ट नहीं कर पाता हूँ, तुम्हें मालूम है। फिर भी ..... पुष्पा, जब धर्म का पालन ही नहीं किया जायेगा तो भ्रष्ट क्या होगा? इसी बात को यों भी कहा जा सकता है, धर्म का पालन किया जायेगा तो भ्रष्ट भी वही होगा।

पुष्पा : मतलब मुझे कुछ भी नहीं हुआ? मेरा मतलब "मैं" से है।

आनन्द : इस सिलसिले में तुम इतनी गम्भीर क्यों हो, पुष्पा?

पुष्पा : मैं धर्म के लिये नहीं, समझने के लिए गम्भीर हूँ।

आनन्द : तुम सचमुच समझने की कोशिश कर रही हो ?

पुष्पा : देखो, मुझे अब तक कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। कहीं कुछ गड़बड़ है जो तुम कर रहे हो, जान बूझकर .....।

आनन्द : समझने की बात ही क्या है? लेकिन तुम डॉक्टर ..... पुष्पा, मुझे पता नहीं क्यों ऐसा लगता है कि कम से कम डॉकटर धर्म के मामले में स्पष्ट होते हैं।

पुष्पा : तुम्हें आनन्द, पहले भी बता चुकी हूँ, प्लीज़।

आनन्द : मैं समझता हूँ, मुझे याद नहीं है। प्लीज़!

पुष्पा : यह ठीक है। गुड! मैंने तुम्हें बताया था कि मेरी अधिक लोगों से दोस्ती न कभी थी और न अब है। पढ़ाई में तेज़ नहीं थी इसलिये किताबों की ज़्यादा और मौज-मस्ती की गुलामी कम रही। **(आनन्द पुष्पा के चेहरे को देखता रहता है)** देखा, तुम्हारी संगत में मैं भी लम्बी-लम्बी बातें करने लगी हूँ।

आनन्द : जो बुरी आदत है। हम दोनों बोलने के मामले में बुरे हैं।

पुष्पा : बुरे! तुमने चतुराई से मुझसे पता नहीं क्या-क्या कहलवा लिया ..... करा भी रहे हो ..... मैं फिर कहती हूँ कि मुझे नहीं मालूम, मैंने किन प्रश्नों के क्या उत्तर दिये हैं?

आनन्द : भ्रष्ट के बारे में।

पुष्पा : और मैं धर्म के बारे में समझ रही थी।

आनन्द : एक ही बात है। अब तुम्हारी तबियत कैसी है?

पुष्पा : मिस्टर आनन्द, मैकेनिकल इन्जीनियर, जब डॉक्टर पुष्पा के धर्म पर बोलते हैं, पुष्पा को, डॉक्टर पुष्पा, धर्म और धर्म के भ्रष्ट होने के बीच अन्तर समझाते हैं तब पुष्पा शब्द, समझती चली जाती है। लेकिन अन्त में उसे शंका होती है कि वह पता नहीं किन प्रश्नों के क्या-क्या उत्तर दे गई है। लगता है .....।

आनन्द : **(काटकर)** पुष्पा, प्लीज़ नहीं। दोहराओ नहीं।

पुष्पा : **(उसी रौ में)** लगता है कहीं उसे ठग लिया है, आनन्द की चतुराई से भरी बातों ने।

आनन्द : ऐसा नहीं है पुष्पा, ऐसा नहीं है।

पुष्पा : **(उसी तरह)** और ऐसा करते हुए वह न केवल सामने वाले को ठगता है, अपितु उस पर हावी भी हो जाता है और वह सामने वाला समझता है कि आनन्द .....।

आनन्द : **(काटकर)** तुम मेरे बारे में बोल रही हो। मेरी कहानी बनाकर मज़ाक़ .....।

पुष्पा : **(काटकर)** परन्तु नहीं आनन्द, शून्य ताज़ा हो या पुराना मैं आनन्द के शून्य को भर नहीं पाई हूँ और जब तक मैं भर नहीं पाई हूँ तब तक वह पुष्पा को .....।

आनन्द : **(ज़ोर से)** बस, बस। तुमने फिर से कहानी शुरू कर दी है।

पुष्पा : यह कहानी नहीं है। इसे चरित्र चित्रण कहते हैं। यह शब्द चलेगा? न चले तब भी चला लेना।

आनन्द : जिसके साथ तुम ढेर सारे विशेषण जोड़ रही थीं। .....।

पुष्पा : **(काटकर, बात को आगे बढ़ाते हुए)** और ..... और पुष्पा आनन्द के नाम के आगे-पीछे विशेषण जोड़ती चली जा रही थी, क्योंकि आनन्द उसका अपना है। पुष्पा का पति है। डॉक्टर पुष्पा, पुष्पा, मैं, धर्म और भ्रष्ट को अलग-अलग पहचानता है, निकटता से पहचानता है .....।

आनन्द : **(काटकर ज़ोर से)** तुम चुप भी रहोगी? ..... तुम निष्पक्ष होकर बात नहीं कर रही हो।

पुष्पा : तुम्हें ऐसा लगा? ..... है ..... होगा .....।

आनन्द : तुम्हारी तबियत?

पुष्पा : पूछकर तुम मुझे याद दिला रहे हो। **(मुँह बिगाड़कर)** मेरे पेट में ..... लेकिन इसके लिये तुमने मेरी तबियत क्यों पूछी?

आनन्द : तुम्हारे पेट में दिल, जिगर, गुर्दा, कलेजी, कपूरा, तिल्ली सब, यों समझो पूरा बकरा चला जाय और मैं अपनी पुष्पा से उसकी तबियत के बारे में कुछ न पूछूँ?

पुष्पा : तुम भावुक हो रहे हो।

आनन्द : मैं तबियत पूछ रहा हूँ।

पुष्पा : तुमने कहा, मेरे पेट में पूरा बकरा चला गया है।

आनन्द : तुमने खाया है।

पुष्पा : यदि बकरे के सभी अंग अन्दर गये हैं तो मुझे आज ही रात को प्रसूति गृह में जाना होगा।

आनन्द : प्रसूति गृह ?

पुष्पा : सच, मैंने यह सब पहली बार खाया है।

आनन्द : एक बार की बात है, पहले दिन की। फिर आदत हो जायेगी। जिस तरह तुमने बताया था कि डॉक्टर पुष्पा जब पहली बार डिसेक्शन हॉल में गई थी तो मुर्दों को देखकर रात को सपनों में उसे डर लगा था और उसने महसूस किया था कि मुर्दे उसके साथ चिपक कर चल रहे हैं।

पुष्पा : और फिर डॉक्टर पुष्पा को आदत हो गई थी। पहली बार मिचली होने लगी थी लेकिन इसके बाद आदत हो गई थी।

आनन्द : अब कुछ नहीं है।

पुष्पा : मैं जानती हूँ। लेकिन मैं कह रही थी कि मुझे मुर्दे के चिपकने की आदत हो गई है। तुम जल्दी नहीं समझते ....।

आनन्द : फिर भी तुम .... **(समझकर)** ऐसा है।

पुष्पा : **(मौन)** हम नाव में कब चलेंगे?

आनन्द : **(दाहिनी ओर हाथ से इशारा करके)** वे दोनों, डॉक्टर और नर्स, अपने मरीज़ को देखकर आयें तो चलें।

पुष्पा : **(मुड़कर दाहिनी ओर देखते हुए)** वे दोनों मरीज़ को देख रहे हैं! प्यार उनके बीच मरीज़ की तरह पसरा हुआ है! तुम व्यंग्य अच्छा कर लेते हो। एक्सेलैन्ट! तुम्हारा सैन्स ऑफ़ ह्यूमर भी .....।

आनन्द : **(काटकर)** बस, बस। तुम्हारा विशेषणों का गोदाम हमेशा भरा रहता है।

पुष्पा : मैं तुम्हारा सटीक विश्लेषण कर रही हूँ।

आनन्द : आभारी हूँ। वह देखो **(पुष्पा दाहिनी ओर देखती है)** वे कितने मग्न हैं। गोया इस मरीज़ को अभी चंगा करना है उन्हें।

पुष्पा : परन्तु डॉक्टर को इस समय शायद ही ध्यान आये कि यह मरीज़ अलग तरह का है। ज़्यादा उपचार से उसकी स्थिति ज़्यादा गम्भीर हो जायेगी और अगर इसी तरह डूबकर इलाज करते रहे तो मरीज़ की मृत्यु निश्चित है।

आनन्द : तुमने मेरे एक्सेलैन्ट व्यंग्य की लाज रख ली।

पुष्पा : **(ध्यान न देकर)** डॉक्टर! डॉक्टर! नाव में सवार होने का समय हो गया है और वापस भी जल्दी पहुँचना है अस्पताल। **(आनन्द से मुखातिब होकर)** सारे अस्पताल में चर्चा है कि डॉक्टर नर्स से शादी करेगा।

आनन्द : एक समाचार।

पुष्पा : ताज्जुब में डालने वाला।

आनन्द : ताज्जुब, तुम जोड़ रही हो।

पुष्पा : सारे अस्पताल में चर्चा है।

आनन्द : इसलिये ताज्जुब होता है?

पुष्पा : विशेष रूप से डॉक्टरों में चर्चा है।

आनन्द : ताज्जुब फिर भी नहीं होना चाहिये। नर्सिंग और फोर्थ क्लास स्टाफ़ में चर्चा नहीं है?

पुष्पा : इतनी नहीं।

आनन्द : और डॉक्टरों में इसलिये है, क्योंकि उनके वर्ग का सदस्य नीचे उतर रहा है।

पुष्पा : कुछ इसलिये भी। कुछ इसलिये नहीं भी।

आनन्द : क्या मतलब?

पुष्पा : मैंने कहा, केवल चर्चा है, जो बुरी बात है।

आनन्द : जो अच्छी बात है। हमने शादी की या ऐसा कहो जब हमारी शादी की सम्भावनायें स्पष्ट थीं तब तुम्हारे डॉक्टरों को यह समाचार सुनकर ताज्जुब हुआ था? मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम्हें ताज्जुब हुआ था?

पुष्पा : फिर प्रश्न। तुम यह छोटी-सी बात क्यों नहीं समझ रहे हो? हम दोनों की स्थितियों में अन्तर नहीं था। केवल लाइन अलग-अलग थी। मैं डॉक्टर और तुम मैकेनिकल इंजीनियर। लेकिन एक डॉक्टर और एक नर्स की स्थितियों में बड़ा अन्तर है।

आनन्द : तुम्हें अपने विवाह पर ताज्जुब हुआ था।

पुष्पा : ओहो, इन बीती बातों को मैं भूल चुकी हूँ।

आनन्द : मतलब ताज्जुब में डालने वाली कोई बात होती तो याद रहती।

पुष्पा : ऐसा कुछ हमारे विवाह में था क्या ?

आनन्द : विवाह में नहीं, हम दोनों में। तुम्हारी और मेरी लाइन में। दोनों अलग-अलग दुनिया के इन्सान। तुम डॉक्टर और मैं ख़ुश्क इन्जीनियर।

पुष्पा : तुम्हारी लाइन ख़ुश्क है और मेरी लाइन रोमान्टिक।

आनन्द : रोमान्टिक शब्द ठीक नहीं है मगर तुम्हारी लाइन ख़ुश्क निश्चय ही नहीं है।

पुष्पा : तुम्हारा मतलब, रोचक है। और अगर ऐसा है तो हर लाइन, जिसे तुम ख़ुश्क कह रहे हो, एक भारी-भरकम उपमा, वह लाइन व्यक्ति की प्रकृति से मेल खाते ही रोचक हो जाती है। प्रकृति के अनुकूल न हो तब भी एक बार इस लाइन में आने पर उसमें रुचि लेनी पड़ती है या फिर अपने आप पैदा हो जाती है।

आनन्द : तुम रुचि पर भाषण दे रही हो।

पुष्पा : क्योंकि अन्त में रुचि को ही महत्व देना पड़ेगा।

आनन्द : तुम्हारे और मेरे विवाह के बीच कौनसी रोचकता थी?

पुष्पा : **(राहत महसूस करते हुए)** प्रश्न कितना स्पष्ट हो गया है! पहले शंका हुई थी कि मैं तुम में, तुम जैसी लाइन वाले व्यक्ति में रुचि बनाये रख सकूँगी या नहीं? यह प्रश्न शुरू में ज़रूर उठा। स्वाभाविक भी था। तुम्हारे मन में भी उठा होगा। मेरे मन में यह प्रश्न अपनी ही लाइन वाले व्यक्ति

के लिये भी उठता शायद और फिर जोड़ घटाकर, विशेषतायें देखकर मैं फैसला करती।

आनन्द : हमारे मामले में फैसला हो चुका और तुमसे डॉक्टर व नर्स के मामले में फैसला नहीं किया जाता।

पुष्पा : फैसला हो नहीं सकता।

आनन्द : जोड़ की तरफ़ बाक़ी वाला हिस्सा कितना जायेगा और बाक़ी की तरफ़ जोड़ वाला कितना जायेगा ..... फैसला नहीं हो पायेगा?

पुष्पा : मुझे नहीं लगता।

आनन्द : मुझे लगता है, हो जायेगा।

पुष्पा : तुम शायद शुरू से ही ग़लती कर रहे हो।

आनन्द : तुम्हारा मतलब है, बचपन से ही।

पुष्पा : कितनी गन्दी आदत है तुम्हारी। एकदम लम्बी छलांग लगाकर किसी तरफ़ निकल जाने की ..... तुम बचपन से वापस लौटो ..... वापस आ गये?

आनन्द : ....।

पुष्पा : तुम शुरू से ही डॉक्टर और नर्स के मामले में ग़लती कर रहे हो। इस मामले में पद, वर्ग और शिक्षा का अन्तर है। इसलिये दोनों की मनोवृत्ति, समझ, दृष्टिकोण और व्यवहार में बहुत दूरियाँ हैं।

आनन्द : पद, वर्ग, शिक्षा में अन्तर न हो तब भी मनोवृत्ति, समझ, दृष्टिकोण और व्यवहार में दूरियाँ हो सकती हैं। हमारे बीच नहीं हैं ?

पुष्पा : इसीलिये यह बात चर्चा में है।

आनन्द : लेकिन कैसे? और फिर दृष्टिकोण व व्यवहार में अर्थगत् अन्तर नहीं है पुष्पा, जहाँ तक .....।

पुष्पा : नहीं होगा!

आनन्द : तुम्हें एक ही शब्द काम में लेना चाहिये था।

पुष्पा : तुम दोनों में से एक को ही लो ..... डॉक्टर और नर्स के विवाह की चर्चा .....।

आनन्द : इसे फिर शुरू करोगी, पुष्पा। नहीं, ऐसा मत करो।

पुष्पा : हमारी बात अभी तक इसी मुद्दे पर चल रही है। तुम्हें याद नहीं क्या?

आनन्द : अभी तक पूरी नहीं हुई है क्या?

पुष्पा : लग तो रहा है कि पूरी हो गई है। किन्तु फिर चली तो बात की जा सकती है।

आनन्द : तुमने अन्तर समझाया, मैंने स्वीकार नहीं किया ..... पर्याप्त नहीं है क्या? मैं समझता हूँ, पर्याप्त है।

पुष्पा : इसलिये चर्चा है।

आनन्द : तुम्हारा मतलब है चर्चा ..... अन्तर की चर्चा **(दाहिनी ओर इशारा करके)** तुम देख रही हो डॉक्टर और नर्स को .....।

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : तुम देख रही हो हम दोनों को, डॉक्टर पुष्पा और इन्जीनियर आनन्द को।

पुष्पा : मैं पुष्पा और आनन्द को देख रही हूँ।

आनन्द : वे पद, वर्ग और शिक्षा के कारण एक-दूसरे के साथ हैं या वे हम सबके बीच हैं?

पुष्पा : मैंने तुम्हें कई बार कहा है, तुम बहुत दूर मत जाया करो। थोड़ा पास आओ। और पास। केवल अनुभव करो कि तुम कुछ नहीं सोचते। जहाँ तुम हो, जहाँ तुम्हारा शरीर है उसके आसपास समाज है। उस समाज में तुम्हारे अपने विचारों, तुम्हारे अपने सोच का कोई अर्थ नहीं है। इसलिये अन्तर की चर्चा का अर्थ है।

आनन्द : **(व्यंग्य से)** हैलो, कुमारी समाज। यह असभ्य जंगली आदमी चरने के लिये तुमसे कुछ माँग रहा है।

पुष्पा : यह किस तरह की भाषा है?

आनन्द : तुम्हारे समाज की नहीं है क्या?

पुष्पा : मैं समझ नहीं पा रही हूँ।

आनन्द : तो निश्चय ही तुम्हारे समाज की नहीं होगी।

पुष्पा : तुमने कहा, कुमारी समाज। मुझे तुमने कुमारी समाज कहकर पुकारा? और इसके बाद एक ही वाक्य में तुम कई शब्द बोल गये। न जाने कौनसे? तुम धीरे-धीरे दोहराओगे, मेरे लिये?

आनन्द : कुमारी समाज के लिये?

पुष्पा : नहीं मेरे लिये।

आनन्द : ख़ैर, कोशिश करता हूँ ..... **(धीरे-धीरे)** हैलो, कुमारी समाज। यह ..... असभ्य ..... जंगली ..... आदमी ..... चरने के लिये ..... तुमसे ..... कुछ माँग रहा है।

पुष्पा : एक-एक शब्द को समझना पड़ेगा। निश्चय ही तुम खेल रहे हो ..... तुमने कहा, कुमारी समाज। पहला शब्द कुमारी ..... क्यों? मैं तुम्हारे साथ विवाहित हूँ। समाज से पहले तुम्हें श्रीमती का प्रयोग क्यों नहीं सूझा?

आनन्द : सूझा? ..... हाँ, इसलिये नहीं सूझा, क्योंकि मैं कुमारी समाज को श्रीमती समाज बनने के लिये पत्नी जैसा सम्बन्ध देना नहीं चाहता।

पुष्पा : इस तरह शरारत करके तुम मुझे श्रीमती से कुमारी नहीं बना सकते, किसी तरह नहीं ..... ए, तुम बना सकते हो क्या फिर मुझे कुमारी?

आनन्द : मैं तो कह रहा हूँ।

पुष्पा : मैं तो माँग रही हूँ ..... वापस।

आनन्द : माँग?

पुष्पा : तुम लौटा सकते हो क्या मेरी कुमारी? मैं चाहूँगी, दे सकते हो तो दे दो।

आनन्द : ले सकती हो तो लो। मैं तो कह रहा हूँ।

पुष्पा : तुम बहुत कुछ कहते हो ..... क्योंकि तुम मुझे कुमारी नहीं बना सकते इसलिये मैं श्रीमती समाज हुई। तुम्हें हैलो श्रीमती समाज कहना चाहिये ..... समाज का पति ! मैं तुम्हें समाज लगती हूँ? तुम्हें समाज लगी ! **(मौन)**

आनन्द : तुम आसपास के समाज पर कुछ बोल रही थीं, तुम्हें याद हो तो।

पुष्पा : हाँ, मैं हूँ। समाज हूँ। तुम समाज को पसन्द करोगे? प्यार करोगे? मुझे पता है, तुम्हारा दृष्टिकोण क्या है ? तुम समाज शब्द से चिढ़ते हो।

आनन्द : यह असभ्य जंगली आदमी चरने के लिये कुछ माँग रहा है।

पुष्पा : प्यार दे सकती हूँ। समाज तुम्हें प्यार देना चाहता है।

आनन्द : चरने के लिये .....।

पुष्पा : प्यार ..... !

आनन्द : आदमी असभ्य और जंगली है। मैं चर सकता हूँ?

पुष्पा : तुम मेरा प्यार लेना चाहोगे?

आनन्द : मैं असभ्य और जंगली हूँ।

पुष्पा : प्यार से ..... समाज से ..... कुमारी समाज से ....।

आनन्द : असभ्य जंगली।

पुष्पा : कुमारी समाज से ऐसा व्यवहार करके तुम उसे श्रीमती समाज में बदल दोगे।

आनन्द : इसके बाद तुम समाज नहीं रह जाओगी।

पुष्पा : मैं असभ्य और जंगली में बदल जाऊँगी। तुम बदलोगे न?

आनन्द : मैं चरना चाहता हूँ।

पुष्पा : मैं बदल जाना चाहती हूँ।

आनन्द : तुम समाज नहीं रह जाओगी।

पुष्पा : मैं रहना नहीं चाहती।

आनन्द : अच्छा! बहुत अच्छा! बहुत-बहुत अच्छा! इसी समाज में, डॉक्टर और नर्स के मामले में, तुम केवल डॉक्टर को अर्थ तलाश करने की सलाह दे रही थीं, दूसरे शब्दों में, इसलिये तुम अच्छे और बुरे का अर्थ समझाना चाहती थीं और इसलिये ही डॉक्टर और नर्स के बीच अन्तर की चर्चा को महत्वपूर्ण मानते हुए उसका भी अर्थ तलाश करना चाहती थीं। तुमने अन्तर ढूँढ़ लिया। तुम्हें ऐसा लगा तुम समाज बन गईं। अब तुम समाज बनी रहना नहीं चाहतीं?

पुष्पा : नहीं। मैं तुम्हें और कितना समझाऊँ कि बातों में तुम लम्बी दूरियाँ तय मत किया करो।

आनन्द : स- स- समाज भी लम्बा ही तो है।

पुष्पा : अब ऐसी बातें मत करो।

आनन्द : बातें?

पुष्पा : दो-तीन बार ऐसा हो गया है कि तुमने मेरे बोले हुए किसी शब्द को ज़बरदस्ती दोहराकर प्रश्न पूछा है।

आनन्द : मैं शब्द का आनन्द ले रहा था।

पुष्पा : शब्द का?

आनन्द : नहीं, लहजे का। तुम्हारे कहे हुए शब्द के लहजे का।

पुष्पा : लहजा कहना पर्याप्त था, आनन्द।

आनन्द : हाँ, पर्याप्त था।

पुष्पा : बहुत-बहुत अच्छा।

आनन्द : श्रेष्ठ-अतिश्रेष्ठ- कैसा लगता है।

पुष्पा : (मौन रहने के बाद) दुःखी होने लगी हूँ मैं।

आनन्द : नहीं, संभलो। तुम संभलो ..... क्या होने लगी हो तुम?

पुष्पा : लगता है, मूड ख़राब हो जायेगा।

आनन्द : अब? नहीं, तुम अब पकड़ लो।

पुष्पा : अब पकड़ूँ या मूड? एक शब्द बताओ।

आनन्द : प्रयत्न करो कि दोनों ठीक रहें, स्वस्थ दुःखी, ख़राब, बिगड़ना जैसे शब्द भूल जाओ। कम से कम यहाँ याद मत रखो।

पुष्पा : अपने आप लगने लगा है ऐसा।

आनन्द : तुम यह सब महसूस करना बन्द करो, प्लीज़। कुछ और महसूस करो। ताज़गी, स्फूर्ति, सुन्दरता जैसे शब्दों को याद करो।

पुष्पा : मुझे कुछ नहीं आता है।

आनन्द : शुरू करने से सब आ जाता है।

पुष्पा : करूँगी तभी तो।

आनन्द : आओ करें।

पुष्पा : क्या करें? कुछ नहीं होगा। बस, चुपचाप बैठकर मौसम देखो, मौसम पर बोलो। तब तक मैं अब और मूड को पकड़ती हूँ ..... लेकिन एक ही समय दोनों को कैसे पकड़ा जा सकता है?

आनन्द : क्यों, मौसम का आनन्द नहीं उठाया जा सकता? ..... उठाना चाहिये। ताज़गी, स्फूर्ति, सुन्दरता .....।

पुष्पा : **(काटकर)** आनन्द तो इस स्थान का भी लिया जाना चाहिये। लेकिन क्या हमने आनन्द लिया है? हमने किस चीज़ का आनन्द लिया है? तुम्हें मालूम है, हम इस स्थान का आनन्द ले चुके हैं। हाँ, बहुत तेज़ी से। जल्दी करना हमारी आदत है। अब हमें मौसम का आनन्द लेना चाहिये, ऐसा तुमने कहा। तुम समझते हो, ऐसा करना सम्भव है? हम पहले भी आनन्दित नहीं हुए थे और अब भी आनन्दित नहीं हो सकेंगे। आनन्द की जगह हमें बातचीत करनी चाहिये। ताज़गी पर, स्फूर्ति पर, सुन्दरता पर .....।

आनन्द : **(काटकर)** बातचीत नहीं, आनन्द कहो। मौसम कितना अच्छा है ?

पुष्पा : तुम आनन्द लो, मैं बात कहती हूँ। क्या है?

आनन्द : मौसम कितना अच्छा है? इसका आनन्द हमसे कैसे छूट गया? पिकनिक के स्थान का इसके अलावा कोई महत्व नहीं है। बिना मौसम के हमारा मूड, मूड नहीं है।

पुष्पा : हमने मौसम पर बात की थी, आते ही। तुमने ही कहा था, यहाँ हवा स्फूर्तिदायक है।

आनन्द : ऐसा मैंने कहा था? हवा से आनन्दित होना क्या मौसम से आनन्दित होना होता है, पुष्पा?

पुष्पा : मैं समझती हूँ, ऐसा ही होता है। हवा ही मुख्य है ऐसे स्थानों पर।

आनन्द : लेकिन अब वह कहाँ गई?

पुष्पा : हवा महसूस होती है। मौसम महसूस होता है।

आनन्द : कहाँ है? कहाँ है?

पुष्पा : तुम आनन्द, यहाँ हो न?

आनन्द : हाँ।

पुष्पा : तुम बोर कर रहे हो।

आनन्द : मैं मौसम का आनन्द ले रहा हूँ।

पुष्पा : मैंने कहा, हमने सुबह मौसम पर बात की थी।

आनन्द : हवा का आनन्द लिया था।

पुष्पा : फिर कहती हूँ, एक ही बात है।

आनन्द : तो तुम आनन्दित हो रही हो न?

पुष्पा : लगता है ऐसा। मैं आनन्द ले रही हूँ। मुँह से, इस बातचीत का। आँखों से, सामने तालाब में नौका। नौका विहार। चारों ओर फैली हरियाली, यह ठंडी हवा .....।

आनन्द : तुम गड़बड़ कर रही हो। तथ्यों की, भाषा की।

पुष्पा : तुम गड़बड़ कर रहे हो, सुनने में।

आनन्द : हवा को तुम कैसे देख रही हो?

पुष्पा : आँखों से हवा की ठंडक। बहुत सुहावनी है। धूप की मुलायम गर्मी मैं देखती– महसूस कर रही हूँ। मैं महसूसती देख रही हूँ।

आनन्द : धूप से दूर छाया में बैठकर तुम उसकी मुलायम गर्मी देखती– महसूस कर रही हो।

पुष्पा : तभी तो कहती थी, बात कर रही हूँ।

आनन्द : यह देखकर महसूस करने की चीज़ नहीं है?

पुष्पा : मेरी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ एक साथ काम कर रही हैं। पक्षियों की चहचहाहट और चारों तरफ़ फैले लोगों का शोर इस स्थान को .....। पक्षियों की चहचहाहट कितनी संगीतमय है। प्यारी-प्यारी। लोरी। लोग रंगारंग पोशाकें पहनकर ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे हैं। ख़ूब खा रहे हैं। ख़ूब घूम रहे हैं। एक दूसरे में पूरी तरह डूबे हुए हैं। सब मुझ में हैं। सब में मैं हूँ। मैं सबको छू सकती हूँ। मुझे वे सब छू रहे हैं। केवल ख़ुद को नहीं छू रही हूँ मैं।

आनन्द : मेहरबानी करके तुम चुप रहो।

पुष्पा : तालाब के पानी में सूरज की रोशनी ने पाँचवीं बार रंग बदला है तुम्हारी तरह। तुम्हारे चेहरे की तरह।

आनन्द : **(पुष्पा के होंठों पर हाथ रखकर)** मेहरबानी करके तुम चुप रहो, एक साथ सभी इन्द्रियों को काम में मत लो। सबको मिला रही हो। तुम्हें पता नहीं लग रहा है, क्या महसूस करना चाहिये, क्या देखना चाहिये, क्या छूना चाहिये, क्या सुनना चाहिये और किससे आनन्दित होना चाहिये?

पुष्पा : वह देखो, देखो-देखो, पक्षियों का शोर।

आनन्द : प्लीज़, चुप रहो। चुप। पक्षियों का शोर कहकर उसे संगीतमय बताती हो और चाहती हो मैं उसको देखूँ।

पुष्पा : क्यों नहीं देख सकते? आओ, मैं दिखाती हूँ तुम्हें।

आनन्द : **(मौन तोड़कर)** आओ, हम लोग कुछ करें।

पुष्पा : इतना कुछ हो रहा है, उसका कुछ नहीं।

आनन्द : उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे रहा है।

पुष्पा : कौन परवाह करता है?

आनन्द : इतिहासकार, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आदि इस होने को इकट्ठा करके, सूँघकर, चीरफाड़, विश्लेषण आदि करने के बाद सब मामलों का सामान्यीकरण करके सिद्धान्त बनाने में लगे होंगे।

पुष्पा : लेकिन हमारी तरफ़ ध्यान नहीं देते होंगे। आनन्द, इसलिये हमें भी परवाह नहीं करनी चाहिये।

आनन्द : किसको है परवाह? आख़िर हम कर क्या रहे हैं?

पुष्पा : आख़िर। क्यों आख़िर? मैं नहीं समझ पाती तुम आख़िर क्यों कह रहे हो? लेकिन ..... लेकिन कुछ हो रहा है। यह कुछ जो हो रहा है, हम कर रहे हैं। अर्थात् हम यह कुछ पूरा करके, इन सबके लिये उपलब्ध करा रहे हैं। इन सबके लिये, अपने लिये, काम चलाने के लिये।

आनन्द : अन्ततः हम कुछ पा रहे हैं।

पुष्पा : तुम्हें ऐसा लगा। ठीक है। यह ठीक ऐसा है जैसा सुहागरात को तुमने मुझे कहा था, "पुष्पा, मैंने जीवन में कुछ पाया है, तुम्हें पाया है।"

आनन्द : तुम ठीक-ठीक नहीं बता रही हो।

पुष्पा : मैं ठीक बता रही हूँ।

आनन्द : तुम कुछ शब्दों को छोड़ रही हो।

पुष्पा : कुछ भावुक शब्द होंगे।

आनन्द : हाँ।

पुष्पा : और आज भी ऐसा कुछ कह रहे हो गोया तुम कुछ कर रहे हो। तुमने कुछ किया? तुमने मुझे पाया?

आनन्द : यह तुम कह रही थीं।

पुष्पा : **(व्यंग्यपूर्वक)** श्री आनन्द, पुष्पा के पति, डॉक्टर पुष्पा के जीवनसाथी, पिकनिक स्थल पर अपनी पत्नी, डॉक्टर दोस्त और उसकी प्रेमिका के साथ बैठकर कुछ कर रहे हैं। वे समझते हैं कि उन्होंने पुष्पा को पा लिया है। अपनी पत्नी को विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा ही है .....।

आनन्द : यह तुम कह रही थीं पुषी, तुम।

पुष्पा : **(व्यंग्यपूर्वक)** ऐसा कुछ करके हम बाक़ी सब के लिये उपलब्ध करा रहे हैं, केवल इतना नहीं है। डॉक्टर पुषी का इन्जीनियर पति, पत्नी सहित अपने जीवन की कीमत का आकलन कर रहा है। वह समझता है हम दोनों कच्चे माल की तरह कारखाने में आने के बाद अनेक प्रक्रियाओं और विभागों में से गुज़रते हुए जब एक ही दरवाज़े से बाहर निकलेंगे तो तैयार माल के रूप में हमारी कीमत होगी .....।

आनन्द : यह तुम कह रही थीं, तुम! मेरे ऊपर तोहमत मत लगाओ।

पुष्पा : यह कीमत हर एक विभाग में अलग-अलग प्रक्रिया पर हुए ख़र्च का आँकड़ा होगी। आनन्द को मालूम है कि अलग-अलग विभागों को चलाने वाले इतिहासकार, मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक आदि हैं और हम उनके लिये कुछ कर रहे हैं .....।

आनन्द : बस, बस, बस। अब आगे मत बढ़ो। बहुत हो चुका।

पुष्पा : ..... और हम कुछ कर रहे हैं। श्री आनन्द जानते हैं कि जिस दरवाज़े से कच्चे माल के रूप में हम अन्दर आये थे, उससे तैयार माल के रूप में हम बाहर नहीं निकलेंगे। अलग-अलग विभागों की अलग-अलग प्रक्रियाओं में हम अपनी मौलिकता खो देंगे। धीरे-धीरे मरते जायेंगे। कौनसी प्रक्रिया में से निकलते हुए हम पूरी तरह समाप्त हो जायेंगे, उन्हें इसकी जानकारी भी है।

आनन्द : तुम अपना रक्तचाप बढ़ा रही हो।

पुष्पा : और ख़ुशफ़हमी पाल रहा है, सुहागरात की तरह .....।

आनन्द : इट इज टू मच नाउ, टू मच।

पुष्पा : ..... हम कुछ कर रहे हैं! एक दूसरे को पा रहे हैं!!

आनन्द : शटअप, बकवास बन्द करो।

पुष्पा : डॉक्टर पुषी इसमें शामिल है। इन्जीनियर आनन्द-आ-को योगदान दे रही है। प और आ कुछ कर रहे हैं। प आ। प आ। पा-पा आ- पा आ आ आ रहे हैं।

आनन्द : अब तुम्हारा सन्तुलन पूरी तरह बिगड़ गया है।

पुष्पा : **(धीरे)** तुम मुझे पुषी कहो।

आनन्द : मज़ाक़ छोड़ो।

पुष्पा : **(उसी तरह)** तुम मुझे पुषी कहो।

आनन्द : तुम पुषी, यह खेल बन्द करो।

पुष्पा : **(नाराज़ होकर)** तुम इसे खेल कहते हो? खेल समझते हो इसे? मैं गम्भीर हूँ। मज़ाक़ तुम कर रहे हो, आनन्द। **(धीरे)** तुम मुझे प्यार से पुषी कहो।

आनन्द : यह सब एकतरफ़ा है। मैं कहीं भी तुम्हारे साथ शामिल नहीं हो सका हूँ। तुम्हें अब तक ध्यान नहीं आया है। तुम्हें एकतरफ़ा खेल नहीं खेलना चाहिये।

पुष्पा : **(धीरे सहजतापूर्वक)** एकतरफ़ा नहीं है। तुम लगातार इसमें हो। मुझे लगातार ध्यान है और तुम लगातार साथ दे रहे हो। साथ के लिये धन्यवाद। अब तुम पुषी कहो आनन्द।

आनन्द : **(आश्चर्य से)** पुषी!

पुष्पा : मुझे नहीं पहचानते तुम। ..... हम जानते हैं एक-दूसरे को? ..... तुम्हारा नाम आनन्द है और मेरा नाम क्या है? पुषी? हम दोनों विवाहित

हैं। हमारे शरीर एक–दूसरे को पहचानते हैं। हम पहचानते हैं एक–दूसरे को? कैसी होती है पहचान? तुम आनन्द, मैं पुषी। विवाहित। क्या होता है विवाहित? ..... पुषी।

आनन्द : पुषी। **(धीरे से, किंचित् मौन के बाद)** मैं भूल गया, खाने में क्या है हमारे पास। तुम्हें याद है?

पुष्पा : अमरूद, टमाटर, नारियल, गुड़ की पपड़ी, केले, समोसे, चने, पान, लेकिन अचार नहीं है।

आनन्द : बस, बस, बस। दुनिया भर की गन्दगी इकट्ठी कर लाई हो। सिगरेट नहीं है?

पुष्पा : है।

आनन्द : तुम और क्या बना रही हो?

पुष्पा : मूड बना रही हूँ। अब को पकड़ रही हूँ। मक्खी की तरह **(वैसी ही हरक़त)** या तो भाग जाती है या झपटकर पकड़ने के बाद हाथ खोलती हूँ तो मरी हुई मिलती है।

आनन्द : **(मौन रहकर)** इतनी चीज़ों के नाम सुनकर लगा, अब तक जो कुछ पेट में गया है, बाहर निकल आयेगा।

पुष्पा : बिल्कुल बेकार आदमी हो। मूड ख़राब कर देते हो।

आनन्द : मूड नहीं ज़ायका। ख़राब नहीं बिगाड़।

पुष्पा : तुम्हारी आदत है शब्दों से चिपकने की। मेरा मतलब ज़ायके से ही था।

आनन्द : डॉक्टर के नाते तुम एक की जगह दूसरी दवा लिखकर कहो कि तुम्हारा इरादा एक से था। चलेगा?

पुष्पा : गम्भीर परिणाम निकलेंगे। लेकिन मेरे पेशे या उससे सम्बन्धित किसी विषय पर यहाँ चर्चा नहीं की जानी चाहिये।

आनन्द : **(मौन रहकर)** इस विषय में कोई चर्चा नहीं होगी, होने नहीं दी जायेगी।

पुष्पा : मेरा ज़ायका बिगड़ रहा है।

आनन्द : इन बातों को तुम सरलता से लो।

पुष्पा : तुम सही शब्द का इस्तेमाल कर रहे हो, आनन्द?

आनन्द : टेक इट ईज़ी बेबी, टेक इट ईज़ी।

पुष्पा : अंग्रेज़ी में बोलने से क्या शब्द सही हो जाता है?

आनन्द : तुम अपना ज़ायका सुधारना चाहती हो न? तो पहले मूड बना लो।

पुष्पा : अच्छा।

आनन्द : मौसम पर बात करोगी?

पुष्पा : कौनसा? क्या?

आनन्द : फ़सल पर बात करोगी?

पुष्पा : क्या? ..... इस मौसम की यानी आज के दिन वाले मौसम की फ़सल लगभग तैयार हो गई है। **(आनन्द आश्चर्यचकित, पुष्पा कृत्रिम गम्भीर!)** सच कहती हूँ। तुम्हें गम्भीर हो जाना चाहिये। मेरे पेट में बकरा तैयार हो रहा है।

आनन्द : ओह।

: **(पहले आनन्द और फिर दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसते हैं।)**

पुष्पा : तुम्हें गम्भीर हो जाना चाहिये। हँसी से मेरे पेट में दर्द उठ सकते हैं।

आनन्द : दर्द उठ सकते हैं या दर्द उठ सकता है?

पुष्पा : दर्द बढ़ रहे हैं।

आनन्द : मैं डॉक्टर को बुलाता हूँ।

पुष्पा : नहीं, तुम मेरे साथ बैठोगे। ..... उफ़! ..... उफ़! **(चेहरे पर द की लकीरें)**

आनन्द : **(घबराकर)** हालत ज़्यादा न बिगड़ जाये ..... मैं डॉक्टर को ले आ हूँ।

पुष्पा : तुम मेरे साथ बैठोगे– हालत नाज़ुक है।

आनन्द : नहीं, ऐसी हालत में मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहिये। मैं देख नहीं पाऊँगा।

पुष्पा : तुम्हें देखना चाहिये कि ..... उफ़ ..... कि मेरी कराहटें किस तरह चीख़ों में बदलती हैं, किस तरह मैं तड़पती हूँ और ख़ून की नदी में तैरता बच्चा बाहर आता है ..... आह ..... फिर कितना आराम मिलेगा ..... कितनी राहत मिलेगी ..... आनन्द, तुम मेरे साथ रहोगे।

आनन्द : मैं इस हालत में तुम्हें देख नहीं पाऊँगा।

पुष्पा : क्यों, तुम्हें सहानुभूति होगी? सहभागी बन जाना।

आनन्द : मुझे मिचलाहट होगी। पुषी, मुझे इस सब से नफ़रत है।

पुष्पा : मुझे नहीं है। तुमने यह सब नहीं देखा है इसलिये तुम्हें काल्पनिक मिचलाहट और काल्पनिक नफ़रत है। ..... तुम आज मेरे साथ बैठकर देखो।

आनन्द : बेवकूफ़ी है।

पुष्पा : तुम बेवजह शंकालु हो रहे हो, आनन्द। बच्चे का जन्म लुभावना, मनमोहक है और आश्चर्य जैसा अहसास पैदा करता है।

आनन्द : मुझे नफ़रत है इन सबसे। **(चिढ़कर)** तुमने सुना, मुझे नफ़रत है।

पुष्पा : बच्चे के जन्म के बाद उसके पालन–पोषण में होने वाले कष्टों की बात सोचकर तुम्हारे मन में यह भावना पैदा हुई है। इस बात से मैं भी सहमत हूँ। यहाँ, मैं भी नफ़रत करती हूँ। लेकिन आज तुम्हें मेरे साथ बैठना ही होगा।

आनन्द : उफ़, मेहरबानी करके यह सब बन्द करो। मेरे अन्दर कुछ गरम–गरम रिस रहा है। तुम चुप हो जाओ।

पुष्पा : तुम देखना ..... उफ़ ..... आह .....।

आनन्द : मैं डॉक्टर को बुला लाता हूँ।

पुष्पा : नहीं, तुम डिलीवरी में खड़े रहोगे, तुम ही डिलीवरी कराओगे। मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

आनन्द : मैं **(क्रोध से)** ..... मैं मार दूँगा उसे ..... मैं ..... जैसे ही बच्चा बाहर आयेगा मैं उसे मार डालूँगा। मुझे नफ़रत है इस सबसे।

पुष्पा : तुम्हें गुस्सा आ गया है, प्रिय। यह सब लुभावना, मनमोहक होता है और आश्चर्य जैसा अहसास .....।

आनन्द : **(गुस्से में ही)** चुप रहो पुष्पा, अपना मुँह बन्द रखो।

पुष्पा : यह बेहद आश्चर्य जैसा अहसास पैदा करने वाला और बेहद लुभावना, मनमोहक .....।

आनन्द : **(काँपते हुए)** मैं तुम्हें मार दूँगा पुषी, मार दूँगा तुम्हें। **(मौन, भावुक होकर)** तुम भावुक हो रही हो।

पुष्पा : तुम गुस्से से काँप रहे हो।

आनन्द : तुम्हारे अन्दर एक कमज़ोर औरत पैदा हो गई है।

पुष्पा : मैं अन्दर-बाहर दोनों ओर से एक जैसी हूँ।

आनन्द : इस कमज़ोर औरत ने तुम्हारे अन्दर ममता भर दी है। तुम भावुक बन रही हो!

पुष्पा : आनन्द, तुम गुस्से में से वापस लौटो।

आनन्द : तुम्हें माँ बनना है। अपनी ममता को बच्चों के ऊपर उडेलना है।

पुष्पा : **(ज़ोर से चीख़कर)** आनन्द, इसके बाद में एक भी शब्द सुनना नहीं चाहती।

आनन्द : **(व्यंग्यपूर्वक)** वह औरत पुषी ..... नहीं, वह औरत पुष्पा जो एक बच्चे को जन्म देना चाहती है, पति पर प्रसव के समय अपने साथ रहने के लिये दबाव डाल रही है। बच्चे के जन्म की प्रक्रिया को लुभावना, मनमोहक और आश्चर्य जैसा अहसास पैदा करने वाला बताती है .....।

पुष्पा : **(उसी तरह गुस्से से)** आनन्द, तुम्हारा एक-एक शब्द व्यंग्य से भरा हुआ है। मेरे अन्दर नंगे तार फैल गये हैं।

आनन्द : वह ममता में अंधी हो गई है।

पुष्पा : तुम शुरू से ग़लत समझ रहे हो। कुछ समझने की कोशिश करो।

आनन्द : तुम्हें अब बच्चा चाहिये, अपना बच्चा। हमारा अपना बच्चा।

पुष्पा : **(शब्दों को चबाते हुए)** प्रसव के बाद मैं बच्चे को गला दबाकर मार दूँगी।

आनन्द : प्रसव की प्रक्रिया, जिसे तुम लुभावना और मनमोहक बता रही थीं।

पुष्पा : हाँ, मैं अब भी बता रही हूँ।

आनन्द : तुम जिसे बेहद आश्चर्य जैसा अहसास पैदा करने वाला बखान रही थीं।

पुष्पा : मुझे अब भी यही लगता है। मैंने अस्पताल में प्रसव कराये हैं।

आनन्द : और तुम ममता में अन्धी नहीं हो!

पुष्पा : नहीं, नहीं, नहीं। नहीं हूँ। तुम समझने की कोशिश करो। मैं कह रही थी कि अगर तुम देखोगे तो ऐसा महसूस करोगे।

आनन्द : तुमने देखने के लिये कहा था।

पुष्पा : और देखने व देखकर महसूस करने का अर्थ स्वयं करना कदापि नहीं होता है। ..... ख़ुद के लिये मैं ऐसा कभी नहीं चाहूँगी।

आनन्द : किसी समय भी ऐसी कामना कर सकती हो। तुम पर अब विश्वास नहीं है मुझे।

पुष्पा : मैंने कहा, मैं बच्चे को निकास पर ही मार दूँगी, ठंडी होकर।

आनन्द : तुम किसी भी समय कामना कर सकती हो।

पुष्पा : हरगिज़ नहीं। कभी नहीं। ..... तुम चुप रहो।

आनन्द : क्यों?

पुष्पा : यह मुख़्तलिफ़ सवाल है ..... और निजी समस्याओं के समाधान हमें यहाँ नहीं ढूँढ़ने हैं।

आनन्द : यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

पुष्पा : ऐसी स्थिति अभी नहीं आई है। लेकिन इस बात से लगता है कि तुम भावुक हो रहे हो।

आनन्द : **(सहजता से)** तुमने कमज़ोरी पकड़ ली। ..... तुम्हारी भावुकता उतर गई?

पुष्पा : यह तुम्हारे दिमाग़ का वहम था।

आनन्द : वहम भरी भावुकता का उफान तुममें भी पैदा हुआ और मुझमें भी। **(मौन।)** सिगरेट कहाँ है?

(सिगरेट जलाता है। आनन्द एक हाथ में फोल्डिंग कुर्सी उठाता है। पुष्पा की ओर देखता है। इसके बाद दूसरे हाथ में दुसरी फोल्डिंग कुर्सी उठाता है और दोनों कुर्सियों को एक-दूसरे के सामने रखता है। पुष्पा की ओर देखकर कुर्सियों की ओर देखता है। पुष्पा का ध्यान इस ओर नहीं है। ध्यान जाने के बाद आनन्द पुष्पा को कुर्सी पर बैठने के लिये इशारा करके स्वयं दूसरी कुर्सी पर बैठता है। पुष्पा उसे आश्चर्य से देखते हुए कुर्सी पर बैठती है।)

आनन्द : पुष्पा, मेरा मतलब है डॉक्टर पुष्पा, विवाह के बारे में कोई अन्तिम निर्णय लेने से पहले अच्छा होगा हम कुछ बातों पर विचार कर लें।

पुष्पा : **(आश्चर्य सहित)** हाँ, ठीक है। सोच लें।

आनन्द : मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हें और तुम मुझे पूरी तरह समझ लो। इसके लिये ज़रूरी है कि हम अपने रहन-सहन के ढंग, अपनी रुचियाँ, अपनी योजनायें इत्यादि एक-दूसरे को बतायें। हमारा दृष्टिकोण, हमारी योग्यतायें, हमारे विचार, हमारा चरित्र, एक-दूसरे के सामने आना चाहिये। ..... यदि तुम्हें ऐतराज़ न हो तो।

पुष्पा : **(कुछ समय मौन रहकर)** डॉक्टर, तुम कहना चाहते हो कि हम इतने वर्ष मेडीकल कॉलेज में साथ पढ़े, दो वर्षों से एक ही अस्पताल में काम कर रहे हैं तब भी यह सब जो तुमने कहा, कहना ज़रूरी था?

आनन्द : एग्ज़ेक्टली राइट, डॉक्टर पुष्पा।

पुष्पा : ठीक है डॉक्टर।

आनन्द : दो बातें। पहली शादी और दूसरी, मिलकर क्लिनिक खोलना। दोनों में हमें भागीदार रहना है। स्पष्ट रूप से यही प्रस्ताव हैं न तुम्हारे?

पुष्पा : तुमने ठीक समझा है।

आनन्द : मैं समझता हूँ कि दोनों प्रस्ताव एक साथ रखकर तुम दोनों पर मेरे विचार जानना चाहती हो। तुम शायद दोनों प्रस्तावों पर एकमुश्त बात करना चाहती हो। क्या इनमें से किसी एक को चुनने या पसन्द करने की छूट तुम दे सकती हो? इसके बाद शायद कुछ आसानी हो। ए लिटिल बिट, आई थिंक, डॉक्टर।

पुष्पा : दोनों प्रस्ताव अलग-अलग हैं, एक प्रस्ताव के दो भाग नहीं हैं। लेकिन इन दोनों में से पहला प्रस्ताव विवाह है। हाँ, मेरी राय जानने की ज़िद मत करना। निर्भर इस बात पर करता है कि लड़का क्या चाहता है, इसलिये लड़की की राय यों भी गौण हो जाती है।

आनन्द : आइ सी। विवाह के प्रस्ताव पर पारिवारिक दृष्टि से और को-क्लिनिक के प्रस्ताव पर व्यापारिक दृष्टि से विचार करना होगा। ख़ैर, जैसा तुम चाहो। **(मौन)** देखा पुष्पा, आइ मीन डॉक्टर पुष्पा, मैं तुम्हारे सामने जो विचार रखूँगा उन्हें मैंने दो भागों में नहीं बाँटा है, क्योंकि उस दिन तुमने मेरे सामने दोनों प्रस्ताव एक साथ रखे थे, इसलिये मैं अपनी बात भी एक साथ रखता हूँ। मैं समझता हूँ, एक सीमा तक यह ठीक भी होगा। क्यों?

पुष्पा : तुम अपनी बात जारी रखो।

आनन्द : मैं कोशिश करूँगा कि जो पंक्ति, जो बात विवाह या को-क्लिनिक के संदर्भ में कहूँ तुम स्पष्ट रूप से समझ जाओ। डॉक्टर पुष्पा, यह समझना

तुम्हारे लिये बेहद ज़रूरी है कि जिस व्यक्ति के साथ तुम भागीदारी करने जा रही हो, उसकी प्रकृति क्या है? मैं शुरू करूँ?

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : मैं कोई महान् व्यक्ति नहीं हूँ। न मैं महान् व्यक्तियों में अपनी गिनती कराने का इच्छुक हूँ और न ऐसी कोई योग्यता अभी मुझमें है। लेकिन एक बात, जो तुम समझ चुकी होंगी या समझ जाओगी, यह है कि मैं अपनी तरह का अलग व्यक्ति हूँ। तुम सम्भवत: मुझे किसी श्रेणी विशेष में नहीं रख पाओगी। तुम मुझे अलग-थलग, अतिरिक्त या विशेष व्यक्तियों में शामिल करने की भूल भी नहीं करोगी। **(मौन)** मैं स्पष्ट हूँ न?

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : मैं स्पष्टवादी हूँ। दूसरों की स्पष्टवादिता और स्वतन्त्र स्वभाव मुझे अच्छा लगता है। काम या किसी और सिलसिले में किसी भी प्रकार की उलझन, देर या ऊहापोह मुझे नापसन्द है। जहाँ उचित समझो डॉक्टर पुष्पा, तुम मुझसे प्रश्न पूछ सकती हो। मेरी बात का क्रम ज़रूर टूट सकता है, फिर भी तुम शंकायें व्यक्त कर सकती हो।

पुष्पा : तुम कहते चलो। कुछ पूछना हुआ तो मैं एकसाथ पूछ लूँगी। अब तक तो सब बातें स्पष्ट और सामान्य हैं।

आनन्द : थैंक्यू। इच्छा रहती है कि बात या काम, वह चाहे मेरा हो या और किसी का मुझसे, हो और अच्छे ढंग से हो। अपने बारे में स्वयं के या किसी भी मुद्दे पर दूसरों के सन्देह न मुझे अच्छे लगते हैं और न यथासम्भव ऐसा अवसर देता हूँ किसी को। व्यवहार में उतना ही पारदर्शी जितना अपने उद्देश्य में।

पुष्पा : वैरी गुड डॉक्टर, एक्सीलैन्ट। ..... मैं समझती हूँ डॉक्टर कि बीच-बीच में कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग करने से तुम्हारी बातों का क्रम टूटेगा नहीं।

आनन्द : आइ डोन्ट माइन्ड ..... लेकिन तुम चुप रहो, तब भी चल सकता है।

वैसे पुष्पा, डॉक्टर पुष्पा, तुम यह सब कहने की ज़रूरत महसूस करती हो क्या?

पुष्पा : शायद हाँ। केवल इस अहसास को तोड़ने के लिये कि मैं कोई भाषण सुन रही हूँ। और इस तरह .....। मुझे आशा है तुम इसे अन्यथा नहीं लोगे। मैंने वही कहा है जो मुझे महसूस होता है।

आनन्द : ठीक है, ठीक है। तुम तकल्लुफ़ मत करो। जैसा महसूस करती हो, वही करो।

पुष्पा : थैंक्स डॉक्टर।

आनन्द : **(कुछ देर मौन रहकर)** हाँ, तो मैं कह रहा था ..... व्यवहार के बारे में ..... कि मैं व्यवहार में उतना ही पारदर्शी हूँ, जितना उद्देश्य में। कम बातें और कम योजनायें। मेरी आस्था अनुमान या अपेक्षाओं में नहीं है। इस तरह समय बरबाद होता है। मैं ठीक लक्ष्य को देखकर शुरुआत करता हूँ।

पुष्पा : बहुत दृढ़ और ठोस विश्वास।

आनन्द : दूसरों का सम्मान इसलिए करता हूँ, क्योंकि अपना सम्मान चाहता हूँ। छोटा हो चाहे बड़ा। किन्तु जो लोग अहम्वादी होते हैं या जिनमें स्वाभिमान और स्वसम्मान की भावना नहीं होती, उनसे मैं नफ़रत करता हूँ। ऐसे लोगों के लिए मैं अन्तिम बिन्दु तक बुरा होता हूँ।

पुष्पा : अन्तिम बिन्दु तक बुरा!

आनन्द : साथ ही, स्पष्ट रूप से कह देने के बाद मैं न किसी व्यक्ति की परवाह करता हूँ और न परिणामों की चिन्ता।

पुष्पा : करनी भी नहीं चाहिये।

आनन्द : दूसरों की टिप्पणियों, सलाह-मशविरों, फब्तियों की मैंने कभी परवाह नहीं की है।

पुष्पा : स्पष्ट है।

आनन्द : परिणामस्वरूप मैंने लोगों द्वारा अपने प्रति अच्छा होने के बजाय बुरा होने की अपेक्षा ज़्यादा रखी है।

पुष्पा : अर्थात् तुम समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप चलना पसन्द नहीं करते हो?

आनन्द : मैं फल उतना और उसका चाहता हूँ, जितना मैंने किया है।

पुष्पा : मिलता भी उतना ही है। गुड! गुड !! एक बात ..... यदि तुम मेरी एक चिन्ता दूर कर सको तो .....।

आनन्द : मैं पहले ही कह चुका हूँ, यदि तुम्हें किसी भी प्रकार की शंका है तो तुरन्त पूछ सकती हो।

पुष्पा : शंकायें नहीं हैं। बात यह है कि अब तक तुमने जो कुछ कहा है, उसे लेकर चिन्तायें हैं। ऐसा है कि, जैसा तुमने कहा है, मैं जीवन के व्यावहारिक पक्ष को देखना चाहती हूँ .....।

आनन्द : प्रश्न व्यावहारिक होने, न होने को लेकर है ..... मैं समझ गया। मैं अपनी बात पूरी कर लूँ। तुम इसके बाद इस बिन्दु पर बोल सकती हो।

पुष्पा : तुमने कई बातें ऐसी कही हैं, जिन पर तुरन्त बात की जाये तो ज़्यादा अच्छा .....।

आनन्द : तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, डॉक्टर पुष्पा। मैं स्वयं उन बिंदुओं पर बाद में बोलूँगा। चिन्ता दूर हुई?

पुष्पा : ठीक है, डॉक्टर।

आनन्द : तो मेरे विचार, मेरे तौर-तरीके और मेरा सोच सब मेरे अपने हैं। अलग हैं। ये सब मेरे जीने, रहने, व्यवहार और बातचीत में गुंथे हुए हैं। इसलिये मैंने दूसरों को बहुत खोकर ख़ुद को पाया है। सोचता रहा हूँ कि यही मेरे लिये ज़्यादा ठीक है।

पुष्पा : अक्सर बहुत लोगों के साथ ऐसा होता है। साथ ही तुम्हारी सूझ-बूझ के लिये मैं तुम्हें दाद देती हूँ। तुम्हारे लिये गर्व की बात यह है कि तुमने स्वयं को पाया है, स्वयं को पहचाना है।

आनन्द : गर्व की बात है या नहीं, मैं नहीं जानता .....।

पुष्पा : मैं समझती हूँ, ऐसी कोई ज़रूरत तुम्हें अब कम ही होगी। होगी भी तो .....।

आनन्द : वोन्ट यू लेट मी फ़िनिश फ़र्स्ट, डॉक्टर?

पुष्पा : प्लीज़।

आनन्द : इंसान का काम है कि वह अपनी और दूसरों की क्षमताओं का आकलन एक साथ करे। ऐसा करते हुए वह अपने क्षेत्र में आगे बढ़कर, एक समानता और व्यावहारिकता का सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा। मेरे विचार से, जिस तरह स्फूर्ति और रुचि के साथ आगे बढ़ना जीवन है, उसी तरह काम .....।

पुष्पा : इट डिपेन्ड्स।

आनन्द : ..... और निर्भरता। इस मामले में तुम्हारी मेरे ऊपर या मेरी तुम्हारे ऊपर। यह केवल एक शब्द नहीं है जिसे तुम या मैं सस्तेपन के साथ इस्तेमाल करें या समझें। निर्भरता शब्द का प्रयोग करने का अर्थ है एक व्यक्ति की क्षमताओं को दूसरे व्यक्ति की क्षमताओं की तुलना में कम समझना।

पुष्पा : ओह, वैरी एक्सीलेन्ट।

आनन्द : ..... लेकिन साथ ही किसी भी तन्त्र में काम तभी हो पाता है जब दूसरों के साथ तालमेल बैठाते हुए अपने व्यक्तित्व को बचाकर रखा जाये।

पुष्पा : यदि बचाकर रखा जा सके।

आनन्द : ..... यहाँ हम दो हैं। हमारे यहाँ काम के दो अलग-अलग तन्त्र हैं। एक परिवार और दूसरा कोई-कलंक।

पुष्पा : हूँ।

आनन्द : और यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से बताना चाहता हूँ कि इन सब बातों के बावजूद मुझमें एक कमज़ोरी है। मैं किसी

के ऊपर निर्भर होना पसन्द नहीं करता हूँ और न यह पसन्द करता हूँ कि कोई मेरे ऊपर निर्भर रहे। मेरी दृष्टि में यह अन्ततः गुलामी या स्वार्थ है। स्वार्थ को बर्दाश्त न कर पाने के कारण ही मैं किसी से प्यार या दोस्ती नहीं कर सका हूँ और न किसी ने मुझे अपने प्यार या दोस्ती का पात्र बनाया है।

पुष्पा : लोग आजकल काफ़ी सीमा तक स्वार्थी नज़र आते हैं। होना भी चाहिये, अपने लाभ के लिये ..... ख़ैर।

आनन्द : अन्त में वह बात, जिसकी ओर तुमने बीच में इशारा किया था .....।

पुष्पा : लेकिन अब तो कई बातों के ढेर हैं, डॉक्टर।

आनन्द : पहले मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दूँ।

पुष्पा : मैंने प्रश्न नहीं उठाया था, केवल .....।

आनन्द : मेरी कही हुई बातों का तुम्हें व्यावहारिक रूप कहाँ दिखाई देता है? व्यावहारिक रास्ता कहाँ है?

पुष्पा : एक बात यह है, लेकिन आनन्द **(मानो वह पूर्वकालीन डॉक्टर की स्थिति से लौट आई हो)** आनन्द, मैं इस खेल से थक गई हूँ। प्लीज़ बन्द करो।

आनन्द : तुम्हें डॉक्टर के व्यावहारिक रूप का उत्तर चाहिये, डॉक्टर पुष्पा।

पुष्पा : **(बेहद थकी हुई, फोल्डिंग कुर्सी से उठ जाती है)** लो, मैंने वह कुर्सी छोड़ दी। अब मैं डॉक्टर पुष्पा नहीं हूँ।

आनन्द : लेकिन सब कुछ अधूरा छोड़कर तुम कैसे उठ सकती हो? तुम्हें इसे पूरा करना चाहिये।

पुष्पा : ज़रूरी नहीं है कि शुरू किया गया हर खेल मैं पूरा खेलूँ। फिर यह खेल तुमने चालाकी से शुरू कर दिया था वरना मैं इसमें शामिल नहीं होती। **(मौन)** अब?

आनन्द : अब! मतलब?

पुष्पा : **(पाँवों से ज़मीन को जाँचते हुए)** ज़मीन गीली लग रही है, वैसी ही जैसी बरसात के बाद होती है। **(पुष्पा दोनों हाथों की दो-दो अंगुलियाँ रखकर आँखें बन्द करती है। एक क़दम आगे बढ़ाकर दूसरा उससे मिलाती है।)** एम आइ आउट?

आनन्द : **(ध्यानपूर्वक पुष्पा के पावों को देखने के बाद इस तरह जैसे पकड़ लिया हो।)** आउट! आउट!!

पुष्पा : **(आँखों पर रखी अंगुलियाँ हटाकर पाँवों की तरफ़ देखती है।)** ओह आउट। थोड़ी देर तो चलाना चाहिये था, इस तरह आउट नहीं करना चाहिये था।

आनन्द : मैं क्या कर सकता था? तुम आउट हो गईं।

पुष्पा : **(हारकर)** अब?

आनन्द : अब! मतलब?

पुष्पा : **(मौन रहकर)** जब तक दूसरा खेल शुरू करें, तब तक अन्तराल धोखा लगता है।

आनन्द : चैन-खिलाड़ी लगती हो।

पुष्पा : कभी-कभी बाहर वाले खेल में डूब जाती हूँ और इस बीच के अन्तराल में अन्दर धोखा खाती रहती हूँ।

आनन्द : यहाँ ऐसा कुछ महसूस नहीं करना है तुम्हें और मुझे।

पुष्पा : तुम बार-बार उपदेश प्रसारित कर रहे हो।

आनन्द : मैंने शुरुआत की थी। तुमने इस खेल को अधूरा छोड़ दिया। दूसरों के खेल हैं, दूसरों से खेलते हैं। यही खेल बाक़ी बचे हैं। अपने खेल समाप्त हो गये।

पुष्पा : हमें दूसरों से कोई मतलब नहीं है।

आनन्द : और जो हमारे थे, पता नहीं क्यों ऐसा लगता है, हमारे नहीं थे।

पुष्पा : हम वहम पाल रहे हैं कि वे थे।

आनन्द : तुम मेरा समर्थन क्यों कर रही हो?

पुष्पा : मैंने हर बात में तुम्हारा समर्थन किया है, शुरू से। अब तुम उसके बुरी तरह अभ्यस्त हो चुके हो।

आनन्द : चाय को तुमने छाना और मैंने प्यालों में डाला, वहीं तक। बुरी बात है। यह आदत बीमारी बन जायेगी।

पुष्पा : बीमारी नासूर बन चुकी है और .....।

आनन्द : बहुत बुरी है। अब तुम किसी भी बात में मेरा समर्थन नहीं करोगी। प्रामिज़ मी।

पुष्पा : ख़ैर, प्रॉमिज़।

आनन्द : हम किसी भी ऐसे खेल को जन्म नहीं दे सके हैं जिसने रुचि या उत्सुकता पैदा की हो।

पुष्पा : तुम नहीं जानते, तुम तनाव बढ़ा रहे हो। तुम गम्भीर हो रहे हो।

आनन्द : किसी भी तरह, हम कुछ कर तो रहे हैं।

पुष्पा : बिज़ी हैं– अकारण।

आनन्द : अननेसेसरी वी आर।

पुष्पा : डॉक्टर, यह क्या कह रहे हो? तुम जान–बूझकर इस वाक्य के अन्त में बिज़ी शब्द नहीं जोड़ रहे हो। तुम्हें जोड़ना चाहिये।

आनन्द : अन्तर नहीं पड़ेगा।

पुष्पा : ऐसा कुछ न बोलना है और न महसूस करना है।

आनन्द : तुम एक साथ बता दो कि क्या–क्या महसूस नहीं करना है।

पुष्पा : शुरू से तुम कहते आये हो कि ऐसा कुछ .....।

आनन्द : बोलना नहीं है, महसूस करना नहीं है, लेकिन .....।

पुष्पा : यह पिकनिक स्पॉट है।

आनन्द : मगर यह तो अपने आप है।

पुष्पा : मेरे साथ भी यही तकलीफ़ है। लेकिन तुम ..... तुम्हें बिज़ी शब्द जोड़ना चाहिये।

आनन्द : **(सूखे गले से)** अननेसेसरिली वी आर बिज़ी। **(मौन)** आज की तरह, किसी अवसर पर, आज यहाँ घटित सब कुछ, किसी दूसरी जगह किसी दूसरे अवसर पर, दोहरायेंगे। आज की कोई रुचि और उत्सुकता .....।

पुष्पा : **(क्रोधपूर्वक)** तुम गम्भीर हो गये हो आनन्द! मैं यहाँ तुम्हें अकेला छोड़कर चली जाऊँगी।

आनन्द : तुम जाओ। यहाँ आसपास कितना शोर है। तुम जाओ। इन सब में शामिल हो जाओ तुम। कई खेल खेल सकोगी उनके साथ।

पुष्पा : हमने तय किया था आनन्द ..... **(चिढ़ाकर)** और तुमने वादा किया था कि गम्भीर नहीं होंगे। यह बात तुम भूल गये हो।

आनन्द : तुम्हें याद है, इसलिये तुम जाओ।

पुष्पा : तुम्हारा यही रवैया है तो मैं जाती हूँ। लौटकर नहीं आऊँगी। **(मौन। पुष्पा वहीं है।)**

पुष्पा : जाऊँ?

आनन्द : जाओ।

पुष्पा : तुम चल रहे हो?

आनन्द : तुम हो आओ।

पुष्पा : मैं चलने के लिए पूछ रही हूँ।

आनन्द : मैं जाने के लिये कह रहा हूँ और फिर तुम आज पूछ क्यों रही हो?

पुष्पा : मैं घर चलने के लिये पूछ रही हूँ।

आनन्द : नहीं।

पुष्पा : अस्पताल?

आनन्द : नहीं।

पुष्पा : दफ़्तर?

आनन्द : नहीं। इन सब स्थानों से भागकर हम यहाँ आये हैं।

पुष्पा : और यहाँ क्या है? ..... चलें?

आनन्द : चलो। घर, अस्पताल, दफ़्तर ..... चलो।

पुष्पा : कहाँ?

आनन्द : कहीं भी ..... जहन्नुम में। **(मौन। सहज होकर।)** हम दोनों के बीच विवाह के बाद जो खेल चल रहा है, आज की पिकनिक उसका हिस्सा बनेगी?

पुष्पा : मुझे ऐसा नहीं लगता। तुम क्या सोचते हो?

आनन्द : **(दोहराते हुए)** हम दोनों के बीच विवाह के बाद जो खेल चल रहा है .....।

पुष्पा : ओफ़ ओ आनन्द, इस तरह की भाषा मेरी समझ में नहीं आती है।

आनन्द : मैं तुमसे गम्भीरतापूर्वक सोचने का अनुरोध करता हूँ।

पुष्पा : यहाँ मैं इस भाषा में बात नहीं करना चाहती।

आनन्द : मेरे केवल एक प्रश्न का उत्तर दो, प्लीज़।

पुष्पा : मुझे मालूम है, तुम क्या पूछना चाहते हो और क्यों पूछना चाहते हो। इसलिये तुम इस बात को छोड़ो। मुझे यहाँ न यह भाषा चाहिये और न इसका व्याकरण।

आनन्द : मगर तुम्हें क्या पता .....।

पुष्पा : ओहो! अब तुम कहोगे कि मैं तुम्हारे भीतर पैदा होने वाले दबावों को ज़बरदस्ती, बलपूर्वक नहीं ज़बरदस्ती! रोक रही हूँ।

आनन्द : भीतर के दबाव बाहर आते हैं तो आने दो।

ष्पा : हाँ, लेकिन आनन्द तुम समझते क्यों नहीं हो कि वे दबाव केवल तुम्हारे नहीं हैं। इसीलिये मैं कहती हूँ कि मुझे मालूम है। तुम समझने की कोशिश करो।

आनन्द : तुम उनसे दूर भाग रही हो।

ष्पा : कभी-कभी तुम दूसरों को पागल बना देते हो।

आनन्द : आख़िर तुम दूर क्यों भागना .....।

ष्पा : **(गुस्से से काँपते हुए)** आनन्द, भीतर के दबावों में जीवन तलाशते हुए तुम उन्हें घसीट लाते हो, उनकी भाषा और व्याकरण बतियाते हुए विश्लेषण करते हो। इस दौरान तुम भूल जाते हो कि ज़िन्दगी के भीतरी दबावों और पिकनिक स्पॉट में .....। कम से कम मुझे कोई तालमेल दिखाई नहीं देता। होना भी क्यों चाहिए?

आनन्द : लेकिन दबाव कहीं भी बाहर .....।

ष्पा : तुम कैसे व्यक्ति हो? यहाँ आकर तुम अस्पताल, दफ़्तर, घर ..... जहन्नुम की बातें दोहरा रहे हो। इन सबको दफ़ा करो। और फिर इन बातों पर दिमाग़ हम क्यों ख़राब करें?

ानन्द : यह सब हमारा है, हमें इस पर विचार करना चाहिए।

ष्पा : रबिश। क्या सोचना चाहिये? हमें ही क्यों, किसी को भी नहीं सोचना चाहिये। और फिर सोचना है तो चलो उठो, हम अस्पताल, दफ़्तर, घर, जहन्नुम में चलते हैं। वहाँ सोचेंगे कि क्या करना चाहिये। उठो, चलो आनन्द, चलो। मैं अब एक पल के लिये भी यहाँ रुकना नहीं चाहती। **(मौन)**

नन्द : सब बेकार है।

पा : तो फिर **(ज़ोर से हँसती है)** तो फिर कुछ भी कैसे कर सकते हो, आनन्द, नथिंग। वी आर आक्यूपाइड विथ नथिंगनेस। हम कर रहे हैं, नथिंग। और फिर आनन्द, करके छोड़ दें तो डैम फ्री हो जायेंगे, एम्पटी फ्री। तुम शब्द बताओ न आनन्द, कौनसे फ्री हो जायेंगे?

आनन्द : तब हमें नथिंगनेस से आक्यूपाइड रहना चाहिये। विवाह?

पुष्पा : देखो आनन्द, मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से बता दूँ कि तुम्हारा लहजा ठीक नहीं है, इसे बदलो।

आनन्द : **(आधा गम्भीर, आधा परवाह न होने का भाव)** विवाह?

पुष्पा : नहीं, और बदलो।

आनन्द : तुम मुझे व्याकरण सिखा रही हो।

पुष्पा : फिर याद किया इसे। बिल्कुल .....।

आनन्द : **(ज़ोर से हँसते हुए, परवाह न होने के अन्दाज़ में)** विवाह!

पुष्पा : यह हुआ न कुछ। यही तो चाहती थी मैं। शुरुआत, रुचि, क्षमता, यहाँ तक कि तनाव भी बाक़ी बचा है क्या? उठाओ दूसरा शब्द, कम ऑन

आनन्द : प्यार!

पुष्पा : इसे छोड़ो। **(दोनों एक दूसरे का चेहरा देखते हैं)** हाँ, छोड़ दो इसे दूसरा शब्द .....।

आनन्द : सेक्स?

पुष्पा : हमारे बीच कोई सम्बन्ध तो है, सेक्स के कारण।

आनन्द : क्या सम्बन्ध है? वही जो रूटीन है।

पुष्पा : वेल डन, ब्वाय। तुमसे प्यार करना चाहिये, मुझे प्यार दो।

आनन्द : यह कैसी माँग है कि जिससे शादी करो, उसी से प्यार भी करो।

पुष्पा : अगेन वेल डन, सर। अपने अन्दर बैठे ऐसे ख़ुशनुमा आदमी को तु कहाँ छिपा देते हो?

आनन्द : **(गर्वपूर्वक)** भीतर के दबावों में। पुष्पा, तुमने मुझे ब्वाय से सर बन दिया।

पुष्पा : माइ ब्वाय सर।

आनन्द : तुम मुझे हर जगह ब्वाय ही रखती हो।

पुष्पा : मुझे मालूम है, तुम क्या कहना चाहते हो। मगर मैं क्या करूँ आनन्द, अस्पताल से फुर्सत मिले तो मैं स्वयं भोजन तैयार करके अपने हाथों से तुम्हें खिलाऊँ और मर्द बनाऊँ।

आनन्द : मर्दों का पेट बाहर निकालने में और उसे बेढ़ब बनाने में बड़ा हाथ पत्नियों का होता है। ऐसा सौभाग्य मुझे नहीं मिला है।

पुष्पा : और पेट बाहर न निकलने से मर्द नहीं, तुम .....।

आनन्द : फिर बना दिया ब्वाय।

पुष्पा : माइ ब्वाय हज़बैन्ड।

आनन्द : जहाँ तुम रहोगी, मैं कुछ नहीं बन सकूँगा, कुछ नहीं कर सकूँगा।

पुष्पा : तो हमने न कुछ शुरू किया था, न कुछ शुरू करेंगे। और फिर हम उससे पहले ही सब कुछ समाप्त कर चुके हैं।

(मौन। दाहिनी ओर देखकर) वह देखो, डॉक्टर अपनी प्रेमिका से चिपक गया है।

आनन्द : नया खिलाड़ी होगा।

पुष्पा : दोहराता हो तो। आओ, तुम मुझे चूम लो।

आनन्द : काम या खेल काफ़ी सस्ता लगता है, अगर किया जाये तो।

पुष्पा : सस्ता या महँगा क्या होता है ? **(आनन्द को चूमकर)** मन हो तो कर लेना चाहिये।

आनन्द : बस। अब खेल शुरू करो।

पुष्पा : खेल! खेल!! खेल!!! मेरे तो कान ही पक गये हैं। अब यह शब्द काम में मत लाना, कहीं भी। मैंने क्या कहा, आनन्द?

आनन्द : शब्द कहीं भी काम में नहीं लाना है। कान पक गये।

पुष्पा : **(आसपास देखकर)** अब हवा कुछ गरम हो गई है। सुबह से काफ़ी

ठण्डी हवा चल रही थी। धीरे-धीरे शरीर में सुस्ती भरती जा रही है। सोने का मन हो रहा है।

आनन्द : बहुत अच्छा, सो जाओ।

पुष्पा : हरियाली तो काफ़ी है मगर लोगों ने जहाँ-तहाँ गन्दगी फैला रखी है। जगह ख़ूबसूरत है। इस शहर में यह एक ख़ूबसूरत जगह है। लेकिन अच्छी क्यों नहीं लगती? सूरत की रोशनी में पानी रंग बदल रहा है। पानी हमारी तरह है। ..... तुम कहाँ चले गये हो? आ..... आ..... आनन्द। आओ, मेरे साथ आओ। देखो, मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई हूँ। सूरज, पानी, हरियाली, शहर, ख़ूबसूरती, हवा, लोग, तुम सुन नहीं रहे हो क्या? तुम कर क्या रहे हो?

आनन्द : **(बेख़बर)** नहीं।

पुष्पा : नहीं क्या?

आनन्द : कुछ नहीं।

पुष्पा : इतना रूखापन!

आनन्द : नहीं।

पुष्पा : नहीं क्या? इतनी नीरसता!

आनन्द : कुछ नहीं।

पुष्पा : क्या सोच रहे हो?

आनन्द : **(गोया वापस लौटा हो)** अचानक एक बात याद आई और मैं चला गया। छोड़ो, मत पूछो। फालतू तुम्हें कहना पड़ेगा कि मैं गम्भीर, रूखा या नीरस हो गया हूँ। लेकिन हम दोनों में से कोई एक इस तरह अचानक कहीं चला क्यों जाता है?

पुष्पा : तो तुम अपने कारखाने के दफ़्तर में पहुँच गये थे? मुझे तुम टोकते रहते हो कि मैं बार-बार अपने मरीज़ों के पास अस्पताल चली जाती हूँ। अब तुम वापस आ गये हो न? **(स्थिति बदलकर)** एक बार नाइट राउण्ड पर निकली थी .....।

आनन्द : तुम फिर अस्पताल पहुँच गईं। तुमने अभी अपने मरीज़ों, डॉक्टरों, नर्सों और अस्पताल के बारे में बताना बन्द नहीं किया है। मेरी रुचि बिल्कुल नहीं है इसमें। जिस तरह मेरे पेशे की बातें सुन-सुनकर तुम परेशान हो गई हो उसी तरह .....।

पुष्पा : मुझे याद है, हमें अपने-अपने पेशे के बारे में बात नहीं करनी है।

आनन्द : व्यक्तिगत, घरेलू या सामाजिक समस्यायें भी यहाँ सुननी और सुनानी नहीं हैं।

पुष्पा : मुझे याद है, भई। लेकिन यह वह नहीं है।

आनन्द : क्या?

पुष्पा : जो शब्द हमें काम में नहीं लेना है।

आनन्द : ठीक है ..... लेकिन नहीं कैसे है?

पुष्पा : मैं रात को स्पेशल वार्ड में राउण्ड पर थी। इस वार्ड में एक कमरे में केवल एक मरीज़ होता है।

आनन्द : तुम मरीज़ के पास पहुँच गईं।

पुष्पा : एक मरीज़, हार्ट अटैक का मरीज़ .....।

आनन्द : वहाँ पहुँचकर तुम मरीज़ की तरफ़ देखकर मुस्कराती हो। "कैसे हो" पूछकर, एक हाथ में उसकी कलाई पकड़कर दूसरे हाथ में बंधी घड़ी देखती हो। फिर जीभ बाहर निकलवाकर देखती हो। स्टेथेस्कोप से छाती देखकर पूछती हो, पेशाब और टट्टी कितनी बार हुई? टट्टी में ख़ून आया या नहीं? भोजन में क्या लिया? कहती हो, ये गोलियाँ बदलकर दूसरी लिख रही हूँ। कल से खाने में अमुक चीज़ें लेना। केस पेपर्स उठाकर चार्ट देखते हुए, उनके ऊपर इलाज लिखती जाती हो। विशेष परिवर्तन न करना हो तो "कन्टीन्यू आल" लिखती हो। जाते-जाते दो हिदायतें देती हो, "भोजन में चिकनाई नहीं होनी चाहिये। हार्ट अटैक के मरीज़ के लिये फैट्स हानिकारक हैं। बिस्तर से अभी हिलना नहीं है। हाँ टट्टी के लिये बिस्तर पर कमोड .....।"

पुष्पा : शटअप आनन्द। इट इज़ टू मच फ़ॉर ए पेशैन्ट।

आनन्द : परसों डाक साहब राउण्ड पर आयेंगे .....।

पुष्पा : प्लीज़, तुम अपना मुँह बन्द रखो।

आनन्द : **(थक, हारकर)** ओह, कितना थकाता है पेशा। ड्यूटी। राउण्ड।

पुष्पा : तुम अब प्रारम्भिक स्तर पर मरीज़ को देखने योग्य डॉक्टर हो गये हो।

आनन्द : मैं एक राउण्ड में ही थक गया।

पुष्पा : मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि हमें एक-दूसरे के पेशे में दख़लअन्दाज़ी नहीं करनी चाहिये। तुम्हें याद होगा, मैं कुछ कर रही थी और तुमने बीच में .....।

आनन्द : लेकिन तुम अस्पताल चली गई थीं और तुमने कहा था कि यह वह नहीं है।

पुष्पा : मैं नहीं तुम चले गये थे, मेरे हार्ट अटैक वाले मरीज़ के पास। मुझे लगा, मरीज़ अभी मरा। तुम मेरे मरीज़ों का इलाज करोगे तो मेरे पेशे की प्रतिष्ठा गिराओगे।

आनन्द : तुम्हारी या पेशे की?

पुष्पा : मेरी भी डिग्री छिन जायेगी। फिर तुम्हारे घर में रसोई सम्भालनी होगी, बच्चे पैदा करने होंगे।

आनन्द : डोमेस्टिक वाइफ़। वैसे तुमने कई केस बिगाड़े हैं, फिर भी तुम्हारी डिग्री क्यों नहीं छीनी गई? तुम्हारा घर वाला केस भी बिगड़ा हुआ है। वहाँ भी तुम काम की नहीं हो।

पुष्पा : कुछ करने के लिये मुझे वापस आने दो, आनन्द।

आनन्द : यू आर वेलकम, डॉक्टर पी।

पुष्पा : एक मरीज़। स्पेशल वार्ड में। जहाँ एक कमरे में एक मरीज़ होता है।

आनन्द : इन्टरेस्टिंग। एक मरीज़ किसी अमीर या बड़े घराने में से आ रहा है।

पुष्पा : वह एक महीना तीन दिन अस्पताल में रह चुका था और उसे दो तीन दिनों में छुट्टी मिलने वाली थी। केस पेपर्स में से हिस्ट्री पढ़ते हुए जानकारी मिली कि उसे हार्ट अटैक पहली बार हुआ था।

आनन्द : मतलब, यह बात तुम्हें इतने दिनों के बाद पता लगी थी।

पुष्पा : नहीं। वह दूसरी यूनिट का मरीज़ था और उस यूनिट का हाउसमैन उस दिन अन्तिम शो में अपनी गर्ल फ्रेण्ड के साथ फ़िल्म देखने गया था।

आनन्द : तुम उसके स्थान पर गई थीं।

पुष्पा : मरीज़ को पता लगा कि राउण्ड पर हूँ तो बुलवा लिया। अटैक का कारण कोई सदमा और अधिक सोचने की आदत। वह एक सुडौल और ख़ूबसूरत नवयुवक था।

आनन्द : वैरी हैन्डसम चैप।

पुष्पा : वैरी हैन्डसम।

आनन्द : यह भी उसकी केस हिस्ट्री में लिखा था?

पुष्पा : नहीं, यह मेरी ओर से था। किसी मशीन पार्ट्स बनाने वाली अच्छी कम्पनी में वह सेल्स रिप्रजेन्टेटिव था।

आनन्द : उस सूअर की वाणी बहुत मधुर और आकर्षक होगी।

पुष्पा : दो बोलों में ही अपना बना ले। चाहते हुए भी वहाँ से जाने की इच्छा न हो। किसी न किसी बहाने या किसी काम को लम्बा खींचकर वहाँ रहने, ठहरने या बात करने के लिये कोई भी मजबूर हो जाये।

आनन्द : ऐसा मरीज़ निश्चय ही लम्बे समय तक बीमार रहेगा।

पुष्पा : क्यों, ऐसा क्यों?

आनन्द : तुम्हारे हाथ में जो होगा, बेचारा .....।

पुष्पा : तुम शरारत कर रहे हो।

आनन्द : मैं कर रहा हूँ। तुम कर रही थीं शरारत मरीज़ से। तुम ख़ूबसूरत और मधुर सूअर के पास गई थीं उस रात।

पुष्पा : वह लेटा हुआ था। सोने की गोली लेने के बावजूद उसे नींद नहीं आ
थी।

आनन्द : जिसका इलाज तुम करो, उसका सोने की गोलियाँ हज़म कर जाना भ
सम्भव है।

पुष्पा : उसके साथ थोड़ी बातचीत करके मैं वापिस आकर वार्ड में अपने कैबि
में बैठ गई। वह बार-बार बुलवाकर कुछ बताना चाहता था, किन्
सामने पड़ते ही पता नहीं क्यों और कोई बात पूछकर या बताकर कष
के लिये धन्यवाद दे देता था।

आनन्द : वैरी कन्फ्यूज़्ड मैन।

पुष्पा : अन्त में मैंने उससे पूछा कि आख़िर बात क्या है?

आनन्द : क्यों नहीं? डॉक्टर का कर्तव्य और सामने ख़ूबसूरत .....।

पुष्पा : नहीं, ऐसे ही इच्छा हुई मानवता के नाते।

आनन्द : स्त्री-हृदय, आकर्षित हो गया।

पुष्पा : उसने पहले विस्तार से, अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक अपनी बात बताई
इसके बाद लगातार सोचना शुरू कर दिया। मुझे उसकी बात और सोच
की आदत से हार्ट अटैक का कारण मिल गया।

आनन्द : आख़िर तुमने अपने पेशे को याद रखा। तुमने कहा, तुमने उससे स
कुछ मानवता के नाते पूछा था।

पुष्पा : बिल्कुल।

आनन्द : तुमने मानवता के नाते कुछ नहीं पूछा था।

पुष्पा : तुम्हारा मतलब है, मैं यह सब किसी ओर कारण से कर रही थी?

आनन्द : स्पष्ट है। तुमने केवल अपनी पसन्द के कारण उससे प्रश्न पूछा। तुम्हा
रुचि उसकी बात में कम, उसमें ज़्यादा थी।

पुष्पा : तुम्हें ईर्ष्या हो रही है।

आनन्द : मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। पहले तुम्हारे मन में मानवता के बदले निजी लालच था। धीरे-धीरे वह भी नहीं रहा और मरीज़ डॉक्टर के सम्बन्धों में बदल गया।

पुष्पा : मुझे मालूम है, बातों को पकड़ने की क्षमता तुम में है। लेकिन यह विश्लेषण तुम ईर्ष्यावश कर रहे हो।

आनन्द : दूसरी बात। तुमने कहा, उसके मन को कोई चोट पहुँची थी।

पुष्पा : हाँ, सदमा।

आनन्द : तुमने एकाएक बात समाप्त कर दी।

पुष्पा : तुम टाँग अड़ाने से बाज़ आओ तब न। तुम हो कि .....। मैं सारी की सारी बात बता रही हूँ।

आनन्द : **(मुँह बिगाड़कर)** अब मज़ा निकल गया।

पुष्पा : पहले मुझे कहने दो, इसके बाद हम उसे करेंगे।

आनन्द : मतलब तुम डाइरेक्टर की तरह पहले दृश्य बताकर बाद में अभिनय कराना चाहती हो। लेकिन मुझे कहानी का पता लग गया है। बेचारे ख़ूबसूरत और मधुर सेल्स रिप्रज़ेन्टेटिव को सदमा भी लगा तो एक सीधी-सादी कहानी से।

पुष्पा : मुख्य बात यह है कि देयर आर नो कॉम्प्लीकेशन्स।

आनन्द : बेचारा! इस पर खेल असम्भव है।

पुष्पा : सम्भव है। तुम शुरुआत करने दो। कहानी से ज़्यादा प्रस्तुतीकरण, मेरा मतलब है, अभिनय करके दिखाना महत्वपूर्ण है। मनमोहक। वह केवल चोट खाया हुआ था। कौनसी चोट? न मैंने बताया था और न इस तरह बताने वाली हूँ। सबसे बड़ी बात यह है कि वह भावनात्मक नहीं है।

आनन्द : चोट शब्द ही भावनात्मक है।

पुष्पा : सम्भवतः मैं सही शब्द का प्रयोग नहीं कर रही हूँ। दरअसल चोट से मेरा आशय परेशानी से है। परेशानी .....।

आनन्द : कुछ भी हो, यह कहानी जिसे तुम अभिनय करके प्रस्तुत करना चाहती हो, उत्साहविहीन है। तुम ऐसा खेल शुरू करो जिसमें मैं, डॉक्टर और उसकी प्रेमिका भी शामिल हो सकें ..... बीच में कहीं तुम ईर्ष्या की चर्चा कर रही थीं।

पुष्पा : बीच में आनन्द, तुमने ऐसा महसूस किया था। मैं जानना चाहती थी।

आनन्द : तुमने जान लिया?

पुष्पा : अब ज़रूरत नहीं है।

आनन्द : हूँ! ईर्ष्या! डॉक्टर पुष्पा की एक सेल्स रिप्रज़ेन्टेटिव में रुचि, इस कारण आनन्द ईर्ष्यालु! तुम्हारे पास अब भी कई मेडीकल रिप्रज़ेन्टेटिव आते हैं। क्या उनमें से कुछ ख़ूबसूरत, मधुर या रोचक नहीं होते हैं? सच तो यह है कि उनमें से हर एक मुझसे बेहतर होगा .....।

पुष्पा : और मेरी रुचि उनमें से न जाने कितनों में होगी। एक-एक के साथ अलग और ख़ूबसूरत सम्बन्ध होंगे। आनन्द, तुमने ईर्ष्या की हो या न की हो लेकिन ऐसी स्थिति में तुम कर क्या सकते हो?

आनन्द : क्या किया जा सकता है? कुछ भी नहीं। **(मौन)**

पुष्पा : मैंने तुमसे पहले ही कहा था आनन्द, कि यह जानने में रुचि नहीं है। शुरू में हम लोग इस मामले में ठण्डे थे, मगर अब (व्यंग्यपूर्वक) लगता है धीरे-धीरे तुम ईर्ष्यालु होते जा रहे हो। तुम मेरे ऊपर अब सन्देह कर सकते हो।

आनन्द : परवाह किसे है?

पुष्पा : मैं उनके साथ भाग सकती हूँ।

आनन्द : ख़ुशी से।

पुष्पा : मैं उनके साथ कुछ भी कर सकती हूँ।

आनन्द : प्लीज़, जो करना चाहो करो, मुझे परेशान मत करो।

पुष्पा : तुमने कहा, तुम परवाह नहीं करते।

आनन्द : तुम जाना चाहती हो, जा सकती हो। कुछ भी करना चाहती हो, कर सकती हो। यह निर्भर करता है केवल मेरे और तुम्हारे व्यवहार के ऊपर।

पुष्पा : तो तुम मुझे रोकोगे नहीं।

आनन्द : बिल्कुल नहीं।

पुष्पा : ऐसा भी नहीं कहोगे कि तुम्हें नहीं जाना चाहिये पुष्पा।

आनन्द : मैं भावुक नहीं बनूँगा।

पुष्पा : तुम इतने ठण्डे रह पाओगे?

आनन्द : फिर भी मुझे ईर्ष्या नहीं होगी।

पुष्पा : मैं नहीं जाती।

आनन्द : प्रश्न ''अब'' का नहीं ''तब'' का है। तुम्हें तभी सोचना होगा, जाना चाहिये या नहीं। तुम जा सकती हो।

पुष्पा : तुम्हारा उत्तर मुझे मिल गया है। स्थिति के अनुसार उस समय मैं सोच लूँगी।

(मौन। एक हाथ में एक और दूसरे हाथ में दूसरी छोटी फोल्डिंग कुर्सी उठाकर आनन्द पुष्पा के पास आकर खड़ा हो जाता है। पुष्पा के चेहरे की तरफ़ देखता है। आनन्द उसे दोनों छोटी फोल्डिंग कुर्सियाँ दिखाता है। पुष्पा मुँह बिगाड़कर दर्शकों की ओर पीठ करके बाईं ओर खड़ी हो जाती है। आनन्द कुर्सियों को आमने-सामने रखकर, खड़ा होकर उन्हें देखने के बाद पुष्पा को देखता है। कुर्सियों की स्थिति बदलकर फिर पुष्पा को देखता है। कुर्सियों की स्थिति बदलकर एक पर बैठ जाता है। पुष्पा मुड़कर उसे देखती है। उसे देखते हुए आनन्द दूसरी कुर्सी पर बैठने का इशारा करता है। पुष्पा सिर हिलाकर मना करती है। आनन्द खड़ा होकर दूसरी कुर्सी पर बैठता है। पुष्पा घूमकर आनन्द के सामने आती है। आनन्द फिर बैठने का इशारा करता है।)

पुष्पा : अधूरा छोड़ा हुआ खेल मुझे फिर शुरू नहीं करना है।

आनन्द : पूरा कर लें।

पुष्पा : तुम जानते हो, मैंने खेल बीच में छोड़ा था।

आनन्द : कम ऑन। तुम्हारे लिये कुर्सी ख़ाली है। बैठो।

पुष्पा : ख़ाली रहने दो। इस ख़ाली जगह को मैं कभी नहीं भरूँगी, हरगिज़ नहीं।

आनन्द : **(थोड़ा ज़ोर से)** तुम ज़िद कर रही हो, बेवजह।

पुष्पा : तुम कुछ भी समझ लो।

आनन्द : कुर्सी .....।

पुष्पा : **(लगभग चीख़ते हुए)** कहा न, नहीं बैठूँगी।

आनन्द : तुम्हें बैठना पड़ेगा। मेरी बात तुम्हें माननी ही होगी।

पुष्पा : तुम अपने बोलने का अन्दाज़ ठीक करो।

आनन्द : **(क्रोधपूर्वक)** तुम बेवजह ज़िद कर रही हो और यहाँ ..... अभी ..... अब .....।

पुष्पा : हाँ, हाँ, मैं ज़िद कर रही हूँ और यहाँ ..... अब मैं कुछ नहीं करूँगी।

आनन्द : तुम्हारी इच्छा। **(आनन्द कुर्सी से उठकर घूमने लगता है। पुष्पा उसे देखती रहती है। मौन। पुष्पा ढीले शरीर से एक कुर्सी पर बैठती है। मौन। आनन्द पुष्पा को देखता है। फिर वह भी ढीले शरीर से दूसरी कुर्सी पर बैठ जाता है।)** मेरी कही हुई बात पर तुम्हें व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये। मैं समझता हूँ, प्रश्न मेरे प्रति तुम्हारे व्यावहारिक रूप को लेकर है।

पुष्पा : हाँ, यह पहली बात हुई।

आनन्द : वेल, **(थोड़ा ठहरकर)** तुम्हें मालूम है कि हम दोनों एक ही अस्पताल में प्रेक्टिस कर रहे हैं, कि हम अपने सीनियर्स के साथ किस तरह पेश आते हैं, कि हम यस मैन की तरह बॉस के चारों ओर हाँफते-घूमते

रहते हैं। राइट फ्रॉम स्टूडेन्टशिप। तुम्हें यह भी मालूम हो गया होगा कि इस तरह की व्यवस्था से मेरा तालमेल कभी नहीं बैठ पाया। इसलिये इस व्यवस्था से दूर भागकर मैंने अपने सामने अलग किन्तु स्पष्ट वे ऑफ लाइफ़ के लिए गाइडलाइन्स रखी हैं, क्योंकि इस समूचे सोच को मैं अपने व्यावहारिक ढंग से एडॉप्ट, टेकिल या हैण्डिल कर रहा हूँ, इसलिये अपने आपके लिए मैं अधिकतम व्यावहारिक हूँ।

पुष्पा : अब कुछ गम्भीरता आई है। मैं समझती हूँ, व्यावहारिक को हमेशा समाज और व्यवस्था की दृष्टि से तौला जाता है। तुमने कहा, समाज की अपेक्षा के अनुरूप चलना तुम्हें पसन्द नहीं है या वर्तमान व्यवस्था के साथ शुरू से तुम्हारा तालमेल नहीं बैठ पाया है। व्यावहारिकता का सम्बन्ध समाज और व्यवस्था के साथ निर्वाह से है। जब तक तुम इन दोनों के बीच हो, तब तक किसी न किसी तरह निभा रहे हो। लेकिन तुम .....।

आनन्द : ज़रूरी नहीं है .....।

पुष्पा : **(ज़ोर देकर)** अगर तुम्हारी नज़र में यह व्यावहारिकता है तो अलग बात है, किन्तु मैं तुम्हारे दिये हुए उत्तर को स्पष्ट रूप से समझ पा रही हूँ।

आनन्द : मैंने अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है, डॉक्टर।

पुष्पा : उत्तर मैंने अपने आप ही समझ लिया है।

आनन्द : तुम्हारे प्रश्न? एक-एक करके पूछो।

पुष्पा : अपनी रटी हुई स्पष्टता में तुम काफ़ी स्पष्ट थे।

आनन्द : तब भी?

पुष्पा : ख़ैर, मैं पूछती हूँ।

आनन्द : मुझे प्रसन्नता होगी, प्लीज़।

पुष्पा : मैं समझती हूँ, तुमने अपना सब कुछ कह दिया है।

आनन्द : लेकिन निर्णय लेने से पहले एकाध बात मुझे कहनी होगी।

पुष्पा : अच्छा रहेगा, अभी कह दो।

आनन्द : बातचीत के दौरान या किसी न किसी सन्दर्भ में कह दूँगा। लेकिन कहना ज़रूरी है।

पुष्पा : कहना अब इतना ज़रूरी नहीं है।

आनन्द : निर्णय उसी पर निर्भर करेगा।

पुष्पा : ठीक ऐसा नहीं है। उसके बिना भी निर्णय लिया जा सकता है। फिर कोई जल्दी नहीं है। सोचकर बाद में भी निर्णय सुनाया जा सकता है। **(मौन)** मैं एक छोटी-सी बात पूछना चाहती थी। तुम कहते हो कि तुम्हें किसी की किसी पर निर्भरता पसन्द नहीं है। लेकिन कुछ अवसरों पर कुछ बातों के एक-दूसरे पर निर्भर करने के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? मैं समझती हूँ, ऐसा होता है।

आनन्द : हाँ, होता है।

पुष्पा : इस प्रकार की निर्भरता को मैं पारस्परिक निर्भरता कहती हूँ, ठीक है?

आनन्द : गो ऑन।

पुष्पा : इजाज़त हो तो बहस को आगे बढ़ाऊँ ? हर एक शब्द का अपना महत्व है। हम दोनों किसी एक या दोनों व्यवस्थाओं अर्थात् परिवार और को-क्लिनिक में मिलकर काम करते हैं तो पारस्परिक निर्भरता उसके लिये की वर्ड होगा। इसके लिये ज़रूरी होगा कि तुम मुझे समझो और मैं तुम्हें समझूँ। तुम्हारे शब्दों में कहूँ तो आकलन केवल अपनी क्षमताओं का नहीं, दूसरों की क्षमताओं का भी करना चाहिये। प्रश्न योग्यताओं की पहचान का है। प्रशंसा भाव से व्यवस्था को चलाने, व्यवस्था में योग देने का यह अर्थ कतई नहीं होता कि एक, दूसरे के ऊपर निर्भर है। समझना यह चाहिये कि दोनों एक निश्चित व्यवस्था में योग दे रहे हैं। यह समझते ही पारस्परिक निर्भरता जैसे शब्द भी ज़हन से निकल जाते हैं। **(मौन)** अब पूछने के लिये या मुझे सुधारने के लिये तुम्हें काफ़ी सामग्री मिल गई होगी।

आनन्द : मैं अपनी बात को आगे बढ़ाऊँगा। किसी के ऊपर निर्भर न करने वाली मेरी कमज़ोरी को तुमने समझ लिया है। मेरी एक और कमज़ोरी है .....।

पुष्पा : कौनसी?

आनन्द : योग्यताओं की पहचान वाली बात। मैं अभी लड़की के स्वतंत्र व्यक्तित्व को भी स्वीकार नहीं कर सका हूँ, फिर चाहे वह मेरे अपने स्तर की ही क्यों न हो। इसलिये उसका काम, उसका कोई ऑपरेशन, मैं योग्यता की पहचान के रूप में नहीं, परनिर्भरता के रूप में स्वीकार करता हूँ।

पुष्पा : तुम शायद लड़की को अपने नीचे रखना चाहते हो।

आनन्द : शायद .....।

पुष्पा : नहीं, ऐसा ही है। उसे तुम नीचे रखना चाहते हो, जबकि लड़की लड़के के बराबर होती है।

आनन्द : शायद ..... **(मौन)** मेरे बारे में बहुत हो गया। अब कुछ तुम्हारे बारे में सुनना चाहूँगा।

पुष्पा : मेरे बारे में ज़रूरी या ख़ास कुछ नहीं है।

आनन्द : कुछ न कुछ ज़रूर होगा, भले ही संक्षिप्त हो।

पुष्पा : बताना, न बताना एक ही बात है। फिर उससे कोई अन्तर भी नहीं पड़ेगा।

आनन्द : तब भी ज़रूरी है।

पुष्पा : तो ठीक है। वैचारिक या व्यावहारिक स्तर पर मैं उतनी ही फारवर्ड या एडवान्स्ड हूँ जितनी आज की व्यवस्था और समाज है। यही मेरे लिये व्यावहारिकता है और यही जीवन। लेकिन इस मामले में मैं रिजिड नहीं हूँ।

आनन्द : कितना संक्षिप्त। कितना ख़ूबसूरत। **(मौन)** इसका मतलब यह हुआ कि प्रेम, फैशन, ज़िम्मेदारी, परिवार और समाज के बारे में तुम्हारे विचार विवाह, फ्री सेक्स, आदि जैसे होंगे! वही जो आज समाज के हैं।

पुष्पा : काफ़ी सीमा तक।

आनन्द : फ़्री सेक्स के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?

पुष्पा : **(सन्देह की नज़रों से देखकर)** मतलब?

आनन्द : मैं सोचता हूँ कि प्रश्न पूछने या एक–दूसरे को समझने की दृष्टि से हम संकोच न करें तो ज़्यादा ठीक होगा।

पुष्पा : वेल, साफ़ बात करनी ही है डॉक्टर, तो मैं कहना चाहूँगी कि कुछ प्रश्नों पर कुछ विशेष व्यक्तियों से बहस की जा सकती है जबकि कुछ प्रश्नों पर कभी बहस नहीं की जाती। कुछ प्रश्न तुम्हारे लिये ज़रूरी हो सकते हैं और कुछ प्रश्न मेरे लिये ज़रूरी हो सकते हैं। फिर भी मैं फ़्री सेक्स पर तुम्हारे साथ बहस कर सकती थी बशर्ते कि इस समय हम दूसरे मुद्दों पर बात करने के लिये न मिले होते।

आनन्द : लेकिन मेरी दृष्टि में इस प्रश्न का सम्बन्ध परिवार व्यवस्था से है।

पुष्पा : स्वतन्त्रता किसी भी व्यवस्था की दासी नहीं होती।

आनन्द : ठीक बात है। **(मौन)** तो हमें अन्तिम सीढ़ी पर पाँव रख देना चाहिये।

पुष्पा : बातों में? ठीक है। लगभग सब बातें पूरी हो चुकी हैं।

आनन्द : तुम्हारा ..... तुम शादी को किस रूप में देखती हो?

पुष्पा : तुम्हारा मतलब दृष्टिकोण से है?

आनन्द : हाँ।

पुष्पा : जैसा हर लड़की का होता है। एक परिवार और परिवार के लिये एक पुरुष जो प्राकृतिक दृष्टि से भी ज़रूरी है।

आनन्द : प्राकृतिक दृष्टि से स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों को स्वीकार करते हुए भी मैं विवाह को महत्व नहीं देता हूँ।

पुष्पा : समाज का नियम समझो। एक औपचारिकता।

आनन्द : व्यक्तिगत रूप से मुझे इस औपचारिकता से नफ़रत है। क्या ज़रूरत है इसकी?

पुष्पा : नहीं समझते तो तुम्हारे लिये ज़रूरी नहीं है।

आनन्द : विवाह के बाद किसी के साथ हमेशा के लिये बंध जाने वाली बात, प्रतिबद्ध रहने वाली बात तो मुझे किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं है। इसलिये विवाह जैसे शब्द भी हमें स्वीकार नहीं करने चाहियें।

पुष्पा : मैंने पहले ही कहा है, मैं रिजिड नहीं हूँ। लेकिन .....।

आनन्द : स्त्री-पुरुष के बीच प्राकृतिक सम्बन्ध सेक्स, प्रेम, निकटता, लगाव आदि जो भी तुम कहना चाहो, जब तक है तब तक दोनों को साथ रहना चाहिये। इसके बाद जैसे ही लगे कि दोनों में से किसी एक की रुचि या लगाव किसी भी दृष्टि से समाप्त हो गया है तो उन्हें एक-दूसरे को छोड़ देने के लिये स्वतन्त्र होना चाहिये। फिर निभाना कैसा?

पुष्पा : डॉक्टर, मैं सोचती हूँ अब बहुत हो चुका। यहीं समाप्त करें।

आनन्द : एक मिनट प्लीज़ ..... और ऐसे सम्बन्धों को विवाह का ग़ुलाम क्यों होना चाहिये?

पुष्पा : तुम फिर कहोगे कि औपचारिकता क्यों? डॉक्टर, तुम बात को दोहरा रहे हो।

आनन्द : नहीं, मैं पूछना चाहता हूँ।

पुष्पा : अपने फ्री सेक्स वाले प्रश्न का उत्तर भी तुम ख़ुद दे रहे हो। अब क्या बचा?

आनन्द : नहीं, मैं पूछना चाहता हूँ .....।

पुष्पा : अब भी ! पूछने, बताने के लिये अब कुछ भी नहीं बचा है। जितना तुमने कहा है, उतना आज सब लोग जानते हैं। सबको मालूम है कि इसके बावजूद व्यावहारिकता की माँग क्या है? यह सोच रखा रह जाता है, डॉक्टर।

आनन्द : वह जो कुछ भी हो लेकिन मैं लगाव के बारे में पूछ रहा था। लगाव .....।

पुष्पा : लगाव समाप्त हो जाने के बाद क्या? नहीं, यह प्रश्न नया नहीं है। इसलिये मैं चाहती थी कि इस प्रश्न को यहीं छोड़ देना चाहिये। लेकिन

तुम्हें जवाब चाहिये। डॉक्टर, जब तक लगाव है, दोनों परस्पर प्रतिबद्ध हैं और तुम्हें लगाव के आधार पर प्रतिबद्ध को स्वीकार करना होगा। नहीं करोगे तो मैं कहूँगी कि तुम्हारी लगाव शब्द की परिभाषा गलत है।

आनन्द : मुझे लगता है, तुम ठीक कहती हो।

पुष्पा : और लगाव बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध होने की शर्त है, स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे के साथ निर्वाह। लेकिन तुम्हें तो निर्वाह में व्यावहारिकता दिखाई नहीं देती।

आनन्द : लगता है, यह भी ठीक है।

पुष्पा : औपचारिकता के नाते विवाह शब्द को स्वीकार किया जाना चाहिये या नहीं?

आनन्द : **(कुर्सी से उतरकर नीचे बैठ जाता है। चीख़ते हुए)** बन्द करो, बन्द करो ये सब। पुष्पा, यह खेल अब बन्द करो।

पुष्पा : मगर डॉक्टर, प्रश्न विवाह की औपचारिकता .....।

आनन्द : **(ज़ोर से)** मैं पुष्पा, डॉक्टर नहीं। आनन्द हूँ, आनन्द।

: **(पुष्पा गोया लौट आती है। मुस्कराने की कोशिश करती है। थकी-थकी लगती है।)** हद होती है किसी बात की। दिमाग़ की नसें टूट रही हैं। **(मौन। ठण्डापन।)** हल्का होने के बजाय तनावों ने घेर लिया है।

पुष्पा : कई बार ऐसा होता है। उल्टा।

आनन्द : लेकिन मुझे मज़ा आया।

पुष्पा : यह हुई न बात। डॉक्टर नहीं था, सनकी था।

आनन्द : सनकी नहीं, सिद्धान्त था।

पुष्पा : डॉक्टर सिद्धान्त।

आनन्द : तुम्हारा दलीलबाज़ी वाला व्यक्तित्व पहली बार देखा मैंने।

पुष्पा : दलीलबाज़ के साथ व्यक्तित्व का प्रयोग कर रहे हो? गाली दे रहे हो।

आनन्द : अरे, मुझे वाक्पटुता कहना चाहिये था। यह तो प्रशंसा है न?

पुष्पा : **(नाटकीय अन्दाज़ में)** थैंक्यू डियर।

आनन्द : आत्मविश्वास के साथ धीरे-धीरे तुमने डॉक्टर को काटकर फेंक दिया।

पुष्पा : फेंक नहीं दिया। सोचा, जब विवाह सम्भव नहीं है तो उसके वहम ही तोड़ दूँ।

आनन्द : लेकिन आज भी डॉक्टर से मिलता हूँ तो लगता है कि उसके कुछ वहम टूटे नहीं हैं। कुछ भी हो, तुम्हारी सटीक वाक्पटूता .....। भविष्य में मुझे सावधान रहना पड़ेगा। मेरे पास तो न वाक्चातुर्य है और न वाक्पटुता।

पुष्पा : ऐसा! अब तुम मुझसे संभलकर रहना। वैसे तुम्हें लगा नहीं है कि डॉक्टर की दलीलों के पीछे मज़बूत सैद्धान्तिक आधार था?

आनन्द : मैं तुमसे सहमत हूँ। विश्वास की जड़ें डॉक्टर के भीतर गहराई तक फैली हुई हैं। अपने लिये बनाया हुआ उसका नक्शा या वे ऑफ लाइफ के लिये उसकी गाइडलाइन्स अपने तरीके से खूबसूरत थीं।

पुष्पा : सचमुच ख़ूबसूरत।

आनन्द : जब में ख़ूबसूरत कहता हूँ तो मेरा मतलब सचमुच है।

पुष्पा : सचमुच। दरअसल डॉक्टर की कुछ बातों से तो मैं बेहद प्रभावित हूँ। तभी शायद दोस्ती अब तक बनी हुई है। लेकिन आज तक वह अपने फैसलों से एक इंच भी इधर-उधर हटकर नहीं सोचता है, पूर्वाग्रह।

आनन्द : तुम भी तो थीं। विवाह को औपचारिकता के रूप में स्वीकार न करना उतना ही पूर्वाग्रहग्रस्त होना है जितना स्वीकार करना।

पुष्पा : ज़िद का सामना ज़िद से था। **(मौन)**

आनन्द : ए, तुम्हें तो एक बार रद्द किया जा चुका है।

पुष्पा : नहीं, एक बार मैंने किसी को रद्द किया है और तुम्हें भूलना नहीं चाहिये कि एक जगह से तुम्हें रद्द किया गया था। बताऊँ कहाँ से?

आनन्द : मुझे लगता है **(मुँह बिगाड़कर)** मेरा लगाव अब समाप्त हो गया है।

पुष्पा : **(आनन्द से ज़्यादा मुँह बिगाड़कर)** मेरा भी लगाव समाप्त हो गया है। **(मौन)** इसके बाद भी हम एक-दूसरे को छोड़ नहीं सकते। बेवकूफ़ी नहीं है यह?

आनन्द : कैसे?

पुष्पा : देखो, लगाव दोनों ओर से समाप्त हो चुका है। एक का अलगाव दूसरे के अलगाव से मिलता है। तालमेल बैठता है। इसलिये लगाव फिर भी बना हुआ है।

आनन्द : तुम्हारे साथ रहना अब मेरे लिये तो सम्भव नहीं है। हाँ, सम्भव हो सकता है, यदि फ्री सेक्स के बारे में तुम अपने विचार बता दो।

पुष्पा : शादी के बाद साक्षात्कार लेने की कोई शर्त नहीं थी। नाउ शट अप। अब मुझे सन्देह की निगाह से देखते रहना पड़ेगा।

आनन्द : अभी देखते रहना पड़ेगा।

पुष्पा : उस खेल की पंक्ति याद है जो हमने रास्ते में खेला था? जिसके लिये एक पति के पात्र की ज़रूरत थी। **(लहजा बदलकर)** तुम्हारे चेहरे पर अभी कुँवारापन शरमा रहा है और तुमने अपनी प्रेमिका का अभी तक पूरा मज़ा भी नहीं लिया होगा। **(पूर्ववत्)** फिलहाल इस खेल के लिये मैं अधिक रोबदार, गम्भीर और कड़क आवाज़ वाले पुरुष की ज़रूरत महसूस कर रही हूँ। **(दोनों हँसते हैं। हँसी में एक-दूसरे का साथ देते हैं, देते चले जाते हैं। अंधेरा।)**

(मंच पर गहरी नीली रोशनी झपकती रहती है। आनन्द रनिंग कमेन्टरी की तरह बीच-बीच में संवाद ज़रूर बोलेगा लेकिन पुष्पा और आनन्द अभिनय संकेत देते रहेंगे। सामग्री नहीं, संकेत होंगे, अभिनय होगा, शब्द होंगे।)

आनन्द : तो ..... हमने एक बार शादी से पहले होटल में कमरा लिया था। चुराया हुआ कुछ ..... **(दोनों साथ चलते हैं। आनन्द के हाथ में गोया छोटी अटैची है।)** तुमने आने में देर कर दी। मैंने समझा, तुम नहीं आओगी। **(पुष्पा आनन्द का चेहरा देखती है।)** तुम आईं तो विश्वास नहीं हुआ। **(पुष्पा फिर आनन्द की तरफ़ देखती है। दोनों खड़े हो जाते हैं।)** सच अब भी विश्वास नहीं है कि हम साथ हैं। **(पुष्पा जो अब तक उसे देख रही है, मुस्कराती है।)** ..... एक ज़रूरी बात ..... **(पुष्पा के चेहरे पर प्रश्न उभरता है।)** ..... देखो, होटल का मैनेजर तुमसे ..... **(वाक्य अधूरा छोड़कर आनन्द पुष्पा की तरफ़ देखता है। धीरे-धीरे आनन्द के चेहरे का रंग उड़ने लगता है। पुष्पा आश्चर्यचकित।)** तुम कुछ बोलती क्यों नहीं हो पुष्पा? जब से आई हो "हैलो" तक नहीं कहा है। न ही मुस्कुराई हो। **(पुष्पा मुस्कुराती है। आनन्द के चेहरे का तनाव घटता है।)** हाँ तो, होटल का मैनेजर पहले या बाद में तुमसे ज़रूर पूछेगा कि तुम्हारा और मेरा क्या रिश्ता है? **(पुष्पा के चेहरे पर फिर आश्चर्यभाव।)** हाँ, इस शहर में होटल मैनेजर्स की मनोवृत्ति कुछ ऐसी ही है। पूछते हैं, दख़लन्दाज़ी करते हैं। इस शहर में अभी ऐसा है।

पुष्पा : तो मैं कहूँगी, पत्नी हूँ!

आनन्द : बिल्कुल ठीक। देखो, कहते समय तुम्हारे चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं होना चाहिये जिससे सन्देह हो।

पुष्पा : विश्वास होगा।

आनन्द : अपने ऊपर विश्वास हो तो उत्तर सहज .....।

पुष्पा : ठीक है, ठीक है। ये हिदायतें .....।

आनन्द : लेकिन तुम अभी से डरी-डरी लग रही हो। **(धीरे से)** कुछ हुआ है क्या पुष्पा?

पुष्पा : नहीं, कोई ख़ास बात नहीं है। सब ठीक हो जायेगा।

आनन्द : कुछ तो है।

पुष्पा : मेरा साथी हाउस मैन नहीं था। मैं सन्देश छोड़कर चली आई हूँ। न जाने कब वापस लौटे?

आनन्द : वरना तुम निश्चिन्त होतीं।

पुष्पा : बिल्कुल निश्चिन्त। चलो ठीक है। इस अटैची में क्या है?

आनन्द : ताकि लगे कि बाहर से आये हैं।

पुष्पा : लेकिन इसमें है क्या?

आनन्द : नैपकिन, तुम्हारे लिये एक साड़ी और कुछ छोटी-छोटी रोज़मर्रा की चीज़ें। अन्दर चलें?

पुष्पा : दो सैकेण्ड रुको ..... चलो।

(दो-तीन क़दम आगे बढ़ाकर, दो-चार सीढ़ियाँ चढ़कर गोया होटल में पहुँच गये हों। इधर-उधर देखते हैं। आगे बढ़कर दोनों ऐसे खड़े हो जाते हैं जैसे होटल के काउन्टर पर खड़े हों और मैनेजर से बात कर रहे हों। कुछ क्षणों के अन्तराल के बाद आनन्द के होंठ हिलते हैं, जैसे कि वह कुछ कह रहा हो। इसी तरह पुष्पा के होंठ भी कुछ कहने के अन्दाज़ में हिलते हैं। आनन्द हाथ बढ़ाकर चाबी लेने का अभिनय करता है। इस बीच पुष्पा आगे बढ़ जाती है और आनन्द आकर उससे मिलता है।)

आनन्द : बदतमीज़।

पुष्पा : मैनेजर का पेशा है सन्देह करना।

आनन्द : लेकिन तुम सहम क्यों गई थीं?

पुष्पा : नहीं, ऐसा नहीं था। किसी होटल में इस तरह पहली बार आई हूँ न?

(मौन। दो-चार क़दम चलते हैं। रुकते हैं। कमरे के अन्दर आने का अभिनय।)

आनन्द : बैरा कमरा खोलकर अन्दर ले आया। कमरा दिखाकर, ज़रूरी बातें बताईं। तुम थकी हुई-सी चुपचाप पलंग पर लेट गईं। **(पुष्पा ज़मीन**

पर पलंग की तरह लेट जाती है) खाने-पीने के सामान का आर्डर देकर मैंने बैरे को चलता किया। उसके जाते ही मैंने तुम्हें झिंझोड़ा। **(पुष्पा को झिंझोड़ता है)** लेकिन तुम कहीं खोई हुई थीं। मैंने तुम्हें छोड़ दिया और उठकर दरवाज़ा बन्द कर दिया। **(अभिनय)** हल्का होकर मैंने अटैची से सामान निकालकर बाहर रखा। **(अभिनय)** उठकर, मेरी तरफ़ देखकर, तुम इस तरह मुस्कराईं, जैसे कुछ आराम महसूस किया हो। **(अभिनय)** मैं भी तुम्हें देखकर मुस्कराया। **(अभिनय)**

पुष्पा : पता नहीं कैसा लग रहा है।

आनन्द : कैसा लग रहा है?

पुष्पा : पता नहीं।

आनन्द : तुम डॉक्टर हो और अनुमान नहीं लगा पा रही हो?

पुष्पा : ऐसा कुछ जो पहली बार महसूस हो रहा है।

आनन्द : मैंने तुम्हें लिटाया। तुमने पानी माँगा। मैंने तुम्हें पानी पिलाया। **(अभिनय)** दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने जाकर दरवाज़ा खोला। बैरा अन्दर आया और खाने-पीने का सामान रख गया। चीनी मिलाकर मैंने तुम्हें कॉफी का प्याला दिया। तुम आराम से कॉफी पीने लगीं। कॉफी पीकर तुम लेट गईं। मैंने उठकर दरवाज़ा बन्द किया और लौटकर तुम्हें देखता रहा। **(अभिनय)** समझ नहीं पा रहा था कि अब क्या करूँ। ..... अब कैसा लग रहा है?

पुष्पा : ठीक है। तुम इस तरह क्यों बैठे हो? आओ, क़रीब आओ।

आनन्द : मैं तुम्हारे पास लेट गया। **(अभिनय)** तुम लगातार कुछ सोच रही थीं। बीच-बीच में तुम मेरे प्रश्नों के उत्तर भी नहीं दे रही थीं। तुम्हारी आँखें छत को घूर रही थीं। मैंने रोशनी बुझा दी। **(अभिनय)** काफ़ी देर के बाद .....।

पुष्पा : रोशनी करो। मुझे घुटन हो रही है। **(प्रकाश)**

आनन्द : मेरी हरक़त जारी रही। तुम उठकर बैठ गईं। **(प्रकाश कम)** अचानक तुम सुबकियाँ लेकर रोने लगीं। मैंने रोशनी फिर जला ली। **(प्रकाश)** तुमने अपना शरीर ढकने की कोशिश नहीं की। मेरी हरक़त तेज़ हो गई। तुम उसी तरह रोती रहीं। काफ़ी देर बाद तुम्हें वहीं छोड़कर मैं दरवाज़े के पास गया। वापस लौटकर, सिगरेट जलाकर तुम्हारे पास बैठ गया। **(अभिनय)** अचानक "ठा" की आवाज़ हुई। **(पलंग का तख्ता गिरने से आवाज़ होती है।)** तुम्हारा धड़ पलंग के बीच का तख्ता निकल जाने के कारण नीचे गिर गया। जैसे ही उठकर, तुम्हारे धड़ को पलंग के एक ओर सरकाकर मैंने तख्ता ठीक किया। **(धड़ को सरकाने, तख्ते को ठीक करने और हाँफने का अभिनय)** अचानक तुम्हारे कहकहे गूँजने लगे। **(कहकहे)** पहले आश्चर्य हुआ फिर मैं भी कहकहे लगाने लगा।

(कहकहे और कहकहे। अंधेरा। कहकहे जो धीरे-धीरे कम होते हुए बन्द हो जाते हैं। मौन। साँसें जो ज़ोर-ज़ोर से उठती और गिरती हैं। मौन। प्रकाश प्रारम्भिक, पिकनिक वाले दृश्य पर।)

पुष्पा : फिर?

आनन्द : फिर क्या?

पुष्पा : फिर आया क्लाइमैक्स। दोनों ख़ूब हँसे। ख़ूब हँसे। ख़ूब हँसे .....। **(दोनों बहुत देर हँसते हैं।)** तुम बीच-बीच में बहुत-सी बातें छोड़ देते थे। अभिनय करते समय सचमुच का क्रम भुलाकर मुझे वही करना पड़ रहा था जो तुम कहते थे।

आनन्द : हाँ, उसके बाद हमने ये क्रम इतनी बार दोहराये हैं कि होटल वाली घटना को मैं थोड़ा-बहुत भूलने लगा हूँ।

पुष्पा : तुम अपनी तरफ़ से मिलावट कर रहे थे।

आनन्द : हो सकता है।

पुष्पा : वह पहले ही रो रही थी।

आनन्द : वह यानी तुम?

पुष्पा : इस समय मैं वह है।

आनन्द : रोने के बारे में मैंने क्या कहा था?

पुष्पा : तुमने कहा, अचानक रोने की आवाज़ सुनाई दी जबकि वह पहले ही रो रही थी। तुम दरवाज़े की तरफ़ क्यों गये थे? इच्छा हुई होगी कि बेवकूफ को यहीं छोड़कर चला जाऊँ। लेकिन तुम्हारे भीतर के कामुक व्यक्ति ने कमज़ोर बनाकर शायद तुम्हें जाने नहीं दिया होगा।

आनन्द : ठीक ऐसा नहीं था।

पुष्पा : तुम ''ठीक ऐसा'' कह रहे हो? जब तख्ता गिरा था, तुम कितने डर गये थे। एक तरफ़ मैं रो रही थी। तुम पहले ही परेशानी में थे। तख्ता गिरा तो तुम्हें लगा कि होटल मैनेजर और बैरा अभी आये। सब कुछ सामने आ जायेगा। तुम्हारे चेहरे पर पसीना और घबराहट .....। अजीब हालत थी तुम्हारी उस समय।

आनन्द : तुम इसलिये हँसी थीं?

पुष्पा : शायद। लेकिन क्या उस समय तुम समझ सके थे कि मैं रो क्यों रही थी? या अब भी समझ सके हो कि मैं उस समय क्यों रोई थी?

आनन्द : उस समय तो नहीं लेकिन बाद में शायद कुछ समझ में आया है।

पुष्पा : क्या समझ में आया है?

आनन्द : तुम कुँवारी थीं और पहली बार .....।

पुष्पा : पहला मौक़ा था और मैं कुँवारी थी। **(हँसती है। ज़ोर-ज़ोर से हँसती है। आनन्द आश्चर्य से उसे देखता रहता है।)** तुमने ऐसा समझा? **(फिर हँसती है।)**

आनन्द : तुम हँस रही हो?

पुष्पा : **(हँसते हुए)** कुँवारी थी यह तो ठीक है, लेकिन तुम्हें कैसे पता लगा कि पहला मौक़ा था।

आनन्द : बस, ऐसा लगा।

पुष्पा : कैसे लगा ऐसा?

आनन्द : साथ देने के तुम्हारे ढंग से।

पुष्पा : साथ देने के ढंग से तुम्हें लगा कि मैं वह सब पहली बार कर रही हूँ?

आनन्द : हाँ।

पुष्पा : तो तुम्हें ऐसा कैसे लगा? क्या तुम्हारे लिये यह पहला मौक़ा नहीं था?

आनन्द : बस, मुझे इतना ही पता था कि पहली बार कैसे होता है।

पुष्पा : पता होना और उस समय महसूस करना, दो अलग बातें हैं। तुम स्वीकार करो कि तुम्हारा पहला मौक़ा नहीं था।

आनन्द : तुम्हें आज पता लगा?

पुष्पा : तसल्ली की। **(मौन)**

आनन्द : तुमने बताया नहीं, रो क्यों रही थीं?

पुष्पा : जैसा तुमने सोचा है, वैसा नहीं है।

आनन्द : तो कैसा है?

पुष्पा : सोचना। बात निकले तो कारण बताना। तब तक रुचि बनी रहेगी।

आनन्द : आज कारण के निकट तो पहुँचना चाहिये।

पुष्पा : कुछ भी हो, सब कुछ था मज़ेदार।

आनन्द : तुम बात बदल रही हो।

पुष्पा : बहुत रोचक और मज़ेदार था। मुझे भरपूर मज़ा आया।

आनन्द : मेरे बताये हुए कारण को ग़लत कहकर अब तुम सही कारण बताने से बचना चाहती हो। तुम्हारे पास दूसरा कोई कारण नहीं है।

पुष्पा : तुम जानते हो कि मैं झूठ नहीं बोलती हूँ।

आनन्द : फिर तुमने अब तक छिपाया क्यों?

पुष्पा : यही तो मज़ेदार बात है।

आनन्द : नहीं, तुमने कारण को दबाना चाहा था।

पुष्पा : दबाने से तुम्हारा क्या मतलब है?

आनन्द : तुम्हें डर लग रहा हो।

पुष्पा : किससे, तुमसे? किस बात का?

आनन्द : नहीं, मुझसे नहीं। तुमने सोचा हो, बात छिड़ने पर सही कारण सामने आ सकता है। तुम्हें दूसरों की चिन्ता होगी।

पुष्पा : माइ फुट।

आनन्द : तो फिर क्या कारण था?

पुष्पा : हो सकता है उस समय मेरे अन्दर कमज़ोर औरत बैठी हो।

आनन्द : मुझे ऐसा नहीं लगा था।

पुष्पा : तो ऐसा नहीं है। फिर और क्या है?

आनन्द : हो सकता है तुम कुँवारापन खो रही थीं, इसलिये।

पुष्पा : नॉनसेन्स।

आनन्द : हो सकता है ..... पता नहीं क्या हो सकता है? अब तुम बताओ, पुष्पा।

पुष्पा : देखो, यह भी हो सकता है कि अपने प्रेमी के साथ विश्वासघात करने का अफ़सोस हो रहा हो मुझे।

आनन्द : उस समय भी तुम्हें प्रेमी अपने अन्दर बैठा हुआ मिला?

पुष्पा : हो सकता है।

आनन्द : यह कारण सटीक नहीं है। तुम ख़ुद कह रही हो, हो सकता है।

पुष्पा : नहीं, यही कारण है उस समय मेरे लगातार रोने का।

आनन्द : फिर हँसी क्यों?

पुष्पा : तुम्हारी अजीब हालत देखकर हँसी आ गई थी और फिर लगातार आती रही थी।

आनन्द : यह बात तुम मुझे केवल आश्चर्यचकित करने के लिए कह रही हो या परखना चाहती हो कि मुझमें कितनी सहनशक्ति है? ईर्ष्या तो नहीं होती?

पुष्पा : कुछ भी हो सकता है, किन्तु तुम्हें मानना होगा कि कारण यही था।

आनन्द : यह न तो दलील है और न कारण।

पुष्पा : फिर भी है।

आनन्द : तुम कहती हो तो होगा। मगर मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था।

पुष्पा : अब विश्वास आ रहा है न?

आनन्द : हो सकता है। विश्वास किया जा सकता है।

पुष्पा : ऐसा होता है।

आनन्द : हाँ, है।

पुष्पा : क्या है?

आनन्द : जो कारण तुमने बताया, उसे मानता हूँ।

पुष्पा : ऐसा लगता है कि वह सम्भव है, हो सकता है। लेकिन ऐसा है नहीं।

आनन्द : **(आश्चर्य से)** यह ऐसा नहीं तो फिर कैसा है?

पुष्पा : अब बस, प्लीज़। दूसरी बार अर्थ या कारण तलाश करेंगे। रुचि बनी रहने दो आनन्द, इसमें।

आनन्द : ठीक है। लेकिन मेरा सोचा हुआ कारण या छवि तुमने तोड़ दी।

पुष्पा : लेकिन आज जो नया कारण या छवि मिली है, उसका क्या होगा? **(मौन)** नाव में घूमने कब चलेंगे? **(मौन)** रात को इमरजेन्सी आपरेशन के कारण देर तक जागना पड़ा था। अब नींद आ रही है और तुमने बिना बताये पहले ही कार्यक्रम बना लिया था। **(मौन)** नींद आ रही है। **(मौन)** तुम क्या सोच रहे हो? तुम सोच रहे हो कि तुम हार गये

हो? दरअसल जब कुछ सामने ही नहीं आया है तो पता कैसे लगेगा? **(मौन)**

आनन्द : देखो, तुम्हें झपकियाँ आ रही हैं।

पुष्पा : नहीं, अब तक मैंने एक भी झपकी नहीं ली है।

आनन्द : मुझे लगा, तुम बातें करते-करते झपकियाँ लेने लगी हो।

पुष्पा : प्रेमी के अस्तित्व को अभी तुम स्वीकार नहीं कर रहे हो।

आनन्द : कौनसा प्रेमी? किसका अस्तित्व? नींद में तुम सही कारण बता रही हो क्या?

पुष्पा : नहीं, मैं जाग रही हूँ। ऐसे ही वाक्य दुबारा मुँह से निकल गया। आज की पिकनिक के लिये तुमने ग़लत दिन चुना था।

आनन्द : मैंने तुमसे पूछने के बाद कार्यक्रम तय किया था।

पुष्पा : तो मुझसे ग़लती हो गई। **(आँखें बन्द होने लगती हैं)**

आनन्द : कब तक टालते। मौसम निकल रहा है।

पुष्पा : **(बन्द आँखें)** टमाटर खाओगे? ..... तो निकल जाता मौसम! वैसे भी कई सालों से पिकनिक पर नहीं आई हूँ। आई भी तो ग़लत दिन पर। **(आँखें खोलती है)**

आनन्द : सचमुच ग़लत दिन चुन लिया है शायद।

पुष्पा : **(आँखें बन्द करके)** टमाटर? हम नाव में कब चलेंगे? **(मौन। पुष्पा खड़ी हो जाती है। दोनों हाथों की दो-दो अंगुलियों से आँखें बन्द करके, एक क़दम आगे बढ़ाकर, दूसरा क़दम उससे मिलाकर)** एम आइ आउट?

आनन्द : **(बैठे-बैठे पुष्पा के पाँव जाँचकर)** इट्स पज़लिंग। **(घूरकर देखते हुए)** उलझ गई है पुष्पा। कुछ कह नहीं सकते।

पुष्पा : **(उसी स्थिति में)** पहले क़दम पर ही पज़लिंग। देखो, ध्यान से देखो।

आनन्द : इट्स पज़लिंग, डार्लिंग।

पुष्पा : इस मामले में तुम बहुत कठोर हो। **(आँखें खोलकर वह अपने पाँवों को जाँच-जाँचकर देखती है)** रीयली, इट्स पज़लिंग। **(मौन)** वह जो तुम्हारी कॉलेज की गर्ल फ्रेण्ड थी, वही जो बाद में तुमसे ट्यूशन पढ़ती थी, उसकी अन्दरूनी उलझन मतलब उसकी अनिश्चित छवि के बारे में तुम आश्वस्त हो पाये, आनन्द?

आनन्द : अनिश्चित छवि से तुम्हारा आशय एकान्तिक से है या अनमने से?

पुष्पा : यह तुम्हें बताना है। मैं तो महसूस करूँगी कि तुम ठीक बता रहे हो या नहीं?

आनन्द : मेरे बताने के बाद वह नहीं बताओगी जो तुम महसूस करोगी?

पुष्पा : अभी नहीं। बताने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अपने आप महसूस हो जायेगा। अनिश्चित छवि का निश्चित।

आनन्द : एकान्तिक या अनमना।

पुष्पा : अपनी पूरी भावना के साथ .....।

आनन्द : प्लीज़ पुषी, फ़ीलिंग्स काम में लो। भावना शब्द अच्छा नहीं लगता।

पुष्पा : ठीक है, ज़्यादा अन्तर नहीं है। मैं देखना चाहती हूँ कि अब अपने कॉलेज की गर्ल फ्रेण्ड के बारे में तुम्हारी क्या भावनायें हैं? या आज तुम्हारे मन में उसके लिये कैसी फ़ीलिंग्स हैं?

आनन्द : काफ़ी समय गुज़र गया है। कुछ लमहे हैं जिन्हें किसी तरह फिर जी लेता हूँ, वैसा का वैसा। जहाँ तक तुम्हारा उठाया हुआ भावनाओं का प्रश्न है, वे अब उतनी गरम नहीं रही हैं। नकली सतह पर भावनायें कब तक बनी रह सकती हैं? तुम मेरी सहायता करोगी?

पुष्पा : उस घटना की लड़की पात्र को मैंने कभी देखा नहीं है। नो सर, सॉरी।

आनन्द : इसकी ज़रूरत नहीं है।

पुष्पा : कोशिश करूँगी। लेकिन निश्चय के साथ नहीं कह सकती कि निभा सकूँगी या नहीं **(मौन)**

आनन्द : **(कुछ क्षण पुष्पा की ओर देखने के बाद)** मैं और तुम एक ही कॉलेज के विद्यार्थी हैं ! एक ही कक्षा में नहीं हैं। तुम बी.ए. के फर्स्ट इयर में थीं और मैं फाइनल में। तुम्हें एक विषय में विशेष सहायता और दूसरे में दिशा-निर्देश की ज़रूरत थी। इस काम के लिये मैं तुम्हारे घर आता था।

पुष्पा : बहुत अच्छा। यानी मैं इस पात्र का अभिनय करूँ।

आनन्द : वरना .....।

पुष्पा : वैसे मैं चाहती थी कि मैं केवल उसके संवाद बोलकर तुम्हारी मदद करूँगी। बाद में किसी उचित बिन्दु से तुम्हारे साथ मिलकर .....। **(पुष्पा आनन्द की बगल में आकर बैठ जाती है।)**

आनन्द : पहले दिन, पढ़ाई के बाद .....।

: **(मौन। नीली रोशनी झपकती रहती है। आनन्द किताब को बन्द करके उसे एक तरफ रखने का अभिनय करता है। पुष्पा के कंधे पर हाथ रखकर अंगड़ाई लेता है। उबासी लेने के बाद लहजा बदलकर)** तुम काफ़ी थक गई होंगी।

पुष्पा : तुम काफ़ी थके हुए लग रहे हो। सुबह कॉलेज, इसके बाद नौकरी और शाम को मुझे पढ़ाना। तुम सचमुच काफ़ी थक जाते होंगे।

आनन्द : दूसरे चैप्टर के अन्तिम दो पृष्ठ रह ही गये आज।

पुष्पा : मैं पढ़ लूँगी। आज दो चैप्टर बहुत हैं। तुम अपना ध्यान रखो।

आनन्द : ध्यान ही ध्यान है।

पुष्पा : **(हमदर्दी)** तुम मुझे पढ़ाना बन्द कर दो। मैं अपने आप तैयारी कर लूँगी।

आनन्द : एक अगला चैप्टर तो तैयार होता नहीं है तुमसे और .....।

पुष्पा : क्योंकि तुम हो इसलिये .....। जब तुम्हें थका-मांदा देखती हूँ तो मेरा ध्यान पढ़ाई की बजाय तुम्हारी तरफ़ चला जाता है।

आनन्द : तो तुम ध्यान से नहीं पढ़ती हो।

पुष्पा : कभी-कभी हट जाता है। चाय बनवाऊँ?

आनन्द : दो कप चाय तुम्हारे पास पहले ही पी चुका हूँ।

पुष्पा : तो क्या हो गया? आज कम से कम ढाई घण्टे बैठे हैं। तुम्हें भूख भी लगी होगी। नौकरी पर लंच बॉक्स नहीं ले जाते हो न?

आनन्द : हाँ, आज तो भूख भी लगी है। दिन में खाना मुझे अच्छा नहीं लगता है।

पुष्पा : तुम्हारी सेहत लगातार गिर रही है।

आनन्द : गिर तो तुम्हारी सेहत रही है। पीली पड़ती जा रही हो।

पुष्पा : मैं तो सेहत बना रही हूँ।

आनन्द : और मैं जैसे कि बिगाड़ रहा हूँ। वर्षों से मेरा शरीर ऐसा ही है।

पुष्पा : मोटे लड़के मुझे अच्छ लगते हैं।

आनन्द : तुम चाय बनाने के लिये कह दो।

पुष्पा : कुछ खाओगे?

आनन्द : नहीं।

पुष्पा : आज सर्दी ज़्यादा है। दरवाज़ा बन्द कर दूँ? **(पुष्पा बाहर जाने के लिये उठती है। जाती है। लौटते समय दरवाज़ा बन्द करने का अभिनय। फिर आनन्द की बगल में बैठ जाती है।)** तुम बहुत रोचक ढंग से पढ़ाते हो।

आनन्द : इसलिये क्योंकि हम कोर्स के अलावा दूसरी बातें ज़्यादा करते हैं।

पुष्पा : ज़रूरी है कि सारा समय कोर्स की ही बातें की जायें? कोर्स और कोर्स! दूसरी बातों का क्या कोई महत्व नहीं होता?

आनन्द : होता तो है।

पुष्पा : एक बात समझ में आती भी है, मतलब नहीं भी आती है।

आनन्द : मतलब कहने की तुम्हारी आदत है।

पुष्पा : हाँ, गन्दी आदत है न?

आनन्द : नहीं, गन्दी क्या होती है? कौनसी बात है जो तुम्हें समझ में आती भी है, नहीं भी आती है?

पुष्पा : जो तुम कहते हो।

आनन्द : मैं साफ़-साफ़ बोलने की कोशिश करता हूँ। तुम्हें उलझा हुआ लगता है? समझ में नहीं आता?

पुष्पा : ऐसी बात नहीं है। मतलब जब कोई बात तुम कहते हो, तुम्हारे विचार मतलब तुम्हारा सोच मुझे उल्टा लगता है।

आनन्द : उल्टा लगता है?

पुष्पा : मतलब हम लोग जिस तरह सोचते हैं, बोलते हैं, उसका उल्टा लगता है।

आनन्द : मुझे नहीं मालूम, मैं उल्टा कैसे बोलता हूँ?

पुष्पा : नहीं, मेरा मतलब ऐसा नहीं है। मज़े की बात यह है कि मुझे हमेशा ऐसा लगता है, जिस तरह तुम सोचते हो, बोलते हो सच वही है। उसी तरह सोचा और समझा जाना चाहिये। मतलब मैं या मेरी सहेलियाँ या दूसरे लोग जिन्हें मैं जानती हूँ, सब लोग तुम्हारा उल्टा सोचते हैं, उल्टा बोलते हैं।

आनन्द : यानी मैं उल्टा नहीं हूँ।

पुष्पा : नहीं, तुम बातचीत में फ्रैंक भी हो। सब कुछ कह देते हो। जैसा महसूस करते हो, कह देते हो।

आनन्द : अच्छा, तुम्हें लगा है ऐसा।

पुष्पा : हाँ, और यह मुझे अच्छा लगता है। मतलब देखो, मैं ख़ुद तुम्हारी तरह बोलना सीख गई हूँ। है न?

आनन्द : **(हँसते हुए)** तुम तो वैसे ही होशियार हो। **(शरारतपूर्वक)** मतलब दूसरी लड़कियों की तुलना में बिल्कुल अलग हो।

पुष्पा : मतलब कहकर तुम मुझे चिढ़ा रहे हो। मैं इस शब्द को भी अब काम में नहीं लूँगी, बस।

आनन्द : अरे नहीं, तुम्हारी जुबान से यह शब्द अच्छा लगता है।

पुष्पा : लेकिन मैं तुम्हारी तरह उल्टा, मतलब सही और फ्रैंक बोलना कब सीखूँगी?

आनन्द : बस, कुछ दिनों की बात है।

पुष्पा : इसके बाद मैं तुम्हें अच्छी तरह समझ सकूँगी। मैं चाय ले आती हूँ। **(बाहर जाती है। चाय लाने का अभिनय।)** थोड़ा नाश्ता भी ले आई हूँ।

आनन्द : **(पुष्पा आनन्द की बगल में बैठ जाती है। आनन्द चाय पीने का अभिनय करता है।)** तुमने महसूस किया है न कि जो कुछ मैं कहना चहाता हूँ, फ्रैंकली कहता हूँ और सही कहता हूँ।

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : देखो, मैंने जब भी जिस तरह बात को समझा है, अनुभव किया है, बिना किसी ढोंग या रखरखाव के उसे कह दिया है।

पुष्पा : अच्छा!

आनन्द : फ्रैंकनेस मुझे अच्छी लगती है।

पुष्पा : जिस तरह तुम समझाते हो, तुम्हें प्रोफेसर होना चाहिये था।

आनन्द : तुम भी मज़ाक़ कर रही हो। मेरे पास दूसरी डिग्रियाँ नहीं हैं।

पुष्पा : दूसरे प्रोफेसरों की तुलना में तुम्हारी बात मुझे ज़्यादा अच्छी तरह समझ में आती है। समझाने का तुम्हारा तरीका भी अलग है। फिर मतलब रोज़ाना तुम मुझे पाँच मिनट के लिये भी दूसरे विषय इस तरह समझाओगे तो मैं तुम्हारी तरह बात करना और सोचना सीख जाऊँगी। सिखाओगे न, प्लीज़।

आनन्द : इसमें क्या दिक़्क़त है? यों भी हम काफ़ी देर इधर-उधर की बातें करते हैं।

पुष्पा : हाँ, ऐसी बातचीत ही मेरे काम की है।

आनन्द : **(कप रखने का अभिनय)** मुझे नाश्ता नहीं चाहिये **(ख़ुश्क लहजे में)** देखो, मेरे अन्दर बैठा हुआ पुरुष लड़कियों के मामले में बहुत कमज़ोर है। ऐसे मौक़ों पर मैं अपने बारे में ज़्यादा बोलता हूँ और अपनी ऐसी छवि बनाता हूँ कि वह मुझसे सहानुभूति दिखाती है। उसकी आँखों में आँसू होते हैं। न चाहते हुए भी पता नहीं क्यों, मैं ऐसा करता हूँ और इसके बाद मेरा मन हल्का हो जाता है।

पुष्पा : ऐसा होता है! परन्तु अपने बारे में जो कुछ तुम कहते हो, वह सच होता है। तुमने बहुत ज़्यादा बर्दाश्त किया है। मुझे मालूम है, तुम बेहद तनहा हो।

आनन्द : तुम बात करना सीख गई हो .....। मैं अपने अन्दर बैठे उस पुरुष से नफ़रत करता हूँ। उसका दुश्मन बनना चाहता हूँ मैं। लेकिन .....।

पुष्पा : लेकिन यह सब सुनना मुझे अच्छा लगता है।

आनन्द : कल से मैं नहीं आऊँगा।

पुष्पा : प्लीज़, तुम ज़रूर आना। मैंने कहा न, मुझे यह सब अच्छा लगता है।

आनन्द : नहीं, तुम्हें नफ़रत करनी चाहिये मुझसे। यह सब सुनने से इनकार कर देना चाहिये तुम्हें।

पुष्पा : तुम नहीं आओगे तो हो सकता है मैं पागल हो जाऊँ।

आनन्द : मुझे डर लगता है कि कहीं मैं तुम्हारे अन्दर निराशा न भर दूँ। नहीं, तुम्हें आनन्दपूर्वक, प्रसन्नतापूर्वक जीना चाहिये, एन्ज्वाय करना चाहिये।

पुष्पा : मुझे मालूम है कि मैं कैसे जीती हूँ।

आनन्द : नहीं, मैं नहीं आऊँगा।

पुष्पा : तुम आओगे। **(ज़ोर से)** तुम ज़रूर आओगे। अब मैं कहती हूँ कि यह सब सुनकर मुझे अपनत्व महसूस होता है .....।

(मौन। पुष्पा आनन्द की जेब में कुछ डालती है।)

आनन्द : तुमने फिर चुराई है काजू-चिकी।

पुष्पा : चोरी नहीं की। अपना हिस्सा तुम्हारे लिये रख लिया।

आनन्द : तो फिर आधी-आधी।

पुष्पा : नहीं, मुझे काजू-चिकी अच्छी नहीं लगती और यहाँ जेब से मत निकालना।

आनन्द : तो मैं चलूँ अब?

पुष्पा : कल ज़रूर आना।

आनन्द : देखता हूँ।

पुष्पा : नहीं, ज़रूर आना है।

(आनन्द पुष्पा के कंधे पर हाथ रखता है। पुष्पा उसके कन्धे पर सिर रखकर आँखें बन्द कर लेती है। आनन्द उसके बालों को चूमता है। दोनों अलग होते हैं। आनन्द जाता है। मौन। आनन्द वापस आता है।)

आनन्द : क्यों, पुष्पा, तनाव है न इस पात्र में?

पुष्पा : भावुकता में बहुत तनाव होता है। लड़की और तुम काफ़ी .....।

आनन्द : भावुक हो गये। ऐसा नहीं है। धीरे-धीरे मेरी सभी कमज़ोरियाँ तुम्हारे सामने आती जायेंगी।

पुष्पा : मुझे मालूम है। लड़की की जगह मेरा अभिनय तुम्हें कैसा लगा?

आनन्द : तुमने भी कोई कम भावुकता नहीं दिखाई।

पुष्पा : यही तो इस कहानी की माँग है। नहीं?

आनन्द : हाँ।

पुष्पा : वह तुम्हें बहुत होशियार और सही बात कहने वाला मानती थी।

आनन्द : देखो ..... सचमुच ऐसा नहीं है न?

पुष्पा : तुम उसे अपने दुःख-दर्द सुनाते रहते होंगे।

आनन्द : एक कमज़ोर पुरुष, स्त्री के सामने .....।

पुष्पा : लड़की के सामने।

आनन्द : ठीक है। वह लड़की थी और कॉलेज में होते हुए भी दसवीं कक्षा जैसी मासूम थी।

पुष्पा : तुम मासूम के सामने रोते थे और उसे वह सब अच्छा लगता था। इसमें उसे अपनत्व दिखाई देता था।

आनन्द : उन दिनों मेरा पुरुष लड़की के प्रति इतना कमज़ोर और हमदर्दी लेने वाला .....।

पुष्पा : गोया अब ऐसा नहीं है।

आनन्द : उतना नहीं है।

पुष्पा : मुझे लगता है, तुम अब भी उतने ही भावुक हो। अगर मैं उस लड़की जैसी बन जाऊँ तो!

आनन्द : तुम्हारा रवैया ठीक है। मेरे प्रति तुम्हें इसी तरह सख़्त और शोख़ बने रहना चाहिये।

पुष्पा : और वह छिपाकर तुम्हें कुछ देती थी।

आनन्द : जिस तरह अब तुम देती हो। लड़कियों और स्त्रियों की यह आदत होती है। दिखाती हैं कि देखो, हम तुम्हारा कितना ध्यान रखती हैं।

पुष्पा : बस, बस। वह तो उसे अच्छा नहीं लगता था इसलिये तुम्हें देती थी।

आनन्द : और तुम्हें भी जो अच्छा नहीं लगता, मेरे लिये रखती हो?

पुष्पा : और नहीं तो क्या? ..... तुम समझते हो, मैं तुमसे इतना प्यार करती हूँ? सामने ही नहीं अनुपस्थिति में भी? नहीं, बिल्कुल नहीं।

आनन्द : यानी लग रहा है न तुम्हें?

पुष्पा : तुम्हारे और लड़की के अभिनय में, हम दोनों ने कुछ न कुछ फनी किया है। **(दोनों हँसते हैं। ज़ोर-ज़ोर से हँसते हैं। मौन)** आगे बढ़ायें इसे।

आनन्द : हाँ। **(मौन)** अभी कोर्स चल रहा है। ऐसे ही बातचीत का सिलसिला .....। **(पुष्पा आनन्द के निकट बैठ जाती है। मौन। नीली रोशनी झपकने लगती है।)** उस दिन हमारी सम्बन्धों पर बातचीत अधूरी रह गई थी। तुमने बताया नहीं कि तुम सम्बन्धों को किस रूप में देखती हो?

पुष्पा : बस, निभाती हूँ।

आनन्द : व्यावहारिक। तुम व्यावहारिक बात कह रही हो।

पुष्पा : पता नहीं।

आनन्द : तुम्हें मालूम है, सम्बन्धों की रचना कैसे हुई थी?

पुष्पा : तुम बताओ न।

आनन्द : छोड़ो, तुम कहोगी न जाने क्या सुना रहा है।

पुष्पा : फिर कहूँ कि मुझे सुनना अच्छा लग रहा है।

आनन्द : संक्षेप में कहूँगा। आज बहुत देर हो गई है।

पुष्पा : फिर क्या हुआ? इस कमरे में किसी को आना थोड़े ही है सोने के लिये।

आनन्द : तो सुनो। **(पुष्पा आनन्द के साथ और भी सट कर बैठती है।)** शुरू में केवल एक स्त्री और एक पुरुष। यह मैं सदियों पुरानी बात कह रहा हूँ। उस स्त्री-पुरुष के बच्चे हुए। बच्चों के फिर बच्चे हुए और यह क्रम चलता रहा। उनके बीच आज की तरह कोई सम्बन्ध नहीं थे। यानी माता, पिता, भाई, बहन आदि। सबको सब तरह की आज़ादी थी। स्त्री और पुरुष ने इसका दुरुपयोग किया। शारीरिक सम्बन्धों की दृष्टि से अराजकता की स्थिति आ गई। व्यभिचार होने लगे। एक पुरुष अनेक स्त्रियों के साथ और एक स्त्री अनेक पुरुषों के साथ शारीरिक

सम्बन्ध रखने लगे। ऐसे में कई तरह की बीमारियाँ, बुराइयाँ, झगड़े, खून-खराबे होने लगे। इस अराजकता को रोकने के लिये कुछ नियम बने। बन्धन बने। सम्बन्धों की रचना हुई। समाज अर्थात् नियम बनाने और उनका पालन सुनिश्चित करने वाली संस्था। सम्बन्धों की रचना करते समय जो मूल भावना थी, वह आज समाप्त हो गई है।

पुष्पा : फिर भी सम्बन्धों को स्वीकार करना पड़ता है। तुम करते हो स्वीकार?

आनन्द : मैं? मैं केवल उन सम्बन्धों को मानता हूँ जो भावना के अलग-अलग रूपों में केवल मन से बनते हैं।

पुष्पा : मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों को .....।

आनन्द : नाम देने से पहले ध्यान रखो कि हमारे सम्बन्ध पवित्र हैं। हर सम्बन्ध की अपनी मर्यादायें होती हैं। उन मर्यादाओं का पालन करके हम एक-दूसरे के लिए बने रहेंगे।

पुष्पा : बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिये। तुम्हें पता है, कल तुम्हारे बारे में डैडी के सामने बात चली थी। सब बैठे थे। डैडी ने कहा कि उन्हें मेरे ऊपर विश्वास है, जो कि बाक़ी सबको भी है।

आनन्द : तुम्हारे ऊपर?

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : अच्छा, पवित्रता के अर्थ में। ख़ैर, इस विषय पर कल बात करेंगे। मैं चलता हूँ। बहुत थक गया हूँ। **(आनन्द उठकर चलने की तैयारी करने का अभिनय करता है। पुष्पा निकट आकर उसके कंधे पर बाँह रखकर सहारा लेती है। आनन्द पुष्पा का मस्तक चूमता है। एक-दूसरे के कंधों पर हाथ रखकर दोनों आगे बढ़ते हैं। पुष्पा आनन्द को विदा करती है। आनन्द जाता है। मौन। आनन्द वापस आता है।)** क्या विचार है पुष्पा, यह दृश्य कुछ गम्भीर था न?

पुष्पा : मुझे बात कम करनी पड़ी। इस बार भावुक स्पर्श नहीं था, थैंक गॉड। लड़की के सामने तुम किसी गढ़े हुए पात्र की तरह लगते हो। मानो तुम पहले से ही अनुभवी हो।

आनन्द : तुम्हें ऐसा लगा?

पुष्पा : तुम उसे सम्बन्ध क्यों समझाते हो ?

आनन्द : तुम गम्भीर पूछताछ कर रही हो, डीप एन्क्वायरी।

पुष्पा : सोच रही हूँ कि एक लड़का, अनुभवी लड़का एकान्त में एक लड़की के सामने सम्बन्धों की पवित्रता की बात क्यों कर रहा था?

आनन्द : अब तुम्हें फ़नी लगता है?

पुष्पा : इस बार इतना प्रभाव नहीं पड़ा।

आनन्द : धीरे-धीरे विकास होता जायेगा।

पुष्पा : लगता है, हो रहा है। सम्बन्धों की रचना कैसे हुई, आज पता लगा। बात तर्कसंगत लगती है। लेकिन तुमने कहा कि सम्बन्धों की रचना के पीछे जो मूल भावना थी, आज समाप्त हो गई है। इस बात को स्पष्ट करोगे?

आनन्द : नहीं। बीच में हम इस सिलसिले में बात नहीं कर सकते। दूसरी बार बात करेंगे।

पुष्पा : मैं केवल यह जानना चाहती थी कि तुम और मैं सम्बन्धों को किस रूप में देखते हैं।

आनन्द : तुम्हें पहले कभी नहीं लगा कि सम्बन्धों के प्रति हमारे दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है?

पुष्पा : तुमने कहा कि हर सम्बन्ध की अपनी मर्यादायें होती हैं।

आनन्द : तुम्हें नहीं लगता?

पुष्पा : मुझे तो अब समझ में आ गई है, लेकिन उस लड़की की समझ में आई होगी वह बात?

आनन्द : यह बात तो आगे चलकर मालूम होगी। थोड़ा विकास होने दो।

पुष्पा : तुमने लड़की के सामने या लड़की ने तुम्हारे सामने सम्बन्धों की पवित्रता का प्रस्ताव रखा था?

आनन्द : हाँ।

पुष्पा : तुम लोगों ने सम्बन्धों को कोई नाम दिया?

आनन्द : यह भी आगे चलकर मालूम करेंगे।

पुष्पा : लेकिन मैं समझ गई हूँ। तुम्हारी मनोवृत्ति को पहचानती हूँ।

आनन्द : केवल मेरी मनोवृत्ति से सब कुछ हो जायेगा क्या? सामने वाले पर भी निर्भर करता है।

पुष्पा : तुम्हारी मनोवृत्ति .....।

आनन्द : प्लीज़। हम आगे बढ़ें?

पुष्पा : मेरे सामने तुम अपने सम्बन्धों की पवित्रता का प्रस्ताव रखोगे?

आनन्द : तुम्हारी आँखें लाल हो रही हैं।

पुष्पा : यह हमारे सम्बन्धों की पवित्रता है न! प्रस्ताव रखो।

आनन्द : हम आगे बढ़ें?

(मौन। पुष्पा आनन्द के निकट आकर बैठती है। पुष्पा के चेहरे पर मुस्कुराहट है। नीली रोशनी झपकती है।)

पुष्पा : जानते हो, मेरी एक सहेली कल तुम्हारे बारे में पूछ रही थी।

आनन्द : अच्छा! फिर तुमने क्या जवाब दिया?

पुष्पा : तुम्हें कैसे पता लगा कि मैंने जवाब दिया।

आनन्द : मुझे मालूम है। मेरे बारे में तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा जवाब मेरा जवाब होगा।

पुष्पा : मैंने मना कर दिया। स्पष्ट इनकार। वह लड़की तुम्हें समझ ही नहीं सकती। इतनी समझदार नहीं है .....।

आनन्द : जितनी तुम हो।

पुष्पा : हाँ, वह ख़ूबसूरत ज़रूर है।

आनन्द : तुमसे ज़्यादा?

पुष्पा : मुझमें क्या रखा है? मैं काली, लम्बी और .....।

आनन्द : तुम मासूम हो। मासूमियत अपने आप में ख़ूबसूरत होती है।

पुष्पा : तुम्हें अच्छी लगती है?

आनन्द : बेहद।

पुष्पा : तुम्हारे लिये लड़की होशियार और फ्रैंक होनी चाहिये, जो तुम्हें समझ सके। मैं ही अभी तुम्हें पूरी तरह नहीं समझ सकी हूँ।

आनन्द : धीरे-धीरे समझ जाओगी। ऐसा करो, तुम अपने जैसी लड़की ढूँढ़ दो।

पुष्पा : अन्त में कहीं मेरा नम्बर न आ जाये।
(दोनों हँसते हैं। पुष्पा अधिक हँसती है। आनन्द पुष्पा को गाल पर चूमता है। मौन।)

आनन्द : कैसी हो?

पुष्पा : फ़ाइन।

आनन्द : तुम्हारी सहेली का मुँह उतर गया होगा।

पुष्पा : हमारा क्या जाता है? हमें होशियार लड़की चाहिये, बस।

आनन्द : तुमने कठिन प्रश्न निकाल लिये हैं?

पुष्पा : मैंने अभी पढ़ा ही नहीं है।

आनन्द : तो एक सप्ताह तक क्या किया?

पुष्पा : घर का काम।

आनन्द : तुम्हें घर का काम ही करना चाहिये। कुछ लोग बतौर फैशन पढ़ते हैं।

पुष्पा : तुम्हें गुस्सा आ गया न? दूसरी बार मैं ज़रूर पढ़ूँगी। **(गम्भीर चेहरा)** मैं फैशन के लिये पढ़ने वाली लड़कियों में से नहीं हूँ।

आनन्द : मुझे मालूम है। मेरा कोर्स पूरा हो गया है। तुम कठिन प्रश्न निकाल लो तो बता देना, आ जाऊँगा।

पुष्पा : तुम कल आ जाओ।

आनन्द : तो तुम सारी रात पढ़ाई करोगी और कल सूजी हुई आँखें लेकर मेरे सामने आओगी। वैसे ही जैसे मेरे साथ ज़िद करते हुए मुँह फुलाती हो।

पुष्पा : ठीक है। तुम आना।

आनन्द : अच्छी बात है। **(मौन।)** एक बात पूछूँ?

पुष्पा : आज पूछ रहे हो?

आनन्द : थोड़ी देर पहले तुमने एक बात कुछ ऐसी कही .....।

पुष्पा : मैंने कही! लेकिन आज मुझे तुम्हारा व्यवहार, स्पष्ट कहूँ तो, बदला हुआ लग रहा है।

आनन्द : शायद था। लेकिन जो बात तुमने कही, मैं उसी के बारे में सोच रहा हूँ।

पुष्पा : कि?

आनन्द : कि तुमसे ज़्यादा माफ़िक लड़की क्या मुझे मिल सकेगी?

पुष्पा : शादी के लिये?

आनन्द : हाँ .....। तुम्हारा क्या विचार है?

पुष्पा : ऐसी बात आज तुम कैसे कर रहे हो? तुम गम्भीर तो हो?

आनन्द : हाँ, मैं गम्भीर हूँ।

पुष्पा : इस सम्बन्ध में मैं सोच भी नहीं सकती।

आनन्द : तुम जवाब देने में जल्दी कर रही हो। सोचकर जवाब देना।

पुष्पा : तो फिर तुम भी मत सोचना।

आनन्द : लेकिन सोचने में क्या बुराई है?

पुष्पा : हो सकता है, न हो। मुझे लगता है इस मामले में मैं न कुछ बोल सकूँगी और न कुछ सोच सकूँगी।

आनन्द : क्यों?

पुष्पा : बस।

आनन्द : कोई कारण तो होगा।

पुष्पा : ज़रूरी नहीं है। तुम समझते क्यों नहीं हो कि इस विषय में मैं सोच भी नहीं सकती।

आनन्द : लेकिन कुछ तो ज़रूर होगा। बताओ।

पुष्पा : तुम इस बात को छोड़ो। **(बात बदलकर)** तुम्हारे घर में अब कैसा चल रहा है?

आनन्द : इसमें क्या हर्ज़ है अगर मैं तुम्हें पा लूँ? तुम्हें पाकर मैं उसे प्राप्त करूँगा जिसे मैंने समझा है। इतना ही नहीं, इस तरह तुम भी उसे प्राप्त करोगी जिसे तुमने समझा है। मैं सोचता हूँ हम यदि एक-दूसरे को नहीं पा सके तो दोनों ही कुछ खो देंगे।

पुष्पा : जहाँ तक पाने का सवाल है, मैं जीवन में तुमसे बढ़कर क्या पा सकूँगी? लेकिन सवाल यह नहीं है।

आनन्द : मतलब?

पुष्पा : आज की अवस्था में मैं शादी करना नहीं चाहती, एक बात तो यह है।

आनन्द : और दूसरी बात?

पुष्पा : मैं हमेशा किसी और ढंग से सोचती आई हूँ।

आनन्द : अब तक मैंने भी दूसरे ढंग से सोचा था। हो सकता है मैंने भी उसी ढंग से सोचा हो, जिस ढंग से हमेशा तुमने सोचा हो। लेकिन अब ..... तुमने किस ढंग से सोचा है हमेशा?

पुष्पा : लेकिन मैंने केवल सोचा है। हो सकता है .....। छोड़ो, मैं इस बारे में बात ही नहीं करना चाहती। पता नहीं क्यों लग रहा है मुझे ऐसा?

आनन्द : कैसा लग रहा है?

पुष्पा : लगता है तुम्हें, तुम्हारे पुरुष को अपने हृदय में मैंने जिस रूप में स्थापित किया है .....। मैं चाहती हूँ कि तुम उसे उसी रूप में बना रहने दो।

आनन्द : उस पुरुष का स्वरूप कैसा है आख़िर?

पुष्पा : प्लीज़, मत पूछो। मेहरबानी करके मत पूछो।

आनन्द : पूछने या बताने से कुछ बदलेगा नहीं।

पुष्पा : तुम ज़ोर डाल रहे हो .....। तुम्हें याद है, तुमने एक बार पवित्रता ..... सम्बन्धों के बीच ..... हम दोनों के सम्बन्धों के बीच पवित्रता ..... मेरा मतलब है कि ..... हमने महसूस किया है हमारा सम्बन्ध पवित्रता ही है।

आनन्द : बिल्कुल ठीक। और पवित्रता ही रहेगी।

पुष्पा : यही बस, अब तुम रहने दो।

आनन्द : लेकिन तुम्हारे हृदय में स्थापित छवि को मैं कहाँ तोड़ रहा हूँ या तुमसे छीन रहा हूँ या उसे अपवित्र कर रहा हूँ?

पुष्पा : मुझे महसूस होता है कि इस तरह छवि टूट रही है। और ऐसा मैं किसी भी कीमत पर नहीं चाहती।

आनन्द : तो तुम पवित्रता को इस रूप में ले रही हो?

पुष्पा : वह कैसी भी हो, मुझे छवि की चिन्ता है। जो मुझे प्रिय है, मेरी अपनी है।

आनन्द : तुम छवि से प्यार करती हो। मेरे पुरुष के एक अंश की छवि से प्यार करती हो।

पुष्पा : वही मेरे लिये सम्पूर्ण है।

आनन्द : तुम मुझे समझने की कोशिश करो।

पुष्पा : ठीक है। बोलो।

आनन्द : छवि किसकी है? मेरी ही?

पुष्पा : हाँ।

आनन्द : छवि भी बनी रहेगी और पवित्रता भी बनी रहेगी। तुम इस तरह सोचो, मैं समझता हूँ यही सोचने का सही तरीका है .....।

पुष्पा : तुम ज़्यादा ज़ोर मत डालो वरना .....।

आनन्द : केवल समझने की कोशिश करो।

पुष्पा : मैं कुछ भी समझना नहीं चाहती, नहीं चाहती। मेहरबानी करके तुम मेरी छवि को मेरे पास रहने दो। उसे न मैं निकाल सकूँगी और न बदल सकूँगी। जिसका मैं सम्मान करती हूँ, उससे शादी नहीं कर सकती। मुझे भावुक कह लो, कम-समझ कह लो, पुरातन पन्थी कह लो, पूर्वाग्रहग्रस्त कह लो, बेवकूफ़ कह लो, लेकिन मैं ऐसी ही हूँ।

आनन्द : तुम यहीं ग़लती कर रही हो।

पुष्पा : करने दो। मैं ठीक नहीं करना चाहती अपने आप को।

आनन्द : ठीक करो चाहे मत करो, मगर समझने की कोशिश तो करो। ठीक है कि हमारे बीच जो सम्बन्ध अब हैं, वे पवित्र हैं। किन्तु स्त्री-पुरुष के बीच शादी के बाद बनने वाले सम्बन्ध क्या पवित्र नहीं होते हैं? ये अपने आप में पवित्रतम् सम्बन्ध हैं। इस सम्बन्ध के कारण तुम्हारे हृदय में स्थापित छवि टूटने की कोई गुंजाइश नहीं है।

पुष्पा : हर सम्बन्ध की अपनी पवित्रता होती है। तुम सम्बन्ध को बदलकर उसे सीमित कर रहे हो।

आनन्द : पवित्रता उसमें भी है।

पुष्पा : मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। दरअसल मैं कुछ समझना भी नहीं चाहती। तुम आख़िर क्यों चाहते हो मुझसे यह सब?

आनन्द : क्योंकि तुम मानती हो कि तुम्हें मुझसे बेहतर और मुझे तुमसे बेहतर साथी नहीं मिलेगा।

पुष्पा : प्लीज़ ! (मौन) कल आ रहे हो?

आनन्द : देखूँगा..... । चलता हूँ।

(पुष्पा और आनन्द उठते हैं। कुछ क़दम आगे बढ़कर रुकते हैं। काफ़ी देर तक एक–दूसरे को देखते रहते हैं। आनन्द पुष्पा का चेहरा दोनों हाथों में पकड़कर उसके होंठ चूमता है। पुष्पा उसे देखती रहती है। आनन्द चला जाता है। मौन। आनन्द वापस आता है।) पुष्पा, इस दृश्य में खींचतान ज़्यादा हो गई।

पुष्पा : **(आराम से फैलकर नीचे बैठते हुए)** पहले कुछ और लगा था। ओफ़ ..... यह भी प्रेम की एक साधारण कहानी लगती है।

आनन्द : प्रेम कहाँ है? और कहानी ..... ।

पुष्पा : अगर यह प्रेम नहीं है तो न जाने क्या है? मैं थक गई हूँ।

आनन्द : लेकिन तुम्हें पहले क्या लगा था?

पुष्पा : यही कि जो खेल हम खेलने जा रहे हैं, वह दूसरे खेलों से बिल्कुल अलग होगा।

आनन्द : ऐसा नहीं हुआ?

पुष्पा : एक सीमा तक हुआ है। हम अभिनय कर रहे हैं।

आनन्द : **(पुष्पा का चेहरा देखते हुए)** कुछ कहानियों का।

पुष्पा : पात्रों का।

आनन्द : सम्बन्धों का, सम्बन्धों की पवित्रता का।

पुष्पा : छवि का, विवाह का।

आनन्द : छवि के टूटने का, न टूटने देने की ज़िद का।

पुष्पा : हम अभिनय कर रहे हैं।

(मौन)

आनन्द : लेकिन दूसरे तरीके से तुम्हें कैसा लगेगा?

पुष्पा : बस जैसा है, लगेगा।

आनन्द : बिल्कुल साधारण है। केवल एक-दो समस्यायें हैं।

पुष्पा : हम में से कोई और क्या माँग सकता है भला, इस साधारणता के अलावा।

(मौन)

आनन्द : अब तुम्हें लगता है कि लड़की मासूम है?

पुष्पा : हाँ, मासूम मगर दृढ़ है। मेरा मतलब, टफ़ है।

आनन्द : अन्त तक दृढ़ रही।

पुष्पा : मुझे वहाँ अच्छा लगा जहाँ तुम कह रहे थे, यदि एक-दूसरे को नहीं पा सके तो हम दोनों कुछ न कुछ खोयेंगे।

आनन्द : सचमुच इसमें भावुकता है।

पुष्पा : अब तुम्हें कैसा लग रहा है, खोने और पाने के मामले में?

आनन्द : शून्य तो रह ही जाता है। भले ही हमारी भावनायें कभी ठण्डी हो जायें और कभी गरम। लेकिन शून्य तो शून्य है।

पुष्पा : शून्य, शून्य है। तुम ठीक कहते हो।

आनन्द : और वह शून्य किसी और चीज़ से नहीं भरा जा सकता। तुम्हें पाकर मेरे पास भले ही बहुत कुछ हो .....।

पुष्पा : फिर भी शून्य, शून्य है। शून्य छोड़ने और भरने का सिलसिला चलता रहता है।

आनन्द : इस खेल को अब हम पूरा कर लें।

(पुष्पा आनन्द के सामने बैठती है। नीली रोशनी झपकती है।)

पुष्पा : मैंने कठिन प्रश्न निकालकर रखे हैं। बताऊँ?

आनन्द : तुम आज सुस्त लग रही हो। आँखें सूजी हुई हैं।

पुष्पा : सारी रात कठिन प्रश्न निकालती रही हूँ।

आनन्द : इतने थे?

पुष्पा : नहीं, एक ही था।

आनन्द : अच्छा बताओ?

पुष्पा : छोड़ो, हम पढ़ाई शुरू करते हैं।

आनन्द : वह कठिन प्रश्न तो बताओ।

पुष्पा : फ्रैंकली?

आनन्द : हाँ-हाँ।

पुष्पा : कल तुमने जबसे शादी के बारे में कहा है, मेरे अन्दर डर बैठ गया है।

आनन्द : इसलिये। **(आनन्द पुष्पा को अपनी तरफ खींचता है। धीरे से छुड़ाकर पुष्पा सीधी होकर बैठ जाती है और आनन्द को घूरने लगती है।)** आज मैं पहले चाय पीऊँगा।

पुष्पा : कह देती हूँ।

आनन्द : नहीं, बैठो।

पुष्पा : बोलो।

आनन्द : बस, बैठो। **(आनन्द बाँह पुष्पा के कंधे पर रखता है। दूसरे हाथ में पुष्पा का हाथ लेकर मसलता है।)** बहुत सर्दी है। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है।

पुष्पा : **(ख़ुश्क आवाज़ में)** ठीक है।

आनन्द : तुम झूठ बोल रही हो आज। **(मुँह पुष्पा के क़रीब लाकर गाल पर हल्का चूमता है।)** सच बताओ।

पुष्पा : **(आनन्द की गोद में मुँह छिपाकर)** कल से मूड ख़राब है। अब ठीक हो जायेगा।

आनन्द : मेरे घर में आज फिर .....। अपसैट कर दिया।

पुष्पा : आर्थिक समस्या?

आनन्द : हाँ फिर .....।

पुष्पा : तुम पत्नी नौकरी करने वाली लाना।

आनन्द : तुम्हें नौकरी कब मिल रही है?

पुष्पा : जब तुम लेकर दोगे।

आनन्द : तुम मेरे दफ़्तर में कोशिश करना।

पुष्पा : भाग्य।

आनन्द : **(पुष्पा को अपनी ओर खींचता है। उसके हाथ चूमता है, गर्दन चूमता है और सटा लेता है।)** तुम्हें डर लग रहा है।

पुष्पा : तुम यह क्या कर रहे हो आज?

(पुष्पा छुड़ाने की कोशिश करती है।)

आनन्द : रुको, थोड़ा ठहरो। **(आनन्द पुष्पा को बाँहों में जकड़ लेता है। अपने शरीर को पुष्पा के शरीर के साथ रगड़ता है। पुष्पा आनन्द को घूरकर देखती है। पुष्पा ज़बरदस्ती ख़ुद को छुड़ाये, इससे पहले आनन्द उसे छोड़ देता है। पुष्पा लगातार आनन्द को घूरती रहती है।)**

पुष्पा : मैं बाहर जा रही हूँ। महरबानी करके ऐसी हरक़त फिर मत करना।

आनन्द : लेकिन .....।

पुष्पा : मुझे सब समझ में आ गया है कि तुम क्या चाहते हो।

आनन्द : प्लीज़ तुम भूल जाओ। मैं कुछ और करना चाहता था।

पुष्पा : मैं यह बात भी याद रखूँगी।

आनन्द : तुम भूल जाओ ......। मुझे माफ़ नहीं करोगी? **(पुष्पा मौन)**

मेहरबानी करके भूल जाओ। **(पुष्पा मौन)** मुझे माफ़ कर दो ..... कह दो मैंने तुम्हें माफ़ किया। **(आनन्द पुष्पा को झिंझोड़ता है)** बोलो।

पुष्पा : क्या कहूँ? कहने लायक तुमने कुछ छोड़ा ही नहीं है। ख़ैर, अब छोड़ो। मैं निभाऊँगी तुम्हारे साथ।

आनन्द : माफ़ कर दिया न?

पुष्पा : तुमने जो सम्बन्ध बनाना चाहा है, मैं समझती हूँ .....।

आनन्द : नहीं, जो सम्बन्ध तुमने बनाना चाहा है, मैं उसी के अनुसार चलना चाहता हूँ।

पुष्पा : मैं कोशिश करूँगी, तुम्हें समझने की।

आनन्द : मुझे पवित्रता उसी रूप में स्वीकार है जिस रूप में तुमने उसे समझा और चाहा है। वही सम्बन्ध स्वीकार है मुझे।

पुष्पा : मैं मन को बदलने की कोशिश करूँगी।

आनन्द : इसमें बदलना क्या है? तुम कह दो माफ़ किया, बस।

पुष्पा : बस!

आनन्द : मुझे मालूम है, मैं कितना नीचे जा रहा हूँ। इसका हिसाब मैं ख़ुद से बाद में लूँगा।

पुष्पा : तुम्हें नीचे गिरने के लिये कौन कहता है?

आनन्द : तुम भूल जाओ।

पुष्पा : तुम समझते हो, यह आसान काम है?

आनन्द : केवल एक बार भूल जाओ। वायदा करता हूँ, फिर कभी ऐसा नहीं होगा।

पुष्पा : देखूँगी।

आनन्द : किसी भी तरह मैं तुम्हें अपनी समझना चाहता हूँ। तुम्हारे स्वीकार किये हुए पहले रूप में ही सही।

पुष्पा : मैंने कहा, मैं कोशिश करूँगी।

आनन्द : तो मैं चलूँ अब! कल आऊँगा।

(पुष्पा चुप है। आनन्द पुष्पा का मस्तक चूमता है। आनन्द बाहर जाता है। मौन। आनन्द वापस आता है।)

हैलो ज़िद्दी, पुष्पा !

पुष्पा : हैलो भावुक, कमज़ोर! मैंने कहा था न, तुम्हारा पात्र पहले से गढ़ा हुआ लगता है, अनुभवी।

आनन्द : गढ़ा हुआ होता तो हारता नहीं।

पुष्पा : यह हार थी?

आनन्द : हार ही तो थी।

पुष्पा : तुम समझते हो। ताज़ा घटना में जिस चतुराई के साथ तुमने लड़की को जकड़ा, उसके पीछे जान-बूझकर फैलाया हुआ तुम्हारा जाल था।

आनन्द : तुमने पकड़ लिया।

पुष्पा : कमज़ोर ! लड़की को पाने के लिये तुमने सेक्स का सहारा लिया।

आनन्द : मेरी कोशिश उसे सेक्स के रास्ते पर लाकर, वहाँ रोककर सोचने के लिये छोड़ देने की थी कि उसने पहले जिस छवि की कल्पना की थी, उस छवि को लेकर उसके विचार कैसे बदल गये हैं? इस तरह उसके मन-मस्तिष्क में बनी छवि बदल जाती।

पुष्पा : हाँ, यदि वह उस रास्ते पर आ जाती।

आनन्द : मैंने उसे रास्ते पर लाना चाहा था। मेरा और कोई इरादा नहीं था। लेकिन वह आई नहीं।

पुष्पा : जब तुम्हारी यह चालाकी नहीं चली और तुम्हें लगा कि तुम्हारी छवि ख़राब हो जायेगी, तुमने गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया। माफ़ी माँगना शुरू कर दिया।

आनन्द : तुमने मेरे कमज़ोर पुरुष को देख लिया।

पुष्पा : मैंने तुम्हारे इससे भी ज़्यादा कमज़ोर पुरुष को देखा है, लेकिन मैं अभी बताऊँगी नहीं।

आनन्द : प्लीज़।

पुष्पा : हमारा खेल रह जायेगा।

आनन्द : याद रखना।

पुष्पा : याद रखूँगी।

(मौन)

आनन्द : लेकिन वह सेक्स वाली कोशिश भी उसे पवित्रता की ओर ले जाती।

पुष्पा : तुम्हारी चाही हुई पवित्रता की ओर। आख़िर तुमने उसकी छवि तोड़ दी।

आनन्द : छवि तोड़ना यानी उसे हराना। उसने तो मुझे हराया था!

पुष्पा : लेकिन तुम्हारी दोस्ती के लिये ख़तरा पैदा हो गया होगा।

आनन्द : इसीलिये तो मैं बार-बार माफ़ी माँग रहा था।

पुष्पा : मेरी समझ में नहीं आया कि उसके मन में बैठी छवि के अनुरूप तुमने स्वयं को कैसे स्वीकार कराना चाहा था।

आनन्द : इसका यह कारण हो सकता है कि मैं किसी भी मूल्य पर उसे छोड़ना नहीं चाहता था। जिस तरह उसके पास मन में स्थापित मेरी छवि के बदलाव को स्वीकार करने के लिये कोई कारण नहीं है, उसी तरह मेरे पास किसी भी मूल्य पर उसे न छोड़ने के लिये कोई कारण नहीं है।

(मौन)

पुष्पा : **(व्यंग्यपूर्वक)** तुम्हारी चतुराई, आनन्द!

आनन्द : हवा हो गई।

पुष्पा : लड़की की पवित्रता !

आनन्द : **(स्वीकार करते हुए)** बनी रही। हम खेल को अब पूरा कर लें।

(पुष्पा आनन्द के सामने बैठ जाती है। नीली रोशनी झपकने लगती है।) तुम्हें पत्र भेजा था।

पुष्पा : मिला था।

आनन्द : इतने दिनों के बाद भी तुम्हारा जवाब नहीं मिला। **(पुष्पा मौन)** क्या उत्तर है तुम्हारा? **(पुष्पा मौन)** क्या है तुम्हारा उत्तर? **(पुष्पा मौन)** तुम बताती क्यों नहीं हो? आख़िर तुम क्या चाहती हो?

पुष्पा : आख़िर?

आनन्द : हाँ, आख़िर।

पुष्पा : चाहते तो तुम हो।

आनन्द : हाँ। मैंने पत्र में जो कुछ लिखा था, तुम्हें मंज़ूर है? **(पुष्पा मौन)** मंज़ूर है वह तुम्हें? **(पुष्पा मौन)** सम्बन्धों को इस तरह बर्दाश्त करने, तुम्हारे शब्दों में निभाने से ज़्यादा अच्छा यह होगा कि हम एक-दूसरे से कट जायें। डिटैच हो जायें। हमारे बीच अब कोई गरमाहट बाक़ी नहीं है। यह सच है न? **(पुष्पा मौन)** आख़िर तुम जवाब क्यों नहीं दे रही हो?

पुष्पा : क्या जवाब दूँ?

आनन्द : यही कि तुम आख़िर चाहती क्या हो?

पुष्पा : वही जो तुम चाहोगे।

आनन्द : संन्यास? **(पुष्पा मौन। गुमसुम। आनन्द को देखती रहती है।)** मेरे सिर में दर्द होने लगा है, बोलो। **(पुष्पा मौन।)** तुम कुछ बोलो! बोलो!! बताओ!!!

पुष्पा : **(ख़ुश्क गले से)** जिस तरह तुम चाहते हो, उस तरह मैं न निभा सकूँगी और न ही सम्बन्धों का टूटना बर्दाश्त कर सकूँगी।

आनन्द : दोनों में से एक बात चुननी होगी तुम्हें।

पुष्पा : जैसा तुम चाहोगे।

आनन्द : तो सब कुछ टूट जाने दो। सब कुछ बिखर जाने दो। **(पुष्पा मौन)** ठीक है?

पुष्पा : मैं पत्र का उत्तर लेकर आई थी। लेकिन अब देने की ज़रूरत नहीं है।

आनन्द : बताया है तो दे दो।

पुष्पा : नहीं।

आनन्द : पत्र नहीं देना चाहती हो तो बता दो। तुम क्या कहना चाहती थीं?

पुष्पा : अब देना नहीं चाहती।

आनन्द : अब से तुम्हारा मतलब?

पुष्पा : बस।

आनन्द : मुझे दो। मुझे फ्रैंकनेस अच्छी लगती है। **(आनन्द पत्र को पुष्पा के हाथ से छीनने की कोशिश करता है लेकिन वह उसे छीनने नहीं देती। पत्र को फाड़कर पुष्पा वहीं फेंकने का अभिनय करती है।)** तुम बेवकूफ़। **(आनन्द पुष्पा को चाँटा मारता है)** अब बस। तुम मेरी छवि को बदलना नहीं चाहती थी न! मैंने बिगाड़ दिया है।

पुष्पा : मुझे मालूम है कि क्या बदला, क्या बिगड़ा और क्या गहरा हुआ?

आनन्द : तुम अब ..... तुम ..... **(पुष्पा आनन्द को रोकती है)** हम .....।

पुष्पा : बस आनन्द, बस। खेल को यहीं रोकते हैं। **(आनन्द शांत होता है। पुष्पा गाल को मसलते हुए)** तुम्हारा हाथ बहुत भारी है। उसे भी तुमने इतना ही ज़ोर से चाँटा मारा था?

आनन्द : **(लम्बी ख़ामोशी के बाद)** तुम्हें संदेह है?

पुष्पा : पहले लगा था कि तुम अन्त तक कमज़ोर रहोगे। लेकिन बाद में तुमने सब कुछ तोड़ दिया। मुझे अच्छा लगा।

आनन्द : हो सकता है चाँटा मारते समय मैं गुस्से में रहा होऊँ लेकिन बाद में पहले की तरह मैंने उसके सामने गिड़गिड़ाया हो। माफ़ी माँगी हो। हो सकता है उसने भी चाँटा मारा हो या फिर लात उसी ने मारी हो और अब मैं ग़लत बता रहा होऊँ।

पुष्पा : अब जो कुछ कहोगे, मानना पड़ेगा। लेकिन इतना निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि इस तरह की लड़की चाँटा या लात नहीं मार सकती। **(व्यंग्यपूर्वक)** मुझे तो तुम कायर लगे कि तुमने उसे चाँटा मारा।

आनन्द : ठीक बात है। उस समय मैं पागल हो गया था। मेरे हाथों से कुछ छिन रहा था। .....।

पुष्पा : **(आनन्द की ओर ध्यान न देकर)** हो सकता है तुमने चाँटा इसलिये मारा हो, क्योंकि ऐसी चीज़ जो तुम्हारी अपनी थी ''वह'', उसे तुम हमेशा के लिये खोने जा रहे थे। यह बात तुम बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे।

आनन्द : अपनी बात से तुम ''हो सकता है'' निकाल दो। हाऊ सैन्टीमेन्टल!

पुष्पा : आन योअर पार्ट, डियर। तुम किसी भी कीमत पर तोड़ना नहीं चाहते थे, लेकिन दूसरा कोई रास्ता भी नहीं था तुम्हारे सामने।

आनन्द : तुम ठीक कह रही हो।

पुष्पा : किसी भी हालत में उसे तुम छोड़ना नहीं चाहते थे, क्योंकि तुम्हारी नसों में हमदर्दी दौड़ रही थी। तुमने यह ग़लती भी महसूस की कि वैसी ज़िद्दी और तुम्हारे विचारों की प्रशंसक लड़की के सामने तुमने विवाह का प्रस्ताप रखा था। इसीलिये बाद में यह विचार तुमने छोड़ दिया।

आनन्द : प्लीज़, तुम इस तरह विश्लेषण मत करो। मेरी अन्दरूनी कमज़ोरियों पर तुम अंगुली रख रही हो।

पुष्पा : विवाह का विचार तुमने इसलिये भी छोड़ा, क्योंकि तुम्हारे अन्दर किसी धुंधली सतह के नीचे यह इच्छा छिपी हुई थी कि किसी तरह तुम्हारी पुरानी छवि बनी रह जाये।

आनन्द : मैं कह नहीं सकता।

पुष्पा : तुमने छवि तोड़ने की नहीं, बदलने की कोशिश की थी।

आनन्द : शायद ऐसा ही था।

पुष्पा : वयस्क होते हुए भी सम्भव है, वह तुम्हारे सेक्सुअल स्पर्शों, इशारों को समझ नहीं पाई हो।

आनन्द : हो सकता है।

पुष्पा : हो सकता है, क्या होता है आनन्द? तुम कुछ निश्चित क्यों नहीं कह सकते इस मामले में? तुमने बताया था कि उसकी मासूमियत तुम्हारे लिये ख़ूबसूरती थी।

आनन्द : हाँ थी और है।

पुष्पा : तब तो मेरा बताया हुआ कारण बिल्कुल ठीक है। वह मासूम थी, वह मासूम है। उसे जब सेक्स के जाल में फँसाने में तुम्हें सफलता नहीं मिली तो तुम डर गये। गिड़गिड़ाकर तुमने वही सम्बन्ध, ज्यों का त्यों, जिस तरह लड़की ने चाहा था, बनाये रखना चाहा।

आनन्द : मुझे मालूम नहीं है पुष्पा, मुझे मालूम नहीं है। मेहरबानी करके तुम चुप हो जाओ।

पुष्पा : ..... और अन्त में इतना ग़लत विश्वास कि चाँटा मारने के बाद तुमने समझ लिया कि लड़की के मन की छवि तोड़ नहीं रहे हो, हमेशा के लिये बिगाड़ रहे हो .....।

आनन्द : पुष्पा, हद हो गई अब तो। बन्द करो यह सब प्लीज़, बन्द करो।

पुष्पा : तुम इतने कमज़ोर हो कि उसे अब तक अपने मन से निकाल नहीं पाये हो।

आनन्द : **(कमज़ोर आवाज़ में)** सच है कि निकाल नहीं सका हूँ .....। वह मेरे सामने नहीं है, लेकिन क्या वह मेरे साथ नहीं है? वह मेरे साथ है। मेरे मन में अब भी उसकी छवि है जो घुटन भरे क्षणों में मेरे साथ हमदर्दी दिखाती है और मैं ..... बहुत हल्का महसूस करने लगता हूँ।

पुष्पा : कितने भावुक और कमज़ोर हो तुम।

आनन्द : हूँ। मुझे पता है कि मैं भावुक भी हूँ और कमज़ोर भी। फटे हुए टुकड़ों को जोड़कर मैंने पत्र पढ़ा था। उसने लिखा था कि मेरी सेक्स वाली हरक़त के पीछे उसे अन्दर बैठा शैतान नज़र आया था कि वह उसे कभी भुल। नहीं पायेगी। लेकिन मुझे मालूम है कि उसका मतलब क्या था?

पुष्पा : सैक्स वाली बात का प्रभाव लड़की के मन पर अधिक समय तक बना रहने वाला नहीं है। तुम्हारी छवि बनी ही रही होगी। बनी रहेगी, जीवनपर्यन्त। ऐसा होता है अक्सर।

आनन्द : मुझे कुछ भी मालूम नहीं है, कुछ मालूम नहीं है।

(मौन)

पुष्पा : यू ओल्ड यंग मैन ! तुमने टुकड़ों को जोड़कर पढ़ा।

आनन्द : अब यह सब समाप्त करो।

पुष्पा : मैं चिपकी हुई नहीं हूँ, जबकि तुम अब भी उस लड़की के साथ जुड़े हुए हो।

(लम्बा मौन)

पुष्पा : काफी समय हो गया है।

आनन्द : लगता तो ऐसा ही है।

पुष्पा : **(अचानक दाहिनी तरफ़ ध्यान जाते ही)** अरे, डॉक्टर अभी अपनी जगह अटल है। उसे शायद याद नहीं कि हम उनके साथ हैं।

आनन्द : शायद!

पुष्पा : मैं उन्हें बुला लाऊँ? **(वह जाती नहीं है)** अगर इसी तरह उनका इन्तज़ार किया तो हम पहले वाली अवस्था में चले जायेंगे। नौका विहार भी तो हमसे छूटा जा रहा है। उनकी तरह डूबने वाले जहाँ होते हैं, किसी न किसी तरह की गड़बड़ होती ही है।

आनन्द : उन दोनों को यहाँ नहीं आना चाहिये था। किसी होटल में कमरा ले लेते।

पुष्पा : देखो, होटल वाली बात हम दोनों के बीच ही रहने दो। जब तक साथ होंगे, मज़ा लेंगे।

आनन्द : कुछ है ऐसा, जो हमारा व्यक्तिगत हो?

पुष्पा : कुछ न कुछ व्यक्तिगत सबके पास होता है। लेकिन तुम उसे दूसरों के सामने कह दोगे। मैं तुम्हारा स्वभाव जानती हूँ और कहने के बाद तुम गौरव समेटना चाहोगे।

आनन्द : उन्हें आ जाना चाहिये .....। अब हम नौका विहार के लिये चल सकेंगे?

पुष्पा : जितनी देर ये लोग साथ बैठे हैं, उतनी देर में तो उनके बीच दूरियाँ पैदा हो जानी चाहिये थीं।

आनन्द : हो सकता है, निभा रहे हों। एक-दूसरे के साथ उन्हें फ्रैंक होना चाहिये।

पुष्पा : कभी-कभी फ्रैंक हुआ नहीं जाता है। हुआ ही नहीं जाता। **(मौन)** अभी सब लोग बैठे हैं। **(आनन्द और पुष्पा चारों ओर देखते हैं)**

आनन्द : क्या हम दोनों वापस नहीं चल सकते?

पुष्पा : कैसे? इन दोनों को छोड़कर?

आनन्द : यही बात तो थकाती है। वे दोनों हमें भूल गये हैं और उन्हें याद करते हुए हम यहाँ बैठे हैं, उनके लिये।

पुष्पा : हमें नौका विहार के लिये पहले ही चल देना चाहिये था। उनका इन्तज़ार किये बिना। डॉक्टर और नर्स इस सीमा तक एक-दूसरे से निभा रहे हैं कि एक-दूसरे की हत्या करके भी चुप हैं। अफ़सोस!

आनन्द : अफ़सोस में मैं तुम्हारे साथ हूँ। खाने की चीज़ें कहाँ हैं? यही बची हैं बाक़ी !

पुष्पा : इन चीज़ों का कम से कम इस्तेमाल करके, आओ यहाँ रहकर देखें। कितने दिन निकाले जा सकते हैं?

आनन्द : आइडिया !

पुष्पा : और इन चीज़ों के समाप्त हो जाने के बाद हम ख़ुद को इनके सिवा कितने दिन रख पायेंगें?

आनन्द : वेलकम आइडिया !

पुष्पा : इस तरह हम अपनी ताक़त की जाँच कर सकेंगे।

आनन्द : मगर इसके लिये इच्छा का होना बहुत ज़रूरी है।

पुष्पा : हाँ, है। ऐसा यहीं हो सकता है।

आनन्द : मुश्किल है। यह मुश्किल है, पुष्पा। ये सब चीज़ें पेट के लिये हैं। मगर इनके अलावा भी कुछ चीज़ें ज़रूरी हैं।

पुष्पा : तुम कहोगे कि बिस्तर में जाने से पहले दाँत साफ़ करने हैं।

आनन्द : तुम्हें बिस्तर पर निरोध की ज़रूरत होगी।

पुष्पा : ये सब महत्वपूर्ण ज़रूरतें हैं। लेकिन सब एक तरफ़ रखकर ख़ुद को जाँचना होगा।

आनन्द : हममें से दुर्गन्ध आयेगी। तुम्हें मालूम है, इन चीज़ों के बिना मेरा काम चल नहीं पाता।

पुष्पा : गोया मेरा काम चल जाता है! लेकिन तुम कमज़ोर हो।

आनन्द : आरोप मेरे ऊपर लग रहा है, जबकि हैं बराबर के भागीदार। **(मौन)** पुष्पा फोल्डिंग कुर्सियाँ अपने पास खींच लेती है। कुर्सियों की तरफ़ देखते रहने के बाद वह आनन्द की तरफ़ देखती है। आनन्द उसकी तरफ़ नहीं देख रहा है। पुष्पा कुर्सियाँ एक-दूसरे के सामने रखती है। आनन्द देखता है। पुष्पा उठती है। कुछ क़दम आगे बढ़कर वापस वहीं लौटती है। आनन्द को देखती है।)

पुष्पा : तुम इस कुर्सी पर बैठ जाओ।

आनन्द : **(कुछ न समझते हुए)** हूँ?

पुष्पा : तुम थोड़ी देर इस पर बैठ जाओ तो वह डॉक्टर वाली बची-खुची बात भी पूरी कर लें।

आनन्द : **(अब भी कुछ न समझते हुए)** बची-खुची। बची-खुची से तुम्हारा क्या आशय है, पुष्पा? और फिर यह बात तो हम बिल्कुल पूरी कर चुके थे।

पुष्पा : नहीं, बिल्कुल पूरी नहीं हुई थी।

आनन्द : लेकिन पहले तुम ही तो न करने की ज़िद कर रही थीं।

पुष्पा : हाँ, उस समय मैं मना कर रही थी। इसलिये कहती हूँ .....।

आनन्द : अब मैं इन्कार करता हूँ, सॉरी।

पुष्पा : बची-खुची आज पूरी कर ही लें। ताकि भविष्य में यह बात मेरे आन्दर न रहे।

आनन्द : अब फिर यह बची-खुची कहाँ से आ गई।

पुष्पा : है। प्लीज़, तुम इस कुर्सी पर बैठो। (कुर्सी की तरफ़ इशारा करती है।)

आनन्द : एक बार शुरू कर दिया था, तुम्हें पता है। फिर मैं ही चिल्लाकर उठ गया था। अब मुझसे यह नहीं होगा। इसे छोड़ो, पुष्पा।

पुष्पा : प्लीज़ !

आनन्द : मैं फिर चिल्ला पड़ूँगा। पुष्पा, तुम मुझे छोड़ दो। वैरी सॉरी।

पुष्पा : **(एक कुर्सी पर बैठते हुए)** आनन्द, तुम एक छोटी सी बात के लिए इन्कार कर रहे हो!

आनन्द : मैं किसी भी हालत में तुम्हारे सामने कुर्सी पर नहीं बैठ सकता। **(आनन्द कुर्सी उठाकर समेटता है, रख देता है। पुष्पा खोलकर सामने रखती है। आनन्द समेटकर रखता है। पुष्पा खोलकर रखती है। आनन्द उठकर आगे चला जाता है। वापस लौटकर कुर्सी समेटकर थैले में रखता है। पुष्पा कुर्सी को थैले में से निकालकर,**

थैला फ़ेंककर, कुर्सी खोलकर रखती है। आनन्द पुष्पा को देखता रहता है। मौन।)

आनन्द : जब बात पूरी हो गई है तो पता नहीं क्यों, तुम उसे फिर शुरू करना चाहती हो।

पुष्पा : पूरी नहीं हुई है। मैं पूरी करना चाहती हूँ।

आनन्द : पूरी।

(मुँह बिगाड़कर आनन्द कुर्सी पर बैठता है।)

पुष्पा : **(गर्वपूर्वक)** उस दिन वाली मुलाक़ात में मैं डॉक्टर से बहुत प्रभावित हुई थी। प्रभावित शुरू से ही थी लेकिन गहराई से प्रभावित उसी दिन हुई। आनन्द, तुम्हें यह सब बहुत व्यक्तिगत महसूस हो सकता है।

आनन्द : **(आश्चर्य। शान्त लहजा)** यू गो ऑन।

पुष्पा : मुलाक़ात के दौरान जिस तरह बातें चलीं, आगे बढ़ीं और जिस तरह मैंने डॉक्टर की कमज़ोरियों को पकड़कर उसे लाजवाब किया, मैं मानती हूँ कि उससे मेरे अन्दर अहम् पैदा हुआ था। अहम् के कारण तुम्हें आभास हुआ था कि इसने डॉक्टर के व्यक्ति को चुनौती दी है, सवाल पूछ-पूछकर हराया है और बाद में उसे ठुकरा दिया है। तुम्हें लगता है न आनन्द, कि ये बातें अभी तक स्पष्ट नहीं हुई हैं?

आनन्द : तुम कह रही हो, मैं सुन रहा हूँ। पहले इस खेल में शामिल होने से तुमने इन्कार किया था शायद।

पुष्पा : मेरे अहम् ने, न चाहते हुए भी डॉक्टर से शादी करने से इन्कार कराया था मुझसे।

आनन्द : और मुझसे शादी करके तुमने समझा कि तुम डॉक्टर को चोट पहुँचा रही हो।

पुष्पा : नहीं. मैंने सोचा नहीं था। लेकिन हो सकता है, ऐसा लगता हो।

आनन्द : है। इसीलिये तुम डॉक्टर को साथ लेकर आती हो। यहाँ भी लाई हो।

पुष्पा : **(उसी प्रकार गर्व से)** आइ स्टिल लाइक डॉक्टर। मैं अब भी इससे इन्कार नहीं कर सकती। यही कारण है कि मैंने उसे अपना दोस्त बनाये रखा है।

आनन्द : और तब तक बनाये रखोगी, जब तक उसे लाइक करोगी।

पुष्पा : डेफीनेटली।

आनन्द : और तुम्हारा अहम् तब तक यही मानता रहेगा कि तुम डॉक्टर को चोट पहुँचा रही हो।

पुष्पा : यह ग़लत है।

आनन्द : तुम इससे इन्कार करती हो?

पुष्पा : पता नहीं। मुझे यह भी नहीं पता कि इस बात की तुम्हारे ऊपर क्या प्रतिक्रिया होने वाली है। मैं जानना चाहती भी नहीं हूँ। प्रतिक्रिया कोई भी हो मैं .....।

आनन्द : तुम मेरी किस तरह की प्रतिक्रिया की बात कर रही हो, मुझे नहीं मालूम। तुमने कहा था, तुम इसे पूरा करोगी। पूरा हो गया?

पुष्पा : मुझमें पूरा होकर हम दोनों के बीच आ गया है।

आनन्द : समाप्त फिर भी नहीं हुआ है।

पुष्पा : शायद।

(मौन। आनन्द कुर्सी से उठता है। पुष्पा भी उठती है। पुष्पा कुर्सियाँ समेटकर सामान सहेजने लगती है।)

आनन्द : **(दाहिनी ओर मुँह घुमाकर)** डॉक्टर, अब तो तुम्हें उठना चाहिये। हम चलने की तैयारी कर चुके हैं। **(पुष्पा से)** इन लोगों ने इतनी देर तक बैठकर आख़िर क्या किया है? हमारी तरह पति-पत्नी होते तो वे भी खेल खेलते।

पुष्पा : नर्स ने डॉक्टर के फ्री सेक्स में योग दिया। वह हमेशा नर्स या उसकी श्रेणी की लड़कियों से सहयोग की माँग करता है, क्योंकि वे उसके अधीन

काम करती हैं। डॉक्टर और नर्स के विवाह की बात मुझे अफ़वाह लगती है।

(मौन)

आनन्द : रास्ता लम्बा है। रास्ते के लिये और क्या-क्या बचा है?

पुष्पा : दोहराव-दोहराव।

आनन्द : तुम ठीक कहती हो, दोहराव। **(दाहिनी ओर देखकर)** वैरी गुड, आख़िर वे उठ गये।

पुष्पा : आ रहे हैं?

आनन्द : लगता तो है।

पुष्पा : **(सामान सहेजकर रखने के बाद)** ठीक।

आनन्द : **(दोनों हाथों की दो-दो अंगुलियों से दोनों आँखें बन्द करके और फिर हाथ गिराकर, आँखें खोलकर एक क़दम आगे बढ़कर दूसरा उससे मिलाते हुए)** एम आई आउट?

पुष्पा : **(आनन्द के पैरों को जाँचते हुए)** इट्स पज़लिंग अगेन।

आनन्द : पज़लिंग। खेल के नियमों के ख़िलाफ़, आँखें खोलने पर पज़लिंग।

पुष्पा : यस डीयर, डार्लिंग।

(ब्लैक आउट)



अनुवादक

भगवान अटलानी

जन्म : 10 मार्च, 1945 लाड़काणा (सिन्ध)

शिक्षा : बी.एससी.

पूर्व अध्यक्ष : राजस्थान सिन्धी अकादमी

पूर्व अधिकारी : भारतीय स्टेट बैंक

हिन्दी में बारह और सिन्धी में सात पुस्तकें प्रकाशित। इनमें से चार उपन्यास, चार कहानी संग्रह, चार एकांकी संग्रह, तीन नाटक, दो निबन्ध संग्रह, प्रौढ़ साक्षरों के लिये एक कहानी पुस्तक और एक प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन। एक पुस्तक हिन्दी से सिन्धी में और प्रस्तुत नाटक 'पिकनिक' सिन्धी से हिन्दी में अनूदित । कुल इक्कीस पुस्तकें प्रकाशित। एक हज़ार से अधिक रचनाएँ प्रकाशित, तीन सौ से अधिक कार्यक्रम आकाशवाणी, दूरदर्शन से प्रसारित। अनेक नाटक मंचित-प्रसारित। बीस से अधिक संकलनों में रचनाएँ। स्तम्भ लेखन। तीन पत्रिकाओं व बीस से अधिक स्मारिकाओं का सम्पादन।

अकादमियों, सरकारी व ग़ैर सरकारी संस्थाओं से 26 पुरस्कार और 50 से अधिक सम्मान। इनमें राजस्थान साहित्य अकादमी (सर्वोच्च मीरां पुरस्कार व विशिष्ट साहित्यकार सम्मान सहित), राजस्थान सिन्धी अकादमी (सर्वोच्च सामी पुरस्कार सहित), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान और हिन्दी साहित्य सम्मेलन शामिल।

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा वात्सल्य बाल साहित्य पुरस्कार की सिन्धी सलाहकार समिति के पूर्व संयोजक। साहित्य अकादमी की सिन्धी पुरस्कार समिति की जूरी के पूर्व सदस्य।

सम्पर्क : डी-183, मालवीय नगर, जयपुर - 302017. मो. - 09828400325

राजस्थान सिन्धी अकादमी

के उद्देश्य

1. सिन्धी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में अभ्यास एवं शोध कार्य को प्रोत्साहन देकर विकसित करना।
2. राज्य की विभिन्न सिन्धी संस्थाओं की गतिविधियों का समन्वय करना।
3. साहित्यकारों, कलाकारों तथा साहित्यिक संस्थानों में सहभागिता की भावना पैदा करना एवं सिन्धी संस्थानों की स्थापना एवं विकास को प्रोत्साहित करना।
4. राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सम्मेलन, सेमीनार एवं समारोहों का आयोजन कर सिन्धी भाषा की विभिन्न विधाओं में सामंजस्य पैदा करना।
5. सिन्धी भाषा में श्रेष्ठ पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं शोध ग्रन्थों का प्रकाशन।
6. सम्पूर्ण राजस्थान में ज़िला एवं तहसील स्तर पर सिन्धी सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं वाचनालयों की स्थापना।
7. राजस्थान सोसाइटीज एक्ट 1958 के तहत सिन्धी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को मान्यता देना और मान्यता प्राप्त संस्थाओं को सहयोग देना।
8. सिन्धी पुस्तकों की प्रदर्शनियों, कवि सम्मेलनों एवं साहित्यिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से देश में साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक सम्बन्धों को प्रगाढ़ करना।
9. सिन्धी भाषा के योग्य लेखकों, कवियों और विद्वानों को स्कॉलरशिप व फैलोशिप प्रदान करना।
10. सिन्धी भाषा के लेखकों और कवियों को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए मान्यता देना और साहित्यिक कृतियों के लिए आर्थिक सहयोग करना।
11. सिन्धी पाठशालाओं, कार्यशालाओं, गोष्ठियों, शिविरों, सेमीनारों, सर्वेक्षणों आदि का आयोजन कर सिन्धी साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा देना।